www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार... राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, शुक्रवार, 15 दिसम्बर, 2023 | वर्ष-16 | अंक-250 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

लोकतंत्र की हत्या कर रही मोदी सरकार : कांग्रेस 02
■ राजधानी दिल्ली को बेहतर बनाने के लिए काम करना...
■ राइड सुविधाएं महिलाओं के लिए हो रही हैं ... 03
■ हमास नेता गाजा युद्धविराम के लिए इजरायल के साथ...
■ राज्य की आर्थिक स्वायत्तता पर अतिक्रमण करना बंद... 07
जो मुश्किल नहीं है, वो प्यार नहीं है : मौनी रॉय 10

सुरक्षा में चूक पर संसद में हंगामा

दिनभर चला संसद में हंगामा, 14 सांसद पूरे सत्र के लिए निलंबित

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। संसद के शीतकालीन सत्र के नौवें दिन गुरुवार की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्षी सांसदों ने संसद सुरक्षा चूक के मामले को लेकर जमकर हंगामा किया। लोकसभा और

■ लोकसभा से 13 व राज्यसभा से एक सांसद का निलंबन
■ विपक्ष के हंगामे के कारण कई बार स्थगित करना पड़ा सदन

राज्यसभा दोनों सदनों में विपक्षी नेताओं ने नारेबाजी की। दिन में कई बार सदन को स्थगित करना पड़ा। इसके बाद लोकसभा से विपक्षी पार्टियों के 13 और राज्यसभा से एक सांसद को पूरे सत्र के लिए सस्पेंड कर दिया गया। इससे पहले खबर आई थी कि लोकसभा से 14 सांसदों को सस्पेंड किया गया है। विपक्ष ने बताया कि लोकसभा से सस्पेंड हुए डीएमके सांसद एसआर पार्थिबन आज संसद आए ही नहीं थे। फिर भी उन्हें सस्पेंड किया गया। इस पर लोकसभा सचिवालय ने सर्कुलर जारी किया, इसमें पार्थिबन का नाम सस्पेंड किए गए सांसदों की सूची में नहीं था।

संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी ने रखा था प्रस्ताव

दोपहर 3 बजे जब फिर से लोकसभा की कार्यवाही शुरू हुई तो उस समय भी विपक्षी सांसदों का हंगामा जारी रहने पर केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी ने हंगामा कर रहे नौ सांसदों का नाम लेकर उन्हें सदन से सस्पेंड करने का प्रस्ताव सदन के अंदर रखा, जिसे सदन द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के बाद वीके श्रीकंदन, बेहनन बैन्नी, मोहम्मद जावेद, माणिक्कम टैगोर, कनिमोझी, पीआर नटराजन, एस वेंकटेशन और के. सुब्बारायण को संसद के वर्तमान शीतकालीन सत्र की बची हुई अवधि के लिए सस्पेंड कर दिया गया।

विपक्षी सांसदों के हंगामे के बीच सरकार की तरफ से केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी ने लोकसभा स्पीकर को पार्लियामेंट का कस्टोडियन बताते हुए आगे कहा कि इस पर कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। हम सबको दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस पर काम करना है। अतीत से सबक लेते हुए भविष्य के लिए काम करना है।

पार्थिबन का निलंबन रद्द

हंगामे के समय सदन में नहीं थे मौजूद

गलत आचरण और सदन की कार्यवाही में बाधा पहुचाने के आरोप में गुरवार को लोकसभा के 14 और राज्य के एक सांसद को पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया। लेकिन चौकाने वाली बात यह रही डीएमके के एक सांसद एसआर पार्थिबन इस दौरान लोकसभा में मौजूद ही नहीं थे,लेकिन उन्हें भी पहले निलंबित किया गया। बाद में जब इस पर आपत्ति दर्ज कराई गई तो उनका निलंबन वापस हो गया। यह संसदीय इतिहास की शायद पहली घटना थी कि जिस सांसद को आसन की अवमानना व संसद की कार्यवाही में बाधा डालने के आरोप में निलंबित किया गया वह घटना के समय सदन में मौजूद ही नहीं था। इसे लेकर बसपा से निलंबित सांसद दानिश अली ने सवाल उठाया। उन्होंने कहाकि जिन सांसदों को निलंबित किया गया है,उसमें से एक पार्थिबन सदन में थे ही नहीं। उन्होंने कहाकि भगवान ही जानता है कि यह देश कैसे चल रहा है।

सांसदों का निलंबन तानाशाही : खड़गे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने संसद में सुरक्षा को लेकर सवाल पूछने पर पार्टी सांसदों के निलंबन को अलोकतांत्रिक करार देते हुए कहा कि सुरक्षा में चूक का मामला गंभीर है और इस मुद्दे को संसद में उठाने के कारण सांसदों का निलम्बन तानाशाही रवैया है। श्री खड़गे ने कहा राष्ट्रीय सुरक्षा और हमारे लोकतंत्र के मंदिर यानी संसद की सुरक्षा को खतरे में डालने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अब इस मुद्दे को लेकर बात करने वालों को ही सजा दे रही है।

संसद की सुरक्षा को लेकर प्रधानमंत्री ने की बैठक

खामियों की जांच के लिए सीआरपीएफ के डीजी की अगुवाई में समिति गठित

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। संसद में हुई सुरक्षा हुई चूक को लेकर सरकार हरकत में आ गई है। खामियों की जांच के लिए सीआरपीएफ के डीजी की अगुवाई में एक समिति का गठन कर दिया है। पुलिस भी मामले की जांच में जुटी है। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मामले को लेकर अपने मंत्रिमंडल के वरिष्ठ सहयोगियों के साथ चर्चा की। जिसमें गृहमंत्री अमित शाह, पीयूष गोयल, प्रह्लाद जोशी, अनुराग ठाकुर और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा मौजूद थे। इस दौरान उन्होंने कहाकि संसद की सुरक्षा में हुई चूक के मुद्दे को बेहद संवेदनशीलता के साथ लिया जाना चाहिए। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को जो जरूरी लगे वे वह सभी कदम उठाएं। उन्होंने कहाकि वे खुद इस मामले में लोकसभा अध्यक्ष से मिलकर बात करेंगे।

बतादें के कल बुधवार 13 दिसम्बर को 2001 में संसद पर हुए आतंकवादी हमले की 22वीं बरसी पर संसद की सुरक्षा उल्लंघन का बड़ा मामला सामने आया था। दो युवक सागर शर्मा और मनोरंजन डी शून्यकाल के दौरान दर्शक दीर्घा से सीधे लोकसभा कक्ष में कूद गए और स्मोक बम से पीला धुआं छोड़ा दिया। जिसके चलते सदन में अफरा-तफरी का माहौल बन गया था। हालांकि सांसदों के सहयोग से सुरक्षाबलों ने उन्हें जल्दी ही काबू में ले लिया था। वहीं अब पुलिस के सूत्रों ने बताया कि गिरफ्तार किए गए सभी आरोपियों पर भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के अलावा आतंकवाद निरोधी कानून यूएपीए तहत मामला दर्ज किया गया है।

अधीर रंजन ने मोदी, शाह को चुप्पी साधने पर घेरा

नई दिल्ली। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने गुरुवार को संसद की सुरक्षा उल्लंघन को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की चुप्पी के लिए उनकी आलोचना की है। उनका कहना है कि उन्हें कम से कम उन सांसदों और सुरक्षाकर्मियों की सराहना करनी चाहिए थी, जिन्होंने उपद्रवियों को पकड़ा था।

सार संक्षेप

चार आरोपियों को सात दिन की पुलिस हिरासत में भेजा

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने गुरुवार को संसद सुरक्षा उल्लंघन मामले में गिरफ्तार चार आरोपियों को सात दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। घटना के बाद बुधवार को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद आरोपी व्यक्तियों सागर शर्मा, मनोरंजन डी., नीलम वर्मा और अमोल शिंदे को पटियाला हाउस कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश हरदीप कौर के समक्ष पेश किया गया।

झारखंड विधानसभा का शीतकालीन सत्र आज से होगा शुरू

रांची। 15 दिसंबर से शुरू हो रहे झारखंड विधानसभा के शीतकालीन सत्र में कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से साढ़े तीन सौ करोड़ से ज्यादा की रकम और जेवरात की बरामदगी का मामला छाया रहेगा। भारतीय जनता पार्टी ने इस मुद्दे को लेकर कांग्रेस के साथ राज्य की गठबंधन सरकार की घेराबंदी की रणनीति तैयार की है। इसे लेकर गुरुवार शाम भाजपा विधायक दल की बैठक बुलाई गई है।

आसियान-भारत श्री अन्न महोत्सव की हुई शुरुआत

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और जनजातीय कार्य मंत्री अर्जुन मुंडा ने गुरुवार को आसियान-भारत श्री अन्न महोत्सव का राष्ट्रीय राजधानी में शुभारंभ करते हुए कहा कि देश में मोटे अनाज को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयास कर ही है। इसी कड़ी में यहां वसंत कुंज इलाके में दो दिवसीय मिलेट मेले का आयोजन किया गया है।

श्रीनगर में शून्य से 5.4 डिग्री नीचे पहुंचा तापमान

श्रीनगर। श्रीनगर शहर में गुरुवार को न्यूनतम तापमान में और गिरावट हुई। यहां सीजन का अब तक का सबसे कम तापमान माइनस 5.4 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग के एक अधिकारी ने कहा, श्रीनगर में शून्य से 5.4 डिग्री सेल्सियस नीचे इस मौसम का अब तक का सबसे कम तापमान दर्ज किया गया। जम्मू-कश्मीर में अगले 2 से 3 दिनों के दौरान रात के तापमान में और गिरावट आने की संभावना है।

महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ सीमा के पास मुठभेड़ में 2 नक्सली ढेर

गढ़चिरौली। महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ सीमा के पास जंगलों में पुलिस के साथ मुठभेड़ में कम से कम दो नक्सली मारे गए। यह घटना एक गुप्त सूचना के बाद हुई कि नक्सलियों की एक बड़ी टुकड़ी छत्तीसगढ़ में गोंडवाही चौकी से लगभग 10 किमी दूर बोधिनटोला के पास डेरा डाले हुए थी।

उत्तर प्रदेश की महिला जज ने सीजेआई से मांगी इच्छा मृत्यु

बांदा, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के बांदा में तैनात सिविल जज ने सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से इच्छा मृत्यु की मांग की है। आरोप है कि बाराबंकी में तैनाती के दौरान जिला जज द्वारा शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना की गई। इतना ही नहीं जिला जज द्वारा रात में मिलने आदि का दबाव बनाया गया। जिला जज के खिलाफ शिकायत के बाद भी कोई सुनवाई न होने से निराश सिविल जज ने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखकर इच्छा मृत्यु की मांग की है। आरोप है कि जब वह बाराबंकी जिले में 2022 में तैनात थी, तब वहां के जिला जज के द्वारा उनका शारीरिक और मानसिक शोषण किया गया। यही नहीं जिला जज के द्वारा इन्हें रात में मिलने को लेकर दबाव भी बनाया जाता था। इसको लेकर हाईकोर्ट इलाहाबाद में भी इन्होंने गुहार लगाई, लेकिन जज होने के बाद भी इन्हें न्याय नहीं मिला।

■ खत में लिखा न्याय देती हूं, खुद अन्याय का शिकार हुई

शारीरिक व मानसिक शोषण किया गया

आरोप है कि जब वह बाराबंकी जिले में 2022 में तैनात थी, तब वहां के जिला जज के द्वारा उनका शारीरिक और मानसिक शोषण किया गया। यही नहीं जिला जज के द्वारा इन्हें रात में मिलने को लेकर दबाव भी बनाया जाता था। इसको लेकर हाईकोर्ट इलाहाबाद में भी इन्होंने गुहार लगाई, लेकिन जज होने के बाद भी इन्हें न्याय नहीं मिला। इसके बाद इन्होंने चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया को पत्र जारी करते हुए इच्छा मृत्यु की मांग की है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सुनाया फैसला

मथुरा शाही ईदगाह विवादित स्थल का होगा सर्वे

प्रयाग, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि परिसर स्थित शाही ईदगाह मस्जिद के विवादित स्थल पर सर्वे की मंजूरी दी है। साथ ही कोर्ट ने चल रहे विवाद पर कमिश्नर नियुक्त करने को कहा है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को मथुरा स्थित श्रीकृष्ण जन्मभूमि केस की पोषणीयता संबंधी अर्जी पर अपना फैसला सुनाया।

न्यायमूर्ति मयंक जैन की पीठ ने हिंदू पक्ष की याचिका पर सर्वे को मंजूरी दे दी है। पीठ कुल 18 सिविल वादों की सुनवाई कर रही है। दरअसल, 16 नवंबर को इस अर्जी पर सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रखा गया था। इस दिन विवादित परिसर की 18 याचिकाओं में से 17 पर सुनवाई हुई। ये सभी याचिकाएं मथुरा जिला अदालत से इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई के लिए शिफ्ट हुई थी। पक्षकार ने मंदिर का पौराणिक पक्ष रखते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के पौत्र ने मथुरा मंदिर का निर्माण कराया था। मंदिर के लिए जमीन दान में मिली। इसलिए जमीन के स्वामित्व का कोई विवाद नहीं है। मंदिर तोड़कर शाही मस्जिद बनाने का विवाद है। राजस्व अभिलेखों में जमीन अभी भी कटरा केशव देव के नाम दर्ज है। कोर्ट का फैसला आने के बाद श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान के सचिव कपिल शर्मा ने कहा कि कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला दिया है।

यह श्रीकृष्ण जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए चल रहे आंदोलन में मील का पत्थर साबित होगा। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष न्यास के अध्यक्ष महेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि कोर्ट कमिश्नर के सर्वे से दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

■ कोर्ट ने चल रहे विवाद पर कमिश्नर नियुक्त करने को कहा
■ न्यायमूर्ति मयंक जैन की पीठ ने हिंदू पक्ष की याचिका मंजूरी दी

शाही ईदगाह मस्जिद के अधिवक्ता ने आपत्ति दर्ज कराई थी

शाही ईदगाह मस्जिद और यूपी सेंट्रल वक्फ बोर्ड के अधिवक्ता ने कोर्ट में आपत्ति दर्ज कराई थी। मुस्लिम पक्षकारों का कहना था कि यह याचिका सुनवाई योग्य नहीं है, इसको खारिज किया जाए। जिसे कोर्ट ने नहीं माना। दरअसल, 'भगवान श्री कृष्ण विराजमान' और 7 अन्य लोगों ने वकील हरि शंकर जैन, विष्णु शंकर जैन, प्रभाष पांडे और देवकी नंदन के माध्यम से इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दायर कर सर्वे की मांग की थी। याचिका में दावा किया गया था कि भगवान श्री कृष्ण का जन्मस्थान मस्जिद के नीचे है और वहां कई संकेत हैं जो स्थापित करते हैं कि मस्जिद एक हिंदू मंदिर था।

भजनलाल शर्मा आज लेंगे राजस्थान के मुख्यमंत्री पद की शपथ

जयपुर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। भाजपा के मनोनीत मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा 15 दिसंबर को अपने जन्मदिन पर शपथ लेंगे और वह जयपुर विधानसभा सीट से पहले मुख्यमंत्री भी होंगे। अधिकारियों ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह की तैयारियों के चलते एक दिन के लिए अल्बर्ट हॉल में पर्यटकों का प्रवेश बंद रहेगा। वहीं, पूरे इलाके में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। राजस्थान के मनोनीत मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा और दो उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा 15 दिसंबर को शपथ लेंगे। अल्बर्ट हॉल (राम निवास बाग) के बाहर इस समारोह को भव्य बनाने की तैयारी की जा रही है। समारोह के लिए बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों, प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और पार्टी प्रमुख जेपी नड्डा को निमंत्रण भेजा गया है। शपथ ग्रहण समारोह में पीएम मोदी के आने की झलक भी दिखेगी। कार्यक्रम स्थल पर विशेष काउंटर बनाए गए हैं, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभी जन कल्याणकारी योजनाओं को उजागर करने वाले भाजपा के झंडे, होर्डिंग, पोस्टर और बैनर लगाए जाएंगे। इस मौके पर श्री सी पी जोशी ने कहा कि श्री भजन लाल शर्मा एक सामान्य कार्यकर्ता के रूप में काम करते करते इस स्थान पर पहुंचे हैं और पूरे राजस्थान के कार्यकर्ताओं में उत्साह है और ऊर्जा का वातावरण बना हुआ है और आमजन में भी खुशी है और इस खुशी के मौके पर प्रदेश भर से लोग यहां पहुंचेंगे और श्री मोदी का आभार प्रकट करेंगे। उन्होंने कहा कि उनकी गारंटी पर विश्वास जताया गया है और ऐसे मौके पर उनकी उपस्थिति प्रेरणादायी रहेगी।

■ मनोनीत मुख्यमंत्री भजनलाल का जन्मदिन भी आज
■ पूरे इलाके में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए

सेना ने सिक्किम में फंसे 1,217 पर्यटकों को बचाया

भारी बर्फबारी और खराब मौसम के कारण फंस गए थे पर्यटक

गंगटोक, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। सेना ने पूर्वी सिक्किम में ऊंचाई वाले इलाकों में भारी बर्फबारी और खराब मौसम के कारण फंसे 1,217 पर्यटकों को बचाया है।

रक्षा प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल महेंद्र रावत ने कहा कि बुजुर्ग, महिलाओं और बच्चों सहित पर्यटक बुधवार से पूर्वी सिक्किम के ऊंचाई वाले इलाकों में फंसे हुए थे। त्रिशक्ति कोर के जवान बचाव अभियान शुरू करने के लिए तत्काल कार्रवाई में जुट गए। बचाव अभियान रात भर जारी रहा। बचाए गए पर्यटकों को सुरक्षित क्षेत्रों में ले जाया गया और आश्रय, गर्म कपड़े, चिकित्सा सहायता तथा गर्म भोजन दिया गया। फंसे हुए पर्यटकों को ठहराने के लिए सैनिकों ने अपनी बैरकें खाली कर दी।

नागरिक प्रशासन के अधिकारी गंगटोक वापस जाने में समन्वय स्थापित करने के लिए गंगटोक से 17 मील प्वाइंट की ओर जा रहे हैं। सैनिकों की त्वरित प्रतिक्रिया से फंसे हुए पर्यटकों को राहत और आराम मिला, जिन्होंने भारतीय सेना द्वारा प्रदान की गई तत्काल राहत के लिए गहरा आभार व्यक्त किया।

लॉरेंस बिश्नोई-गोल्डी बराड़ गैंग का शार्पशूटर दबोचा

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। दिल्ली के पंजाबी बाग इलाके में रंगदारी के लिए, शिरोमणि अकाली दल के पूर्व विधायक के घर पर गोलीबारी की घटना के सिलसिले में वांछित लॉरेंस बिश्नोई-गोल्डी बराड़ गिरोह के एक और शार्पशूटर को दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने गिरफ्तार कर लिया है। एक अधिकारी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। आरोपी की पहचान हरियाणा के सोनीपत निवासी 23 वर्षीय सोमबीर उर्फ तोताला के रूप में हुई। पिछले सप्ताह पूर्व विधायक के आवास के सामने सात से आठ राउंड फायरिंग करने के आरोप में गिरोह के दो शार्पशूटरों को गिरफ्तार किया गया था। इनकी पहचान हरियाणा के रहने वाले आकाश उर्फ कस्सा और नितेश के रूप में हुई।

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने मुठभेड़ के बाद पकड़ा

जानकारी *विजयी उम्मीदवारों का एडीआर व नेशनल इलेक्शन वॉच ने किया विश्लेषण*

5 राज्यों में 678 विजयी उम्मीदवारों में से 594 करोड़पति

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। देश के पांच राज्यों में हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में 678 विजयी उम्मीदवारों का विश्लेषण किया गया। जिनमें से 594 करोड़पति हैं और इसमें 298 विधायक भाजपा के हैं। नेशनल इलेक्शन वॉच और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने गुरुवार को अपनी रिपोर्ट में कहा कि मिजोरम, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान और तेलंगाना में सभी 678 विजयी उम्मीदवारों के स्व-शपथ पत्रों का विश्लेषण किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि 230 सदस्यीय मध्य प्रदेश विधानसभा में 205 करोड़पति हैं, जबकि राजस्थान में 199 विजयी उम्मीदवारों में से 169 करोड़पति हैं। रिपोर्ट के अनुसार, तेलंगाना के 119 विजयी उम्मीदवारों में से 114 और छत्तीसगढ़ के 90 विजेता उम्मीदवारों में से 72 करोड़पति हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि मिजोरम में 40 विजयी विधायकों में से 34 करोड़पति हैं। रिपोर्ट में कहा गया है, भाजपा के 342 जीते हुए विधायकों में से 298 करोड़पति हैं, जबकि कांग्रेस के 235 जीते हुए विधायकों में से 209 करोड़पति हैं, जबकि बीआरएस के 39 जीते हुए विधायकों में से 38 करोड़पति हैं और जेडपीएम के 27 में से 22 विधायक करोड़पति हैं।

भाजपा के टिकट पर चुने गए 298 करोड़पति

देश

उवाच

"ट्रेनों में यात्रा के लिए खिड़की से लिए गए टिकटों को रद्द करने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए। टिकट रद्द करने का शुल्क भी बढ़ाया गया है जिसे कम किए जाने की जरूरत है।

-अखिलेश प्रसाद सिंह, कांग्रेस नेता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	21.0	10.0
मुंबई	29.0	23.0
कोलकाता	21.0	12.0
चेन्नई	27.0	26.0

लोकतंत्र की हत्या कर रही मोदी सरकार : कांग्रेस

विपक्ष ने संसद सत्र के दौरान बड़ी संख्या में सांसदों के निलंबन पर केंद्र सरकार को घेरा

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान असंसदीय आचरण के आरोप में बड़ी संख्या में सांसदों को निलंबित किए जाने पर विपक्ष ने केंद्र की मोदी पर हमला बोला। निलंबन के बाद कांग्रेस ने गुरुवार को कहा कि संसद में सुरक्षा मामले को लेकर सवाल पूछने के कारण पार्टी के सांसदों को निलंबित किया जाना लोकतंत्र के विरूद्ध है और ऐसे कदम उठाकर मोदी सरकार लोकतंत्र की हत्या कर रही है। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने यहां जारी एक बयान में कहा कि 13 दिसम्बर को संसद की सुरक्षा में जो चूक हुई उसके खिलाफ कांग्रेस के सांसदों ने आवाज उठाई तो सरकार ने उन्हें गुरुवार को निलंबित कर दिया। उन्होंने कहा कि संसद में हुए सुरक्षा उल्लंघन पर सरकार से जवाब मांगने के लिए विपक्षी सांसदों को निलंबित करना एक गलत और अलोकतांत्रिक कदम है। एक तरफ जवाबदेही की मांग करने पर पार्टी सांसदों को निलंबित कर दिया जाता है तो दूसरी तरफ उपद्रवियों के प्रवेश में मदद करने वाले भाजपा सांसद के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने सरकार के इस कदम को लोकतंत्र की हत्या करार दिया और कहा कि यह लोकतंत्र की हत्या है। भाजपा सरकार ने संसद को रबर स्टाम्प बनाकर रख दिया है। अब लोकतांत्रिक प्रक्रिया दिखावे के लिए भी नहीं बची है। डीएमके सांसद कनिमोझी करुणानिधि को भी शीतकालीन सत्र की बाकी अवधि के लिए निलंबित किया है। उन्होंने लोकसभा के स्पीकर की तरफ से दिखाई गई सख्ती पर कहा, संसद में सुरक्षा प्रोटोकॉल का उल्लंघन करने के आरोपियों को एक सांसद के कहने पर विजिटर पास दिए गए। 24 घंटे से अधिक समय बीतने के बावजूद इस मामले में सांसद के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

भाजपा सरकार ने संसद को रबर स्टाम्प बनाकर रख दिया है

संसद में हुए सुरक्षा उल्लंघन पर सरकार से जवाब मांगने के लिए विपक्षी सांसदों को निलंबित करना अलोकतांत्रिक कदम : केसी वेणुगोपाल

तानाशाहीपूर्ण रवैया अपना रही है सरकार

विपक्षी दलों का आरोप है कि सरकार तानाशाहीपूर्ण रवैया अपना रही है और विपक्षी सांसदों की बातों को अनसुना किया जा रहा है। सदन से निलंबित किए गए सांसदों ने प्रधानमंत्री और गृह मंत्री अमित शाह से जवाब मांगा है। विपक्ष का आरोप है कि 13 दिसम्बर को दर्शक दीर्घा से दो लोगों का सदन के भीतर कूदना बड़ी खुफिया विफलता है। संसद से 15 सांसदों के निलंबन पर कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम ने कहा कि बुधवार को जो हुआ वह बड़ी सुरक्षा और खुफिया विफलता थी। हम चाहते हैं कि सरकार सदन में बयान दे। गृह मंत्री या प्रधानमंत्री को 13 दिसम्बर की घटना के बारे में पूरी जानकारी देनी चाहिए। सांसदों को यह भी बताना चाहिए कि आने वाले दिनों में ऐसी घटनाएं न हों, इसके लिए सरकार क्या कदम उठाने जा रही है। सरकार सदन में बयान नहीं देने पर अड़ी हुई है। पीएम मोदी या गृह मंत्री शाह के बयान की मांग करने और सदन के भीतर अपना विरोध दर्ज कराने के कारण सरकार विपक्षी सांसदों की आवाज दबा रही है। 15 सांसदों को बाकी बचे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया है। विपक्षी पार्टियां प्रधानमंत्री या गृह मंत्री से सदन के पटल पर स्पष्ट बयान देने की मांग कर रही हैं। कनिमोझी ने तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा के मामले पर हुई कार्रवाई का जिक्र करते हुए कहा, हमने देखा है कि महुआ के मामले में क्या कार्रवाई हुई है। जांच पूरी हुए बिना ही उन्हें सदन के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया। लोकसभा की दर्शक दीर्घा से दो लोगों के कूदने के मामले में पास जारी करने वाले सांसद को निलंबित भी नहीं किया गया है। डीएमके सांसद ने कहा, जब हमने विरोध किया और पीएम मोदी या गृह मंत्री के बयान की मांग की तो सरकार ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं।

बकौल कनिमोझी, जब विपक्षी दलों ने सरकार ने विरोध किया, तो वे विपक्ष के राजनीतिक दलों की तरफ से आवाज उठाने वाले सांसदों को निलंबित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहले पांच, फिर नौ और लोगों को निलंबित कर दिया गया। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा, सरकार ने सांसदों को सदन से निलंबित करने की संस्कृति विकसित की है। जैसे ही आप किसी बात का विरोध करते हैं कहा जाता है, आपकी बात रिकॉर्ड पर नहीं जाएगी, फिर सांसदों के चर्चा में भाग लेने का मतलब क्या है।

विपक्ष को डराना चाहता सत्ताधारी दल : ललन सिंह

नई दिल्ली। जेडीयू सांसद राजीव रंजन (ललन) सिंह ने 15 सांसदों के निलंबन पर कहा कि सरकार अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए निलंबन कर रही है। ऐसी कार्रवाई से सत्ताधारी दल विपक्ष को डराना चाहती है। आप खौफ का माहौल बनाकर शासन नहीं कर सकते। अगर विपक्षी सांसद लोकसभा और पूरे संसद की सुरक्षा मे हुई चूक, खुफिया विफलता के संबंध में गृह मंत्री से बयान की मांग कर रहे हैं, तो इसमें गलत क्या था। ललन सिंह ने कहा, गृह मंत्री शाह को खुद पहल करनी चाहिए। उन्हें सदन में आकर बयान देना चाहिए। उन्होंने कहा, सरकार निलंबित करा सकती है, उनके पास बहुमत है और वे जो चाहें कर सकते हैं। जदयू सांसद ललन सिंह के मुताबिक अगर चकमा देकर संसद में घुसने वाले दोनों व्यक्ति मुस्लिम होते या विजिटर पास किसी कांग्रेस सांसद ने जारी किया होता तो सरकार का आचरण बिल्कुल अलग होता।

संसद से

डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे का नाम चौलुंग सुकाफा रखने की रास में उठी मांग

भारतीय जनता पार्टी के पबित्रा मार्गरिटा ने गुरुवार को राज्यसभा में असम के डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे का नामकरण क्षेत्र के लोकप्रिय सम्राट चौलुंग सुकाफा नाम रखने की मांग की। मार्गरिटा ने सदन में शून्यकाल में सभापीठ की अनुमति से उठाए गए मामले के दौरान कहा कि असम में अहोम साम्राज्य के संस्थापक चौलुंग सुकाफा भी सम्राट अशोक और चंद्रगुप्त मौर्य के समान प्रतापी और महान थे। सम्राट चौलुंग सुकाफा ने आधुनिक असम को आकार दिया है। भाजपा सदस्य ने कहा कि उनकी याद को बनायें रखने व उन्हें सम्मान देने के लिए केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय को डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे का नाम सम्राट चौलुंग सुकाफा हवाई अड्डा कर देना चाहिए। यह एक छोटा कदम होगा लेकिन दुनिया को सम्राट चौलुंग सुकाफा के बारे में बताने का बेहतर तरीका है। मार्गरिटा ने कहा कि सम्राट सुकाफा भारतीय इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाले साम्राज्य के संस्थापक रहे हैं।

गंगा की सफाई के लिए दस साल में हुआ व्यापक काम : शेखावत

सरकार ने कहा है कि गंगा की सफाई के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने पिछले 10 साल के दौरान जो कदम उठाए हैं उनकी वजह से गंगा स्वच्छता का काम व्यापक स्तर पर हुआ हैं। जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने गुरुवार को लोकसभा में एक पूरक प्रश्न के जवाब में कहा कि मोदी सरकार ने निर्मल गंगा के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम की शुरुआत की जिसके तहत इतने कदम उठाए हैं कि संयुक्त राष्ट्र की धरोहरों में सुधार के लिए दुनिया के देशों से मांगी गई 10 नाम की सूची में नमामि गंगे अभियान के तहत हुआ काम शीर्ष पर है। उन्होंने कहा कि पिछले 10 साल के दौरान यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि गंगा में गंदा पानी नहीं गिरे और इसके लिए शिवर ट्रीटमेंट संयंत्रों की स्थापना हुई है जिससे गंगा को मैला होने से बचाने का काम आसान हुआ है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि गंगा की सफाई के अलावा हिंडन, काली नदी सहित कई नदियों में भी सफाई का अभियान शुरू किया गया है।

संसद की सुरक्षा में चूक निंदनीय : राजनाथ

संसद में सुरक्षा में चूक के मुद्दे पर केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लोकसभा में वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि बुधसवार को जो घटना हुई, उसकी सबने निंदा की है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण घटना है...आपने (लोकसभा अध्यक्ष) घटना के जांच के आदेश दिए हैं। हम सभी सांसदों को सावधानी बरतने की आवश्यकता है...इस प्रकार से संसद में अराजक स्थिति पैदा करना उचित नहीं है।

रास में उठी एसिड हमलों से पीड़ित महिलाओं की मदद की मांग

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की फौजिया खान ने कहा कि बच्चों का मोबाइल फोन और लैपटाप पर स्क्रीन समय बढ़ रहा है जिससे मानसिक और शारीरिक समस्याएं पैदा हो रही है। सरकार को इस संबंध में ठोस कदम उठाने चाहिए और दिशा निर्देश जारी करने चाहिए। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के इलावरम करीम और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संदोष कुमार पी ने केरल में वित्तीय संकट का मामला उठाया और कहा कि केंद्र-राज्य वित्त संबंधों की समीक्षा की जानी चाहिए। जनता दल युनाइटेड के अनिल प्रसाद हेगड़े ने किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त देसी बीज उपलब्ध कराने की मांग की और कहा कि जीएम बीजों पर रोक लगाई जानी चाहिए। वाईएसआरसीपी ने ओबीसी वर्ग को आरक्षण के लिए आय सीमा आठ लाख रुपए से 12 लाख रुपए प्रति वर्ष करने की मांग की। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की फौजिया खान ने कहा कि बच्चों का मोबाइल फोन और लैपटाप पर स्क्रीन समय बढ़ रहा है जिससे मानसिक और शारीरिक समस्यायें पैदा हो रही है। सरकार को इस संबंध में ठोस कदम उठाने चाहिए और दिशा निर्देश जारी करने चाहिए।

अंतर्देशीय मछली उत्पादन का स्तर 2014-23 के बीच 96 प्रतिशत बढ़ा

सरकार ने लोकसभा में बताया कि भारत में पिछले नौ वर्षों की अवधि में अंतर्देशीय मछली उत्पादन सालाना 8.78 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और 2014-23 के दौरान वार्षिक उत्पादन में करीब 96 प्रतिशत वृद्धि हुई। पशुपालन और डेयरी मंत्री परषोत्तम रूपाला ने लोकसभा में एक प्रश्न करने के लिखित उत्तर में बताया कि 2022-23 में देश में 131.13 लाख टन का उच्चतम अंतर्देशीय मछली उत्पादन दर्ज किया गया। वर्ष 2014-15 में मछली उत्पादन 66.91 लाख टन था। वर्ष 2019-20 में उत्पादन बढ़ कर 104.37 लाख टन हो गया। उन्होंने कहा कि 2014-15 से 2022-23 के दौरान वार्षिक अंतर्देशीय मछली उत्पादन का स्तर 95.9 प्रतिशत बढ़ा है। उन्होंने कहा कि सरकार ने मछली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों की जानकारी दी।

सार संक्षेप

कश्मीर में कड़ाके की ठंड का दौर जारी

श्रीनगर। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में लगातार ठंड बढ़ रही है। जहां कश्मीर के हाड कंपाने वाली ठंड जारी है, वहीं श्रीनगर में इस मौसम की सबसे सर्द रात दर्ज की गयी है। मौसम विज्ञान विभाग ने गुरुवार को यह जानकारी दी। मौसम विभाग केंद्र श्रीनगर ने कहा कि दक्षिण कश्मीर में शोपियां जिला में सबसे ज्यादा ठंड रिकॉर्ड की गई है, जहां पिछली रात न्यूनतम तापमान शून्य से नीचे 6.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। तापमान में आई भारी गिरावट के कारण श्रीनगर के डल झील के आंतरिक हिस्से और अन्य निकाय तथा पानी के पाइप में पानी जम गया है।

तेलंगाना विस के अध्यक्ष बनें प्रसाद कुमार

हैदराबाद। तेलंगाना में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गद्दाम प्रसाद कुमार को गुरुवार को सर्वसम्मति से तीसरी तेलंगाना विधानसभा का अध्यक्ष चुना गया। गद्दाम सभी विधायकों के समर्थन से तेलंगाना विधानसभा के लिए चुने गए पहले दलित स्पीकर हैं। प्रोटेम स्पीकर अकबरुद्दीन ओवैसी ने कहा कि बुधवार को कोई अन्य नामांकन दाखिल नहीं होने के कारण उन्हें निर्विरोध चुना गया। उन्होंने आज सदन में घोषणा की कि उनकी उम्मीदवारी का प्रस्ताव मुख्य विपक्षी भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) सहित 23 सदस्यों ने किया था। नए अध्यक्ष के चुनाव की घोषणा करने से पहले, प्रोटेम स्पीकर ने उन सदस्यों को शपथ दिलाई, जो नौ दिसम्बर के समारोह में शामिल नहीं हो सके।

मप्र का विस सत्र 18 से 21 दिसम्बर तक

भोपाल। मध्य प्रदेश में आगामी 18 से 21 दिसम्बर के बीच चार दिवसीय विधानसभा सत्र आयोजित होगा, जिसमें प्रोटेम स्पीकर गोपाल भार्गव नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ ग्रहण कराएंगे और विधानसभा के पूर्णकालिक अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का निर्वाचन होगा। भार्गव ने प्रोटेम स्पीकर के तौर पर शपथ ग्रहण करने और अपना पदभार संभालने के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इस बारे में जानकारी दी।

सारण में ट्रक से कुचलकर महिला की मौत

छपरा। बिहार में सारण जिले के पूर्वोत्तर रेलवे के छपरा-थावे रेलखंड के मशरक-राजापट्टी स्टेशन के बीच रेलवे क्रासिंग पर ट्रक से कुचलकर एक महिला की मौत हो गई। जिले के मशरक थाना क्षेत्र के पदमौल गांव निवासी फुलेश्वरी कुं वर गोपालगंज के फैजुल्लाहपुर गांव से एक शादी समारोह में शामिल होने के बाद अपने पुत्र के साथ मोटर साइकिल से वापस घर आ रही थी। इसी दौरान डुमरसन रेलवे क्रासिंग पर वह मोटर साइकिल से गिर गई।

नीतीश की रैली को नहीं मिली वाराणसी में जगह

पटना, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। 24 दिसम्बर को जेडीयू की रैली वाराणसी में होने वाली थी लेकिन अब यह रैली 24 दिसम्बर को नहीं होगी। नीतीश की रैली को जगह नहीं मिलने के कारण स्थगित कर दिया गया है। अब अगली तारीख में इस रैली की घोषणा की जाएगी। बिहार के मंत्री श्रवण कुमार ने इस बात की जानकारी दी है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गढ़ वाराणसी में रैली करने वाले थे। 24 दिसम्बर को रैली प्रस्तावित थी। इस रैली को सीधे तौर पर लोकसभा चुनाव से जोड़कर देखा जा रहा था। इसे लेकर भाजपा लगातार हमलावर थी।

बिहार भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी सहित कई बीजेपी नेता नीतीश की वाराणसी में प्रस्तावित रैली को लेकर हमलावर नजर आए। वही भाजपा सांसद रवि किशन ने जेडीयू की इस रैली को लेकर तंज भी कसा था। रविकिशन ने कहा कि था कि महादेव की नगरी है, आएं. हमने सुना है कि जहां कण-कण में शिव हैं वहां नीतीश कुमार आ रहे हैं। नीतीश कुमार को मैं क्षमा के साथ कहना चाहता हूं क्योंकि बहुत बड़े लीडर हैं वो, आव फरिया ल। नीतीश कुमार पर तंज कसते हुए भाजपा सांसद रविकिशन ने फिर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गरीबों के नेता हैं, कार्यकर्ताओं को मुख्यमंत्री बनाने वाले नेता हैं, इस देश को पांच ट्रिलियन डॉलर पर ले जाने वाले नेता हैं, उनसे आप लड़ने आ रहे हैं।

राज्य की आर्थिक स्वायत्तता पर अतिक्रमण करना बंद करे केंद्र सरकार : विजयन

विपक्ष व केरल समाज से सरकार के साथ खड़े होने का किया आह्वान

कोट्टयम, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने गुरुवार को केंद्र से राज्य की आर्थिक स्वायत्तता पर अतिक्रमण करने से परहेज करने का आग्रह किया। विजयन ने राज्य सरकार के आउटरीच कार्यक्रम नवकेरल नाडास के हिस्से के रूप में यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए आगाह किया कि यदि केंद्र राज्य की आर्थिक स्वायत्तता पर अपना अतिक्रमण नहीं रोकता है तो राज्य एक आसन्न वित्तीय आपदा की ओर चला जाएगा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार सोची-समझी चालों से संविधान के आर्थिक संघवाद को धीरे-धीरे खत्म करके एक खतरनाक खेल खेल रही है। उन्होंने विपक्ष और केरल समाज से सरकार के साथ खड़े होने का आह्वान करते हुए कहा कि राज्य सरकार भारतीय संघवाद को संरक्षित करने के लिए एक निर्णायक कानूनी और ऐतिहासिक लड़ाई शुरू कर रही है। उन्होंने राज्यपाल से केंद्र से स्पष्टीकरण मांगने का भी आग्रह किया, जो उधार सीमा में कटौती के माध्यम से वित्तीय स्वायत्तता पर अतिक्रमण करके राज्य में विकास और कल्याण गतिविधियों को पटरी से उतारने की लगातार कोशिश कर रहा है।

पिनाराई ने कुन्हिरमन के निधन पर जताया शोक

कासरगोड। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने त्रिकारीपुर के पूर्व विधायक और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा)) के पूर्व जिला सचिव के कुन्हिरमन के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने कन्नूर के एक निजी अस्पताल में अंतिम सांस ली। वह 80 वर्ष के थे। विजयन ने कहा कि एक बेहतरीन संगठनकर्ता के रूप में राजनीतिक क्षेत्र और एक आयुर्वेद चिकित्सक के रूप में पारंपरिक सांस्कृतिक अभ्यास में उनका योगदान यादगार रहेगा। उनके परिवार में उनकी पत्नी एनटीके सरोजिनी और पांच बच्चे सिंधु, शीना, शीजा, अनिल और सुनील हैं। वह वृद्धावस्था संबंधी बीमारी से पीड़ित थे जिसके कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

हमेशा से दूर की सोच रखते हैं नीतश : प्रणव

बिहार बिजनेस कांटेक्ट में प्रणव अडानी ने की नीतीश की तारीफ

पटना, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। अब बिहार को लोग उद्योग लगाने के लिए एक आकर्षित रूप में देख रहे हैं। साल 2003 में हमारे एक योजना का शुभारंभ वर्तमान में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ही किया था। उस समय भी नीतीश कुमार विकास के लिए तत्पर नजर आए थे और आज भी विकास के लिए तत्पर नजर आते हैं। यह बातें अदानी ग्रुप इंडस्ट्रीज की तरफ से बिहार बिजनेस कांटेक्ट में आए प्रतिनिधि प्रणव अडानी ने कही है। बिहार की राजधानी पटना के ज्ञान भवन में उद्योग विभाग के तरफ से बिहार बिजनेस कनेक्ट 2023 ग्लोबल इन्वेस्टर्स सीमिट का आयोजन किया गया। जिसमें देश भर के करीब 600 कंपनियां भाग ले रही है। ऐसे में अदानी ग्रुप के तरफ से प्रणव अडानी पटना आए और उन्होंने बिहार सरकार की जमकर तारीख की है।

प्रणव अडानी ने कहा कि नीतीश कुमार हमेशा काफी दूर की सोच रखते हैं। केंद्रीय रेल मंत्री के तौर पर नीतीश कुमार ने 20 साल पहले इंटरनेट टिकट बुकिंग सेवा शुरू करवाई थी जिसका आज लाखों लोग फायदा ले रहे हैं। आज यह दुनिया का सबसे बड़ा ऑनलाइन टिकट बुकिंग साइट है। इस सिस्टम की सफलता यह बतलाती है कि नीतीश कुमार कितने दूर के सोचते हैं। प्रणव अदानी ने कहा कि हमारा बिहार में काफी रुचि है और हम बड़े पैमाने पर यहां उद्योग लगाने की कोशिश में लगे हुए हैं। बिहार में अदानी ग्रुप लॉजिस्टिक, गैस समेत कई चीजों में पहले से मौजूद है।

आज बिहार में दिख रहा बदलाव : अडानी

प्रणव अडानी ने कहा कि आज बिहार में बदलाव दिख रहा। बिहार के लॉन आर्डर बिहार के हर चीज में बदला दिख रहा है। यहां की शिक्षा और महिला साक्षरता में भी बदलाव देखने को मिला है। यदि बिहार के विकास की बात करें तो साइकिल वितरण और पोशाक वितरण स्कीम ने बिहार में काफी परिवर्तन लाया है। महिला के जीवन शैली में काफी बदलाव आया है। इसके अलावा मुख्यमंत्री के तरफ से बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार भत्ता दी जा रही है जो बिहार के विकास के लिए काफी बेहतर है। इसलिए अदानी ग्रुप नीतीश कुमार के बिहार के विकास की सोच के साथ है।

नेहरू के कारण भारत में शामिल हुआ कश्मीर : पीडीपी

श्रीनगर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ने गुरुवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कारण भारत का हिस्सा बना। पीडीपी ने आज जारी अपने मासिक समाचार पत्र स्पीक-अप में नेहरू का बचाव किया, जिनकी हाल ही में गृह मंत्री अमित शाह ने आलोचना की थी। शाह ने पिछले हफ्ते कहा था कि जम्मू-कश्मीर को नेहरू की दो ऐतिहासिक भूलों के कारण नुकसान उठाना पड़ा- पहले युद्धविराम की घोषणा करना और फिर संयुक्त राष्ट्र में जाना। पार्टी के न्यूजलेटर में लिखा गया, जवाहरलाल नेहरू की गलतियों पर चिंतन करने के बजाय, भाजपा को खुद से यह पूछने की ज़रूरत है कि 2014 में सत्ता में आने के बाद से उन्होंने भारतीय कश्मीर के लिए क्या किया है। लेख में कहा गया, हमारी भूमि और संसाधनों को अपने साथियों के लिए विभाजित करने और संसद में अपने 'प्रचंड' बहुमत का उपयोग करके हमारे लोगों को कमजोर करने के लिए कानून गिराने के अलावा, भाजपा ने हमारे लिए क्या किया है। शायद उन्हें पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को खोने का अफसोस है क्योंकि वे इसे युद्ध की लूट की तरह नहीं मान सकते।

आस — *लद्दाखियों को फिलहाल विधायिका चाहिए जब तक राज्य का दर्जा नहीं मिला जाता*

लोकसभा की दो संसदीय सीटों पर दावा ठोकेगें लद्दाखी नेता

■ सुरेश एस डुग्गर

जम्मू, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। लद्दाख में उपजे आक्रोश को थामने की खातिर केंद्रीय गृह मंत्रलय लद्दाखी नेताओं से दूसरे दौर की बातचीत से पहले उनकी मांगों का विस्तृत विवरण तो चाहता है पर उसने यह स्पष्ट संकेत दे दिए हैं किए लद्दाखियों की राज्य का दर्जा प्राप्त करने की मांग पर विचार नहीं किया जाएगा। ऐसे में लद्दाखी नेता फिलहाल यूटी के भीतर ही विधायिका की मांग पर सहमत होते दिख रहे हैं पर स्टेटहुड पाने को वे लंबे संघर्ष की तैयारी करने लगे हैं।

दरअसल केंद्रीय गृह मंत्रालय ने लेह एपेक्स बाडी (एलएबी) और करगिल डेमोक्रेटिक अलायंस (केडीए) को संभावित विकल्पों सहित उनकी मांगों को रेखांकित करते हुए एक व्यापक दस्तावेज बनाने का निर्देश दिया है। हालांकि गृह मंत्रालय का दल लद्दाख की यात्रा के दौरान घोषणाएं कर सकता है, लेकिन राज्य के दर्जे की संभावना से इनकार कर दिया गया है। लद्दाख के लिए दो संसदीय सीटों की मांग के संबंध में, यह संकेत दिया गया है कि तब तक निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन पर रोक के कारण इस पर 2026 के बाद ही विचार किया जा सकता है। दो संसदीय सीटों की मांग के संबंध में सूत्रों ने बताया कि यह 2026 के बाद ही किया जा सकता है क्योंकि तब तक निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन रुका हुआ है। बताया जाता है कि यह दस्तावेज संसद के मौजूदा शीतकालीन सत्र के बाद नई दिल्ली में होने वाली बैठक के दौरान प्रस्तुत किए जाने की उम्मीद है। गृह मंत्रालय ने अपने आश्वासन में कहा कि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल, गृह सचिव एके भल्ला और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ, उक्त बैठक के बाद लद्दाख का दौरा करेगा। मिलने वाले समाचार कहते हैं कि प्रमुख समावेशन पर ध्यान केंद्रित करते हुए चल रही चर्चाओं के साथ, एलएबी और केडीए दस्तावेज का मसौदा तैयार करने में सहयोग करने के लिए तैयार हैं। यह सच है कि चार दिसम्बर की बैठक के लिए एमएचए की घोषणा लद्दाखियों की राज्य का दर्जा पाने की मांग को विशेष रूप से संबोधित नहीं करता था। इन परिस्थितियों में लद्दाखी नेताओं का कहना था कि ऐसे परिदृश्य में, लद्दाख के कुछ प्रतिनिधियों का विचार है कि राज्य का दर्जा मांगने के बजाय, जिस पर केंद्रीय गृह मंत्रालय चर्चा करने के लिए भी तैयार नहीं है, उन्हें केंद्र शासित प्रदेश के भीतर विधानमंडल की मांग करनी चाहिए, लेकिन कुछ लोगों की तरह राज्य के दर्जे के लिए संघर्ष जारी रखना चाहिए। इसके विपरीत, लद्दाख के लिए छठी अनुसूची की मांग को लेकर एलएबी और केडीए अपने रुख पर कायम हैं। विकल्प तलाशने के गृह मंत्रालय के सुझाव के बावजूद, वे भूमि, संस्कृति और पहचान से संबंधित लद्दाखियों के अधिकारों की रक्षा के साधन के रूप में छठी अनुसूची के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

■ गृहमंत्रालय से मुलाकात के दौरान रखेंगे बात

उल्टा पुल्टा

पति : तुम्हारे पापा मानते क्यों नहीं ? जले पर नमक छिड़कने की आदत गई नहीं अब तक उनकी।
पत्नी : क्यों क्या हुआ ?
पति : आज फिर से पूछ रहे थे कि मेरी बेटी से शादी करके खुश तो हो न ?

राजधानी दिल्ली को बेहतर बनाने के लिए काम करना रखेंगे जारी : उपराज्यपाल

एलजी व केजरीवाल ने दिखाई पांच सौ इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के.सक्सेना और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को 500 इलेक्ट्रिक बस को हरी झंडी दिखाई, इसके साथ ही राष्ट्रीय राजधानी में ऐसी बस की संख्या 1,300 हो गई है।

दिल्ली सरकार ने कहा कि राजधानी की सड़कों पर दौड़ने वाली इलेक्ट्रिक बसों की संख्या देश में सबसे अधिक है। उपराज्यपाल सक्सेना ने संवाददाताओं से कहा कि हमने आज 500 बस को सड़कों पर उतारा। यह सभी शून्य उत्सर्जन वाली बस हैं। हम दिल्ली को बेहतर बनाने के लिए इसी तरह काम करना जारी रखेंगे। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने सक्सेना को धन्यवाद दिया और शहरी परिवहन में सुधार जारी रखने का वादा किया। एक्स पर एक पोस्ट में परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा कि बधाई हो दिल्ली हम आज एक और बड़ी उपलब्धि का जश्न मना रहे हैं।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपराज्यपाल ने 500 नई इलेक्ट्रिक बस को हरी झंडी दिखाई। सफलता कभी रातों-रात नहीं मिलती, यह निरंतरता का परिणाम है। हम एक बार फिर रिकॉर्ड 1300 इलेक्ट्रिक बस के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

बाद में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि प्रदूषण पर अंकुश लगाने के प्रयासों में इलेक्ट्रिक बस को शामिल करना एक मजबूत कदम है। उन्होंने कहा कि सर्दियों में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। एक सीएनजी बस प्रति किलोमीटर 800 ग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करती है।

एक इलेक्ट्रिक बस इतनी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को वातावरण में जाने से बचाती है। गुरुवार को नई बस की खेप शामिल होने से पहले दिल्ली में 800 इलेक्ट्रिक बसें दौड़ रही थीं। एक अधिकारी ने बताया कि इलेक्ट्रिक बस के इस्तेमाल से अब तक 34,000 टन से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन रोका गया है। अधिकारी ने बताया कि दिल्ली में 2025 तक कुल 10,480 बस हो जाएंगी, इससे हर साल 4.67 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन रोकने में मदद मिलेगी। पुरानी दिल्ली से जामिया के लिए जल्द डीटीसी बस सेवा शुरू होगी।

राष्ट्रीय राजधानी में अब 13 सौ पहुंची इलेक्ट्रिक बसों की संख्या

दिल्ली की परिवहन प्रणाली होगी मजबूत : केजरीवाल

केजरीवाल ने संवाददाताओं से कहा कि मैं इस अवसर पर दिल्ली के लोगों को बधाई देना चाहता हूं। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उपराज्यपाल को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। अब हमारे पास दिल्ली में 1 3सौ इलेक्ट्रिक बस हैं। हम दिल्ली की परिवहन प्रणाली को मजबूत करना जारी रखेंगे।

दिल्ली नगर निगम करेगा पेड़ों की गिनती

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। दिल्ली नगर निगम राजधानी दिल्ली में पेड़ों की गिनती अब नगर निगम करेगा। इसके साथ ही पेड़ों को यूनिक नंबर भी दिया जाएगा, जिसके लिए एआई टेक्नोलॉजी का भी इस्तेमाल किया जाएगा। इस संबंध में दिल्ली की मेयर शैली ओबेरॉय ने निगम अधिकारियों को आदेश दिया है। इसका मकसद पेड़ों की कटाई को नियंत्रित करना है। मेयर के अनुसार दिल्ली में हरियाली को बढ़ावा देने और पेड़ों की वास्तविक संख्या जानने के लिए पेड़ों की गणना करने का निर्णय लिया गया है। इससे पेड़ों की वास्तविक संख्या का पता चलेगा और उसकी देखरेख कटाई छटाई में मदद मिलेगी। जिन इलाकों में पेड़ की कमी है उसकी भी पहचान इससे हो पाएगी। मेयर के मुताबिक वार्ड स्तर पर पेड़ों की गिनती होगी और प्रत्येक पेड़ों को अलग नंबर दिया जाएगा। पेड़ों की गणना दो चरणों में की जाएगी। पहले चरण में पेड़ों की गणना मैन्युअल रूप से की जाएगी, वहीं दूसरे चरण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से पेड़ों की लोकेशन और जिओ टैगिंग की जाएगी, यह पहली बार होगा जब एआई तकनीक का उपयोग करके पेड़ों की टैगिंग की जाएगी। मेयर ने इस पूरे कार्य को 15 दिनों के अंदर पूरा करने का निर्देश दिया है। ग्रीन दिल्ली एक्शन प्लान 2023-24 के तहत दिल्ली नगर निगम के उद्यान विभाग द्वारा 84, 143 पेड़ और 2, 36, 092 झाड़ीदार पौधे लगाए गए हैं।

पहली बार इस्तेमाल होगी एआई तकनीक

पिछले दरवाजे से निगम का निजीकरण कर रही आप सरकार : राजा इकबाल

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व महापौर राजा इकबाल सिंह ने निगम के रूटीन कार्यों का श्रेय लेने पर निगम की आप सरकार की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिन्ह लगाया। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी की बुनियाद झूठे प्रचार एवं दूसरे के कार्यों का श्रेय लेने पर टिकी हुई है। उन्होंने कहा कि ट्री सेंसस जैसे निगम के रूटीन कार्यों का श्रेय लेकर आप पार्टी ने अपना चरित्र उजागर कर दिया है।

राजा इकबाल सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी ट्री सेंसस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई तकनीक के इस्तेमाल का बहाना बना कर इस कार्य को अपनी पसंद की निजी कंपनी को देना चाह रही है। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि आप पार्टी इस प्रकार निगम के राजस्व का दोहन करना चाह रही है जहां आप पार्टी से जुड़ी कंपनियों को इस कार्य का ठेका मिल जाएगा। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि मैं दिल्ली की मेयर साहिबा से पूछना चाहता हूं कि उनकी ऐसी क्या मजबूरी है कि वो दिल्ली के नागरिकों की भलाई के बारे में न सोचकर आप पार्टी के इशारों पर ऐसे कार्य कर रही हैं। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि निगम की सत्ता में आने के साथ पहले दिन से ही आप पार्टी को मंशा दिल्ली नगर निगम का निजीकरण कर निगम की सुविधाएं अपनी पसंद के ठेकेदारों के माध्यम से प्रदान करने की योजना है।

राजा इकबाल सिंह ने कहा कि ट्री सेंसस जैसे कार्य भी निजी कंपनी को सौंपना इसी षड्यंत्र का एक हिस्सा हैं। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि निगम चुनाव के समय तो अरविंद केजरीवाल अनुबंध आधार पर लगे कर्मचारियों को पक्का करने की गारंटी देते थे और कहां अब उन्हीं कर्मचारियों की नौकरी खत्म करने में लगे हुए हैं।

■ आप सरकार की कार्यप्रणाली पर लगाया प्रश्न चिन्ह

ढलाव घरों को साफ रखने और कूड़ा उठाने के लिए रात में भी चलाए जाएंगे ऑटो टिप्पर

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। दिल्ली को कूड़ा मुक्त करने और वार्डों से कूड़ा उठाने के लिए आप की निगम सरकार ने नई योजना तैयार की है। जिन वार्डों में ऑटो टिप्पर की कमी है, वहां रात में भी ऑटो टिप्पर चलाए जाएंगे। इसके जरिए सुनिश्चित किया जाएगा कि कहीं पर भी कूड़ा दिखे। इसके अलावा पार्कों के रख रखाव के लिए एक एजेंसी नियुक्त की जाएगी। इसी तरह पेड़ों की प्रूनिंग के लिए भी एजेंसी की सेवाएं ली जाएंगी। इससे वार्ड वासियों और वाहन चालकों की पेड़ों की प्रूनिंग समस्या खत्म हो जाएगी। इसके संबंध में मेयर डॉ. शैली ओबरॉय की तरफ से बैठक में जानकारी दी गई। दिल्ली की मेयर शैली ओबरॉय ने शाहदरा दक्षिणी क्षेत्र के पार्षदों के साथ सिविक सेंटर में बैठक की। बैठक में पार्षदों ने अपने वार्ड की समस्याओं से मेयर को अवगत कराया। पार्षदों ने मेयर को बताया कि क्षेत्र में ढलाव घर पर कूड़ा बिखरा रहता है। हालांकि मेट्रो वेस्ट कंपनी नियमित रुप से कूड़ा उठा रही है लेकिन रैग पिकर्स की वजह से कूड़ा बिखरा रहता है। इससे स्थानीय लोगों को स्थानीय लोगों को काफी परेशानी होती है। मेयर शैली ओबरॉय ने उपायुक्त को निर्देश दिए की ऐसे ढलाव घर जहां ऐसी समस्या है। वहां पर सीमेंटेड ब्लॉक लगा दी जाये,जिससे कूड़ा बाहर ना आए। जिन वार्डों में आवश्यकता है वहां पर रात में ऑटो टिप्पर चलाए जाएं।

■ मेयर ने शाहदरा दक्षिणी क्षेत्र के पार्षदों व अधिकारियों के साथ की बैठक

आवारा पशुओं और अवैध डेयरी की समस्या से अवगत कराया

शाहदरा दक्षिणी के पार्षदों ने आवारा पशुओं और अवैध डेयरी की समस्या से अवगत कराया। उन्होंने बताया की सड़कों पर आवारा पशु घूमते रहते हैं, जिससे जाम की समस्या बनी रहती है। मेयर ने संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए कि समस्या के समाधान की दिशा में कार्य करें। पशु विभाग के अधिकारी ने बताया कि विभाग के पास आवारा पशुओं को उठाने के लिए दो गाड़ी हैं और एक गाडी में 10-12 पशु ही आ सकते हैं। मेयर ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि अवैध डेयरी के विरुद्ध योजना के तहत कार्य करें।

राइड सुविधाएं महिलाओं के लिए हो रही हैं कारगर : रिपोर्ट

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। भारत के सबसे पसंदीदा राईड-हेलिंग ऐप ऊबर ने आज अपनी रिसर्च रिपोर्ट का अनावरण किया, जो महिलाओं को सशक्त बनाने तथा भारत में आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देने में राईड-हेलिंग प्लेटफॉर्म्स की बदलावकारी भूमिका पर रोशनी डालती हैं। यह रिपोर्ट राईड हेलिंग: अ प्लेटफॉर्म फॉर वुमेन्स इकोनोमिक अपॉर्च्युनिटीज़ इन इंडिया' बताती है कि किस तरह ये सर्विसेज अधिक से अधिक महिलाओं को कार्यबल में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

यह अध्ययन बताता है कि कैसे राईड-हेलिंग सेवाएं महिलाओं के लिए काम करने की प्रक्रिया को आसान बना रही हैं और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर सफलता की नई उंचाईयों छू रहीं हैं। प्राभजीत सिंह, प्रेज़ीडेन्ट, ऊबर इंडिया एवं साउथ एशिया ने कहा कि भारत की आर्थिक क्षमता का सदुपयोग करने के लिए अधिक से अधिक महिलाओं को कार्यबल में शामिल करना जरूरी है। ऑक्सफोर्ड इकोनोमीज द्वारा किया गया यह अनुसंधान बताता है कि कैसे परिवहन के सुरक्षित एवं भरोसेमंद विकल्पों की कमी के चलते महिलाओं के लिए घर से बाहर निकलकर काम पर जाना मुश्किल होता है। बाली कौर सोधी, लीड इकोनोमिस्ट, ऑक्सफोर्ड इकोनोमीज ने कहा कि दुनिया भर में महिलाएं आज भी कार्यबल में पुरूषों की तुलना में कम योगदान देती हैं।

कारण यह नहीं कि महिलाएं कम योग्य या कम शिक्षित हैं: इसका मुख्य कारण यह है कि आज भी महिलाओं पर घर के कामकाज, परिवार की देखभाल का बोझ अधिक है, खासतौर पर उभरते बाजारों में ऐसी ही स्थिति है। यह रिपोर्ट बताती है कि टेक्नोलॉजी के द्वारा महिलाओं के लिए परिवहन सुविधाओं में आने वाली बाधाओं का दूर किया जा सकता है और उन्हें कार्यबल में शामिल होने एवं अपने करियर में आगे बढ़ने में मदद की जा सकती है।

एकजुट होकर अकाली दल को मजबूत करना चाहिए : सरना

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। शिरोमणि अकाली दल के 103वें स्थापना दिवस के मौके पर पार्टी अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल की अगुवाई में समूचे नेतृत्व ने श्री दरबार साहिब में नतमस्तक होकर गुरु साहिब का आर्शीवाद प्राप्त किया। इस संबंध में जानकारी देते हुए शिरोमणि अकाली दल की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना ने बताया कि अकाली दल के 103वें स्थापना दिवस के एतिहासिक मौके पर पार्टी अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने 2015 में एक पंथक सरकार के रहते श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का निरादर करने वाले दोषियों को पकड़ पाने में अस्मर्थता व अनजाने में हुई गलतियों के लिए श्री अकाल तख्त साहिब के समक्ष नतमस्तक होकर समूचे पंथ से माफी मांगी। उन्होंने कहा कि सरदार बादल ने ऐसा कर एक बेहतरीन मिसाल पेश की है क्योंकि पंथक हितों के लिए झुकना एक अच्छी बात है। आज जब सिख पंथ पर चारो तरफ से हमले हो रहे हैं तो पंथ को एकजुट करने का यह कदम सराहनीय है।

निगम पार्षद ने चौहान बांगर में निशुल्क हड्डियों की जांच का शिविर लगाया

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। सीलमपुर विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाला चौहान बांगर वार्ड 227 से निगम पार्षद शगुफ्ता चौधरी जुबैर के कार्यालय पर नि:शुल्क हड्डियों की जांच शिविर का आयोजन किया गया। वोल्गा फार्मास्यूटिकल के डॉ.मुजीब डॉ. अनिकेश ठाकुर ने आधुनिक मशीन से लगभग 175 लोगों की हड्डियों की जांच की। जांच में अधिकांश मरीजों में कैल्शियम की कमी पाई गई जिसको देखते हुए मरीजों को नि:शुल्क दवा दी गई। हड्डी जांच लेबोर्टिज में 3500 रुपए में किया जाता है, जो शिविर में नि:शुल्क किया गया। इस मौके पर पूर्व विधायक चौधरी मतीन अहमद, बाबरपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चौधरी जुबैर अहमद, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के डेली गेट सैयद नासिर जावेद, सीलमपुर विधानसभा क्षेत्र के यूथ कांग्रेस अध्यक्ष जर्रार अहमद, राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता नावेद पप्पू, रईस अंसारी, हाजी शकील, खालिद खान, शफीक खान मीनू, मुहम्मद शकील, असलम मलिक, फहीम खान, शादाब हसन, इसके अलावा अन्य लोगों ने भी अपनी हड्डियों की जांच कराई। इलाके की बड़ी तादाद लाभान्वित हुई। इस अवसर पर चौधरी मतीन अहमद ने कहा कि अच्छा स्वास्थ्य खुदा की सबसे बड़ी नेमत है। यदि आप स्वस्थ हैं तो आपके अंदर बड़े-बड़े काम करने की ताकत है।

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इलेक्ट्रोनिक निविदा ई प्रणाली के अन्तर्गत
मदों की आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रण

टेंडर नोटिस संख्या 75/2023-2024 दिनांक : 13.12.2023

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबन्धक उत्तर रेलवे नई दिल्ली – 110001 द्वारा इच्छुक फर्मो से निम्नलिखित मदों के लिये ई-निविदा आमंत्रित की जाती है:-

क्र0 स0	निविदा संख्या	संक्षिप्त विवरण	मात्रा	अंतिम तिथि
01	08241008	लॉक मिनटुर ई टाइप वार्ड नं. 42	2892 नग	02.01.24
02	06231135	एम एस फ्लैट साइज 40x6 एम एम	42328 किलोग्राम	11.01.24
03	06235038A	रेक्टेंगल होलो सेक्शन	292000 किलोग्राम	15.01.24
04	77239050	रनिंग कॉन्ट्रैक्ट फॉर 1 इन 8.5, 60KG सी एम एस क्रासिंग	305 सेट	15.01.24
05	77235414	मनुफैक्चर एंड सप्लाई ऑफ 1 मीटर लोंग फिश प्लेट	8815 नग	18.01.24
06	08235748	प्रोक्योरमेंट ऑफ 05 वाट वी एच एफ	1401 नग	24.01.24

निविदा शर्तें– 1. विस्तृत जानकारी IREPS वेबसाइट यानी www.ireps.gov.in पर देखी जा सकती है। 2. मैनुअल निविदा स्वीकृत नहीं की जायेगी।

3922/23

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

भूखण्ड संख्या–1, सैक्टर पार्क–4 ग्रेटर नोएडा
जिला गौतमबुद्ध नगर, उ0प्र0

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि Flat No. K-305, 3rd Floor, Block-k, Area-83.15 Sqm, Stellar One Phase-1, Sector-1, Greater Noida जो कि Mr. Navin Singh & Mrs. Rashmi Singh निवासी RGS Road, Durga Nagar, Near Eye Hospital, Ushagram, Asansol, West Bengal के नाम पर उप निबंधन कार्यालय, सदर गौतमबुद्ध नगर में दिनांक–24.08.2022 को पंजीकृत है। Mrs. Rashmi Singh की मृत्यु के उपरान्त उनके पति Mr. Navin Singh ने उक्त भूखण्ड/भवन में अपनी पत्नी के भाग का नामांतरण अपने पक्ष में करने हेतु म्यूटेशन प्रपत्र प्रस्तुत किये है। अतः इस म्यूटेशन के सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथि के 35 दिन के अन्दर अपनी लिखित आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में Mr. Navin Singh S/o Sh. Upendra Narayan Singh का नाम दर्ज कर दिया जायेगा।

प्रबन्धक (बिल्डर्स)
ग्रेटर नोएडा औ0 वि0 प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स, पी 2 सैक्टर–ओमेगा–1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्धनगर–201308 उ0प्र0

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उपजिलाधिकारी, सदर द्वारा प्रस्तुत परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र 1074/एस0टी0 –एस0डी0एम/2023 दिनांक 10.11.2023 के अनुसार ग्राम धनौरी में निम्न प्रकार मृतक के स्थान पर उनके पारवारिक सदस्यों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है:–

ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के पारिवारिक सदस्यों के नाम	आयु लगभग	मृतक से संबंध
धनौरी	761	स्व किशनलाल पुत्र श्री हरलाल व श्रीमती रतनी देवी पत्नी श्री किशनलाल नि0 ग्राम धनौरी कला, तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्री ऋषिपाल	50	पुत्र
			श्री वीर सिंह	48	पुत्र
			श्रीमती रिछपाली	55	पुत्री विवाहित
			श्रीमती जगवती	52	पुत्र विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर उनके पारिवारिक सदस्यों के नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड, 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर या प्राधिकरण द्वारा अन्य अनुमन्य लाभ संबंधी अभिलेखों में दर्ज कर दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

68वां रेल सप्ताह समारोह

अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार

निम्नलिखित रेल कर्मयोगियों को प्रदान किए जायेंगे

क्र. सं.	अधिकारी का नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	क्र. सं.	अधिकारी का नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
1	जयप्रकाश देवांगन	वरिष्ठ तकनीशियन (वेल्डर-I)	51	एम.के. सुधीश कुमार	लोको पायलट पैसेंजर
2	धर्मेन्द्र कुमार	चल टिकट निरीक्षक	52	टी. सेल्वाकुमार	उप मुख्य टिकट निरीक्षक
3	सुनील डी. नैनानी	चल टिकट निरीक्षक	53	देशिघी मधुसूदन रेड्डी	निरीक्षक
4	संजय रामचंद्र पॉल	सीनियर सेक्शन इंजीनियर (रेलपथ)	54	ए. सेल्वाराजा	सीनियर सेक्शन इंजीनियर
5	विवेक एन. होके	वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक	55	एस. मरियाप्पन	सहायक सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर
6	सुधांशु मित्तल	मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	56	श्रीमती दुर्गादेवी विजयाकुमार	मुख्य नर्सिंग अधीक्षक
7	डॉ. शिवराज पी मानसपुरे	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक	57	ई. हरीकिशन	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक
8	अमन आनंद	लोको पायलट पैसेंजर	58	एस. मयिलेरी	वरिष्ठ मंडल इंजीनियर
9	कार्तिक सिंह	वरिष्ठ मंडल इंजीनियर	59	वी.वी. रंगैया	रेलपथ अनुरक्षक ग्रेड-II
10	सूर्य देव ओरांव	रेलपथ अनुरक्षक-I	60	सुश्री तरला प्रत्यूषा	उप निरीक्षक
11	सतीश कुमार चौधरी	लोको पायलट (गुड्स)	61	टी. नटराजन	मुख्य टिकट निरीक्षक
12	आनंद कुमार चौरसिया	सीनियर सेक्शन इंजीनियर	62	सी. शिवाकुमार कश्यप	मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर
13	कुमार अंकित	मंडल यातायात प्रबंधक	63	मालेला श्रीकांत	मंडल परिचालन प्रबंधक
14	रामेश्वर सिंह	उप मुख्य इंजीनियर	64	चौ. दिनेश रेड्डी	वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर
15	रंधी मनोज बाबू	मंडल परिचालन प्रबंधक	65	डी.एस.रामा राव	उप मुख्य इंजीनियर
16	सागर (खिलाड़ी)	क्लर्क सह टाइपिस्ट	66	सुश्री शालिनी	तकनीशियन ग्रेड-III
17	सिमरनजीत सिंह	उप मुख्य टिकट निरीक्षक	67	मनुज कुमार	हेड कांस्टेबल/आरपीएफ
18	प्रविंद सिंह	सहायक मंडल इंजीनियर	68	अनूप लाल रजक	सहायक उप निरीक्षक/आरपीएफ
19	मोनू धनखड़	उप मुख्य बिजली इंजीनियर (निर्माण)	69	सत्यजीत मंडल (खिलाड़ी)	उच्च श्रेणी लिपिक
20	प्रतीक	कार्यकारी इंजीनियर	70	नरहरि दास	लोको पायलट (मेल/एक्सप्रेस)
21	रेखा	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक	71	रोनाल्ड डब्ल्यू. ए. ब्राग्स	मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
22	मतीन अहमद	उप मुख्य इंजीनियर निर्माण	72	समरेश टापना	मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
23	यशवीर सिंह गुलेरिया	उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	73	मो. प्यार अली खान	सीनियर सेक्शन इंजीनियर
24	राकेश कुमार शर्मा	स्टेशन अधीक्षक	74	सुरेंद्र कुमार सिंह	सहायक सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर
25	मनोज कुमार	हेल्पर	75	अरविंद प्रदीप एस.	मंडल परिचालन प्रबंधक
26	अनुज पटेल	रेलपथ अनुरक्षक ग्रेड-IV	76	प्रमोद कुमार	कांस्टेबल
27	रितु महीश क्षेत्री	मुख्य नर्सिंग अधीक्षक	77	अमिताभ चौधरी	सीनियर सेक्शन इंजीनीयर
28	विजय नारायण	सहायक मंडल यॉंत्रिक इंजीनियर	78	सत्यजीत हारणे	सीनियर सेक्शन इंजीनियर
29	प्रशस्ति श्रीवास्तव	मंडल वाणिज्य प्रबंधक एवं जनसंपर्क अधिकारी	79	संजू पासी	वाणिज्य अधीक्षक
30	विवेक दिवाकर	उप मुख्य सामग्री प्रबंधक	80	श्रीमती मेनका डी. पांडियन	वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
31	सावन कुमार भारती	तकनीशियन ग्रेड-I	81	प्रियांश अग्रवाल	मंडल इंजीनियर
32	महेंद्र सिंह	निर्माण प्रबंधक/संयंत्र	82	योगेश कुमार	उप मुख्य इंजीनियर
33	सत्य देव पाठक	वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	83	डॉ. जेनिया गुप्ता	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक
34	चंदन कुमार	सीनियर सेक्शन इंजीनियर	84	विनय कुमार झा	स्टेशन अधीक्षक (परिचालन)
35	नरेन्द्र पालेई	सीनियर सेक्शन इंजीनियर	85	अनंत कुमार	उप मुख्य इंजीनियर
36	देवा प्रसाद हजारिका	मुख्य सतर्कता निरीक्षक	86	कृष्ण कुमार शर्मा	प्वाइंटसमैन-बी
37	प्रणजीत दास	स्टेशन अधीक्षक	87	प्रिंस विक्रम	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक
38	अमिश गोगोई	सहायक कार्मिक अधिकारी	88	अमूल्य प्रसाद मिश्रा	संरक्षा काउंसलर/विद्युत
39	मिगोम डोले	मंडल सुरक्षा आयुक्त	89	पी. जयशंकर	जूनियर इंजीनियर
40	अमित कुमार मणि	वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	90	के. श्रवणमूर्ति	सहायक कारखाना प्रबंधक
41	नरेंद्र सिंह	वरिष्ठ मंडल सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	91	सुरेन्द्र सिंह	सीनियर सेक्शन इंजीनियर/संयंत्र
42	सुमानन चंदा	उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण	92	वेंकटेश्वरा	सीनियर सेक्शन इंजीनियर
43	सुनील कुमार	रेलपथ अनुरक्षक	93	तुलजप्पा एम. लाडवा	उप मुख्य बिजली इंजीनियर
44	मुन्नू लाल मीना	फिटर ग्रेड-II	94	अमित कुमार सिसोदिया	संयुक्त निदेशक
45	सुरेश चंद जांगिड़	तकनीशियन ग्रेड-II	95	राकेश कृष्ण रामपाल	मुख्य-पूछताछ सह आरक्षण पर्यवेक्षक
46	श्रीमती स्वाति जैन	उप मुख्य बिजली इंजीनियर	96	राजीव कुमार साहा	अनुभाग अधिकारी
47	विजय सिंह	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	97	जितेन्द्र कुमार	उप निदेशक
48	ललित कुमार	उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर	98	रवि शर्मा	संयुक्त निदेशक/जन शिकायत (रेल मंत्री सचिवालय)
49	प्रमोद कुमार भाकल	उप मुख्य इंजीनियर	99	सुमित सिंह	निदेशक
50	के. वीरापेरूमल	रेलपथ अनुरक्षक ग्रेड-II	100	सौरभ सिंह	उप महाप्रबंधक/परियोजनाएं

अश्विनी वैष्णव

केन्द्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

के द्वारा

गरिमामयी उपस्थिति

रावसाहेब पाटिल दानवे
केन्द्रीय राज्यमंत्री, रेल, कोयला और खान मंत्रालय

दर्शना जरदोश
केन्द्रीय राज्यमंत्री, रेल एवं वस्त्र मंत्रालय

शुक्रवार, 15 दिसम्बर, 2023, अपरान्ह 3.00 बजे

भारतीय रेल
www.indianrailways.gov.in

हमें फॉलो करें : /RailMinIndia

कैपिटल ज़ोन

उवाच "नंदग्राम स्थित सामुदायिक भवन को कब्जा मुक्त करते हुए निगम द्वारा कब्जे में लिया गया। सदन की बैठक में इसका निर्णय लिया जा चुका था जिसके क्रम में कार्रवाई की गई है। कई वर्षों से किसी समिति द्वारा अपना कब्जा सामुदायिक भवन पर कर रखा था जिसका संचालन भी वह अवैध रूप से कर रहा था।

भोलानाथ, संपत्ति प्रभारी

जीबीसी के लिए 53 हजार करोड़ का ग्राउंड तैयार

■ नोएडा से 110 कंपनियों को आवंटित हुई जमीन ■ 2 लाख से ज्यादा को मिलेगा रोजगार

नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। लखनऊ में फरवरी महीने में ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी होगी। इस बार नोएडा प्राधिकरण को कीब 90 हजार करोड़ का टारगेट मिला था। इसमें 60 प्रतिशत टारगेट (53,875 करोड़) प्राधिकरण ने अचीव कर लिया है। जीबीसी में 110 कंपनियां शामिल होंगी। इनको जमीन का आवंटन किया गया है।

इससे करीब 2 लाख 67 हजार 530 लोगों को रोजगार मिलेगा। प्राधिकरण अधिकारियों ने बताया आपसी सहमति के आधार पर जमीन खरीदी जा रही है। इस महीने पर 90 हजार करोड़ का टारगेट प्राप्त कर लेंगे।

फरवरी-2023 में इन्वेस्टर समिट के दौरान प्राधिकरण के साथ करीब 1 लाख 240 करोड़ के प्रस्तावों के लिए एमओयू साइन किए गए थे। इसमें से 90 हजार करोड़ का टारगेट जीबीसी के लिए दिया गया था।

हम जिन 110 कंपनियों की बात कर रहे है उनको प्लाट का आवंटन, नक्शा पास और अन्य कागजी कार्य लगभग पूरे किए जा चुके है। इसमें प्राधिकरण के संस्थागत यानी आईटी/आईटीईएस 32 इकाई, इंडस्ट्री की 38 यूनिट, ग्रुप हाउसिंग की 11 और कामर्शियल की 12 इकाई शामिल है।

अब जानते है नोएडा में किन कंपनियों को मिला आवंटन

इंडस्ट्री डिपार्टमेंट

मैक्स डिगी इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड 2500 करोड़ का निवेश करेगी
सीआरसी आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर पार्क प्राइवेट लिमिटेड 810 करोड़
वेब वर्क डेटा सेंटर 500 करोड़
थीम कंट्री प्राइवेट लिमिटेड 5200 करोड़
गोदरेज डिवलेपर्स 2400 करोड़
रोजबेरी स्टेट एलएलपी 2000 करोड़

कामर्शियल डिपार्टमेंट

एम3एम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 7500 करोड़
आइकिया 4300 करोड़
क्लियर लेक प्राइवेट लिमिटेड प्राइवेट लिमिटेड 400 करोड़

इंस्टीट्यूशनल डिपार्टमेंट

उवर्शी इंफ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड 3400 करोड़
अभटेक डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड 1000 करोड़
एसोटेक रियल्टी प्राइवेट लिमिटेड 950 करोड़

नोएडा नहीं तो डीएनजीआईआर में मिलेगा प्लाट

अधिकारियों के मुताबिक कई कंपनियां ऐसी है जो डीएनजीआईआर में निवेश करना चाहती है। वहां जमीन अधिग्रहण और बुनियादी सुविधाओं के लिए बजट में 1000 करोड़ का प्रावधान किया गया है। हालांकि इसमें देरी हो सकती है। दरअसल न्यू नोएडा का मास्टर प्लान तो बन गया है। लेकिन अभी आपत्ती और सुझाव के लिए पब्लिक डोमेन में है। आपत्तियों के निस्तारण के बाद मास्टर प्लान के अनुसार काम शुरू किया जाएगा।

सोनभद्र में उतरेंगी 78 हजार करोड़ से अधिक की 43 निवेश परियोजनाएं

ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी में नोएडा के बाद धरातल पर उतरने जा रहा सबसे ज्यादा निवेश सोनभद्र में ही होने वाला है। इस निवेश से ना सिर्फ पूर्वांचल बल्कि प्रदेश के विकास को भी रफ्तार मिलेगी। तकरीबन 78,815 करोड़ की 43 निवेश परियोजनाएं सोनभद्र में कार्यान्वित होने के लिए बिल्कुल तैयार हैं। इसी तरह कभी नक्सल गतिविधियों का गढ़ माने जाने वाले चंदौली जिले में 17,455 करोड़ की 69 परियोजनाएं धरातल पर उतरने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। वहीं इसके आसपास जिलों में शामिल चित्रकूट में 6,765 करोड़ की 42 परियोजनाएं, सिद्धार्थनगर में 297 करोड़ की 56 परियोजनाएं, फतेहपुर में 1,831 करोड़ की 72 परियोजनाएं धरातल पर उतरने के लिए रेडी हैं। इसके अलावा तराई वाले जिले बहराइच में 736 करोड़ की 69 परियोजनाएं, श्रावस्ती में 866 करोड़ की 74 परियोजनाएं और बलरामपुर में 368 करोड़ की 36 परियोजनाएं धरातल पर उतरने को तैयार हैं।

उ.प्र. रेरा ने घर खरीदारों व प्रोमोटर्स के साथ बैठक कर समस्या को सुना

रेरा के सचिव प्रमोद उपाध्याय की अध्यक्षता में हुई बैठक

ग्रेटर नोएडा/नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। गौतम बुद्ध नगर में सक्रिय घर खरीदारों के संगठन- नेफोमा, नेफोवा तथा प्रोमोटर्स के संघ क्रेडाई वेस्टर्न यूपी के साथ एक बैठक आयोजित की। उ.प्र. रेरा सचिव प्रमोद कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में कंसिलिएशन कंसल्टेंट आर.डी. पालीवाल व दोनों संघ के पदाधिकारियों के साथ बैठक में कंसिलिएशन फोरम के माध्यम से घर खरीदारों/आवंटियों तथा उनके प्रोमोटर्स के मध्य विवाद का कम से कम समय में समाधान निकालने के विषय पर चर्चा की गई। घर खरीदारों के संगठन की तरफ से पदाधिकारी दीपांकर कुमार, अन्नू खान सहित अन्य सदस्यों तथा क्रेडाई वेस्टर्न यूपी की तरफ से सचिव दिनेश गुप्ता, सदस्य बी के गुप्ता व संजय रस्तोगी सहित अन्य सदस्यों ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक का समापन रेरा सचिव से प्राप्त सुझावों के साथ समाप्त हुआ जिसमें सभी पक्ष के सदस्यों ने कंसिलिएशन फोरम की बैठकों को प्रभावी बनाने की लिए सामूहिक प्रयास करने पर एकमत दिखे। उ.प्र. रेरा की तरफसे आर. डी. पालीवाल ने सर्वप्रथम घर खरीदारों के संगठन को अपनी बात रखने को आमंत्रित किया। घर खरीदारों के संगठन के पदाधिकारियों ने कंसिलिएशन फोरम की मध्यस्थता की सराहना की और 90 प्रतिशत मामलों में आपसी सहमति से होने वाले विवादों के समाधान को उपयोगी बताया। दोनों पक्षों के सुझाव के उपरान्त उ.प्र. रेरा सचिव प्रमोद कुमार उपाध्याय ने पोर्टल से प्राप्त आंकड़ों सहित अपने सुझाव प्रस्तुत किए। सर्वप्रथम उन्होंने क्रेडाई को 4772 मामलों में प्रोमोटर की तरफ से सहयोग प्राप्त न होने से कंसिलिएशन फोरम के प्रयासों में आ रही रुकावट से अवगत कराया और क्रेडाई के माध्यम से इन प्रोमोटर्स को अविलंब सहयोग देने को कहा जिससे विवादों का समाधान प्रारंभ हो सके। इसके अलावा उन्होंने रेरा अधिनियम के प्राविधानों के अनुरूप प्रोमोटर्स को शिकायत दर्ज करने, अपने आवंटियों से नियमित रूप से मिलने, प्रशिक्षित कार्मिक द्वारा आवंटियों से पत्राचार व जानकारी उपलब्ध कराने, प्रारम्भिक स्तर की शिकायतों को बिना मध्यस्थता के सुलझाने, सरल और हिन्दी भाषा में पत्राचार करने सहित कई अन्य सलाह दिए।

सार संक्षेप

गाजियाबाद में अंबेडकर की मूर्ति खंडित, हंगामा

गाजियाबाद। थाना मुरादनगर के ग्राम सुठारी के अंबेडकर पार्क में सामाजिक तत्वों ने संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की मूर्ति को खंडित कर दिया। इसके बाद लोगों में रोष फैल गया। एक विशेष समाज के लोगों ने इसको लेकर हंगामा किया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझा बूझकर शांत किया। पुलिस का कहना है की मौके भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया है और कानून व्यवस्था पूरी तरह से नियंत्रण में है। एसीपी मसूरी नरेश कुमार ने बताया कि सुठारी गांव में एक अंबेडकर पार्क है जहां पर बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर की मूर्ति लगी हुई है। आज सुबह लोगों ने सब सुबह उठकर देखा तो मूर्ति को सामाजिक तत्वों ने क्षतिग्रस्त कर दिया है। इसके बाद लोगों ने शुरुआती दौर में खुद ही हंगामा शुरू कर दिया लेकिन सूचना मिलने पर पुलिस तत्काल पहुंची और मौके को कंट्रोल कर लिया है।

राष्ट्र चेतना मिशन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

बुलंदशहर। देश के प्रथम गृहमंत्री, लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर सामाजिक संस्था राष्ट्र चेतना मिशन एवं डीपीबीएस पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में जरूरतमंद मरीजों की जीवन रक्षा के लिए कॉलेज के प्राचार्य, कई शिक्षकों तथा छात्र छात्राओं सहित कुल 55 लोगों ने रक्तदान किया। मुख्य अतिथि डिबाई भाजपा विधायक सीपी सिंह, कार्यक्रम अध्यक्ष कॉलेज प्राचार्य डॉ. जीके सिंह, कार्यक्रम संयोजक डॉ. तरुण श्रीवास्तव, राष्ट्र चेतना मिशन अध्यक्ष हेमन्त सिंह, बुलंदशहर चैरिटेबल ब्लड बैंक मैनेजर विशाल त्यागी आदि ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। राष्ट्र चेतना मिशन के अध्यक्ष हेमन्त सिंह ने रक्तदान के महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डाला। एक यूनिट रक्तदान से 3 लोगों की जान बचाई जा सकती है और रक्त देने से दाता के स्वास्थ्य पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज प्राचार्य डॉ जीके सिंह एवं संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ तरुण श्रीवास्तव ने किया। रक्तदान शिविर में प्राचार्य जीके सिंह, डॉ तरुण श्रीवास्तव, डॉ वीरेन्द्र सिंह, रौतान सिंह चौहान, विकास गर्ग, राधिका, मुनेन्द्र आदि कुल 55 लोगों ने रक्तदान किया।

गैंगस्टर एक्ट में वांछित बदमाश गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट में वांछित एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। आरोपी बैंकों के साथ धोखाधड़ी करने के मामले में जेल जा चुका थ। वहां से जमानत पर बाहर था। पुलिस ने गैंगस्टर के तहत कार्रवाई करते हुए उसे दोबारा गिरफ्तार किया और जेल भेज दिया है। बदमाश की पहचान अमन शर्मा निवासी गाजियाबाद है। ये बैंको के साथ धोखाधड़ी करने वाले गैंग का सक्रिय सदस्य है।

राम वन गमन की थीम पर नोएडा में बनोगा पार्क

20 करोड़ रुपए किए जाएंगे खर्च

नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। नोएडा में राम वन गमन की थीम पर सेक्टर-112 में पार्क का निर्माण किया जाएगा। 32 एकड़ में पार्क का निर्माण होगा इसके लिए प्राधिकरण 20 करोड़ रुपए खर्च करेगा। सलाहकार कंपनी पार्क का डिजाइन और ले आउट तैयार कर रही है। ये पार्क ग्रीन बेल्ट में बनाया जाएगा। इसलिए कई जोन में बांटा गया है। बता दे नोएडा में बनने वाले अब सभी बड़े पार्क थीम बेस्ड बनाए जाएंगे। जिनका सलाहकार कंपनी ने हाल ही में प्रस्तुतीकरण किया था। ऐसे में कुल चार नए थीम बेस्ड पार्क यहां बनाए जाएंगे।

प्राधिकरण अधिकारियों ने बताया कि राम वन गमन पार्क में राम वनवास के बारे में पूरी जानकारी दी जाएगी। वो वनवास के दौरान किससे मिले सबसे पहले कहा गए। कहा रुके क्या क्या समस्या आई और अद्भुद लीलाओं को भी दिखाया जाएगा। हालांकि पार्क को 3 और 4 डी कांसेपट से बनाया जाएगा इस पर विचार किया जा रहा है। ये निर्णय सलाहकार कंपनी की डिजइन तैयार करेगी। पार्क को तीन जोन में बांटा जाएगा। पहला जोन पंचवटी जोन, दूसरा किष्किंधा जोन और तीसरा लंका जोन होगा। इसमें स्कलपचर और वाकिंग ट्रैक भी बनाया जाएगा। साथ ही पत्थरों पर लोगों को राम गमन से संबंधित पूरी जानकारी भी दी जाएगी। सलाहकार कंपनी पार्क का डिजाइन तैयार कर रही है। जिसमें किष्किंधा जोन में पंपा के पौधे, या सरोवर भी बनाया जाएगा। इसके डिजाइन को शामिल करने के लिए कहा गया है।

स्थायित्व उद्यमिता और मूल्य सृजन के लिए व्यवसाय परिवर्तन सम्मेलन का शुभारंभ

नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। सेक्टर-125 स्थित एमिटी विश्वविद्यालय में 'स्थायित्व उद्यमिता और मूल्य सृजन के लिए व्यवसाय परिवर्तन' विषय पर दो दिवसीय 6 वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन एफ ब्लाक सभागार में किया गया। इस सम्मेलन का शुभारंभ यूएनडीपी इंडिया के एक्शन फॉर क्लाइमेट एंड एनवायरनमेंट के प्रमुख डॉ. आशीष चतुर्वेदी, एसीसीए इंडिया के प्रमुख कुश आहूजा, बेल्जियम के ल्यूवेन विश्वविद्यालय के ल्यूवेन सेंटर फॉर ग्लोबल गवर्नेंस स्टडीज के उप निदेशक डा एक्सल मार्क्स ने किया। इस अवसर पर एमिटी कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड फाइनेंस के बी कॉम प्रोग्राम को एसीसीए मान्यता का सर्टिफिकेट भी प्रदान किया गया। डॉ. आशीष चतुर्वेदी ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन छात्रों के लिए बेहद लाभदायक होते है। स्थिरता की दिशा में व्यवसाय परिवर्तन की अनिवार्यता स्पष्ट है ग्रह के भविष्य की सुरक्षा करना और उद्यमों की स्थायी सफलता सुनिश्चित करना है।

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि ऐसी दुनिया जहां व्यवसाय पर्यावरण और समाजिक चिंताओ को दूर करने के बढ़ते दबाव से जुझ रहे है यह सम्मेलन ज्ञान व नवाचार और सहयोग के प्रतीक के रूप में खड़ा है। परिवर्तन का नेतृत्व करने और स्थायी उद्यमिता और स्थायी मूल्य निर्माण के रास्ते खोजने का अनुभव प्रदान करेगा। एसीसीए इंडिया के प्रमुख कुश अहूजा ने कहा कि एमिटी विश्वविद्यालय द्वारा छात्रों को जागरूक करने के लिए किया जा रही सम्मेलन की पहल उनकी छात्रों के विकास प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होनें छात्रों को समास्यओं के निवारण हेतु समाधान को प्राप्त करने के लिए शोध करने और कड़ी मेहनत से सफलता हासिल करने सलाह दी।

शाम ढ़लते ही 55 स्थानों पर जलाए जा रहे अलाव

नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। बढ़ती ठंड को देखते हुए नोएडा में अलाव जलने शुरू हो गए है। गुरुवार को शाम ढ़लते ही 55 स्थानों पर अलाव जलाए गए। ये अलावा बजार के आसपास और प्रमुख स्थानों पर जहां पब्लिक आती जाती है वहां जलाए जा रहे है। प्राधिकरण अधिकारियों ने बताया कि इनकी संख्या को बढ़ाया जा सकता है। वहीं सभी रैन बसेरों के बाहर भी अलाव की व्यवस्था की गई है। लकड़ी चोरी न हो इसकी निगरानी भी की जा रही है। बता दे शहर को 10 सर्किल में बांटा गया है। सभी सर्किल अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि वो अपने यहां अलावा की व्यवस्था कराए और जलवाए। सबसे ज्यादा अलावा सर्किल-1 में 11 स्थानों पर जलाए जा रहे है। इसके अलावा सर्किल-2 में 10, सर्किल-3 में 4, सर्किल-4 में 5, सर्किल-5 में 5, सर्किल-6 में 7, सर्किल-7 में 3, सर्किल-8 में 4, सर्किल-9 में 5 और सर्किल-10 में 1 स्थान पर अलाव जलाया जा रहा है।

मांगों को लेकर अब दिन रात होगा किसानों का प्रदर्शन

नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। 10 प्रतिशत अतिरिक्त भूखंड प्रत्येक किसान को किया जाए। आबादी की सीमा 450 मीटर से बढ़ाकर एक हजार मीटर की जाए। अतिक्रमण के नाम पर किसानों के भूखंड को प्राधिकरण में न रोका जाए। पांच प्रतिशत के विकसित भूखंड पर वाणिज्यिक गतिविधि अनिवार्य की जाए। इन मुद्दों को लेकर किसान व प्राधिकरण अधिकारियों के बीच लगातार विवाद बढ़ता जा रहा है। गुरुवार को भी किसानों का प्रदर्शन प्राधिकरण के बाहर जारी रहा। प्रदर्शन की शुरुआत हवन के साथ हुई। हवन के बाद किसानों के बीच संगोष्ठी चलती रही। साथ ही आगे की रणनीति भी बनाई गई। इसी बीच धरना स्थल पर एसीपी रजनीश वर्मा ने किसानों से वार्ता का प्रस्ताव रखा। जिस पर किसानों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि यदि वार्ता में किसानों की मांगों को माना जाता है या फिर कुछ सकारात्मक बात है तो ही वार्ता की जाएगी। इसके बाद किसानों ने निर्णय लिया कि धरने पर रहते हुए, जिले के सभी प्रतिनिधि, विधायक, सांसद, एमएलसी जिला अध्यक्ष सभी को अपनी मांगों का मांग पत्र दिया जाएगा।

पुलिस से नोकझोंक के बाद किसानों ने लगाया तंबू

किसानों ने प्राधिकरण के बाहर तंबू लगाना शुरू किया। इसको लेकर पुलिस अधिकारियों के साथ किसानों की नोकझोंक भी हुई। काफी देर तक नोकझोंक के बाद किसानों ने तंबू लगाया। काफी देर की नोक झोंक के बाद आखिर किसान अपनी रणनीति में कामयाब हुए और धरना स्तर पर तंबू लगा दिया गया। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष सुखबीर खलीफा ने मंच के माध्यम से अपने उद्बोधन में कहा कि जब तक किसानों की संपूर्ण समस्याओं का निदान नहीं हो जाएगा तब तक धरना दिन रात जारी रहेगा।

मसूरी इलाके में चला जीडीए का पीला पंजा, कई कॉलोनी ध्वस्त

गाजियाबाद, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) का बुलडोजर आज प्रवर्तन जोन 5 के मसूरी इलाके में चला। जहां पर अवैध रूप से बसाई जा रही कई कॉलोनी को ध्वस्त कर दिया गया। जोन 5 के प्रभारी के नेतृत्व में सचल दस्ता आज भगवती इंजीनियरिंग कॉलेज के पीछे वर्धा नाम से बसाई जा रही अवैध कॉलोनी पर पहुंचा और वहां की गई चाहर दीवारी में अन्य निर्माण को ध्वस्त कर दिया। यह कॉलोनी बिलाल और रविंद्र सिंह द्वारा बसाई जा रही है। इसी तरह डॉक्टर रईस और हारून द्वारा बनाई जा रही कॉलोनी को भी स्वस्थ कर दिया गया। वहीं एनटीपीसी रोड पर इमरान खान व आमिर खान द्वारा इंडियन धर्म कांटे के पास विकसित की जा रही अवैध कॉलोनी को ध्वज कर दिया। कार्रवाई करने वाली टीम में सहायक अभियंता योगेश कुमार और अभियंता परशुराम है योगेश वर्मा प्रमुख रूप से शामिल थे।

महापौर ने शहर में 14 करोड़ 90 लाख के विकास कार्यों का किया शिलान्यास

विकास कार्य में लापरवाही या कोई भी अनियमितता नहीं होगी बर्दाश्त : महापौर

गाजियाबाद, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। महापौर सुनीता दयाल ने वसुंधरा जोन, मोहन नगर जोन, सिटी जोन एवं कविनगर जोन में 14 करोड़ 90 लाख के निर्माण कार्यों के शिलान्यास किया जिसमें पार्षद प्रवीण चौधरी, पार्षद शीतल देओल, पार्षद रेखा गोस्वामी, पार्षद भगवान अग्रवाल, पार्षद प्रतिभा शर्मा, पार्षद सतेन्द्र चौधरी, पार्षद नरेश भाटी, पार्षद राज कुमार नगर, पार्षद अजय शर्मा, पार्षद पवन कुमार आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे। निर्माण कार्य 15वें वित्त आयोग की धनराशि के हैं। इसके लिए क्षेत्रीय पार्षद एवं स्थानीय लोगो ने महापौर का भव्य स्वागत एवं धन्यवाद प्रकट किया। शिलान्यास के दौरान महापौर सुनीता दयाल ने बताया कि आप सभी के क्षेत्र के पार्षद लगातार प्रयास कर विकास कार्य करवा रहे है। आप सभी की शिकायत सुनकर कार्य को अंजाम दे रहे है और हम इसी प्रकार विकास कर रहे है शहर में इसी प्रकार भविष्य में विकास होंगे, किसी भी वार्ड को कमजोर नहीं छोड़ा जाएगा सभी का विकास एक समान होगा, नगर निगम की मूल सुविधा हर व्यक्ति को प्राप्त होगी।निर्माण कार्यों की देख रेख पार्षद एवं आप सभी की है किसी प्रकार की निर्माण में लापरवाही या अनियमितता दिखे तो तत्काल मुझे अवगत कराया जाए यह सब कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान लाभार्थियों की बढ़ी संख्या : नगर आयुक्त

गाजियाबाद, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। विकसित भारत संकल्प यात्रा के कार्यक्रम लगातार शहर में चल रहे हैं जिसमें अधिकारियों की टीम कार्यक्रमों को सफल बना रही है। लगभग 18 से 20 कार्यक्रम सफलतापूर्वक हो चुके हैं जिसमें शहर के कई जनप्रतिनिधियों तथा मंत्री गणों ने भी प्रतिभाग किया है, आयोजित भव्य कार्यक्रमों की प्रशंसा भी की गई है।

रोस्टर के अनुसार आगामी सप्ताह में रहीसपुर, स्वर्ण जयंतीपुरम, शास्त्री नगर व अन्य कई स्थान पर विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रमों का आयोजन होना है। अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार यादव नोडल के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनकी देखरेख में केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार की योजनाओं के कैंप भी लग रहे हैं। 29 नवम्बर से गाजियाबाद नगर

निगम सीमा अंतर्गत विकसित भारत संकल्प यात्रा प्रारंभ हुई, जो की 26 जनवरी 2024 तक जारी रहेगी। लाभार्थियों की संख्या का ग्राफ बढ़ता जा रहा है घर-घर तक सरकार की योजनाएं पहुंचने में निगम अधिकारी अहम भूमिका निभा रहे हैं जिसके लिए नगर आयुक्त द्वारा समय-समय पर टीम को मोटिवेट करने का कार्य चल रहा है। 29 नवम्बर से 13 दिसम्बर तक लगभग 14 दिवसों में विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान लग रहे योजनाओं के कैंपों के माध्यम से प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत लाभार्थियों की संख्या बढ़कर 2029 हो गई है। जिसमें 10000 की धनराशि ऋण के रूप में 644 लाभार्थियों तक पहुंचाई जा चुकी है, दूसरी 20000 की किस्त समस्त कार्यवाही पूरी करते हुए 1125 लाभार्थियों को पहुंचाई जा चुकी है, इसी क्रम को आगे बढ़ते हुए 260 कर्मचारियों को 50000 की किस्त पहुंचाई जा चुकी है।

प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत तेजी से कार्य करते हुए कैंपों के माध्यम 3166 लाभार्थियों को सहयोग किस्त पहुंचाई जा चुकी है, जिसके क्रम में पहले 50000 रुपए की किस्त आवास बनाने के लिए 2734 लाभार्थियों को पहुंच चुकी है दूसरी डेढ़ लाख की किस्त 147 लाभार्थियों तक पहुंच चुकी है तथा 285 लाभार्थियों को अंतिम किस्त 50000 की पहुंच चुकी है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान अन्य योजनाओं में भी लाभार्थियों की संख्या में इजाफा देखने को मिला है, उज्वला योजना के अंतर्गत 40 से बढ़कर लाभार्थियों की संख्या 269 हो गई है,आयुष्मान के अंतर्गत कैंप के दौरान 107 से बढ़कर 519 हो गई है, फ्री हेल्थ चेकअप योजना के अंतर्गत लाभार्थियों की संख्या 107 से बढ़कर 2254 हो गई है, आधार कार्ड कैंप में लाभार्थियों की संख्या 12 से बढ़कर है।

नंदग्राम के सामुदायिक भवन को निगम ने किया कब्जा मुक्त

गाजियाबाद, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। नगर निगम ने नंदग्राम स्थित निगम के सामुदायिक भवन को भी कब्जा मुक्त कराया गया। मौके पर सहायक नगर आयुक्त पल्लवी, ई टी एफ टीम से कर्नल दीपक शरण, संपत्ति अधीक्षक भोलानाथ गौतम व टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए रिपोर्ट महापौर तथा नगर आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत की। संपत्ति प्रभारी भोलानाथ ने बताया कि नंदग्राम स्थित सामुदायिक भवन को कब्जा मुक्त करते हुए निगम द्वारा कब्जे में लिया गया। सदन की बैठक में इसका निर्णय लिया जा चुका था जिसके क्रम में कार्रवाई की गई है। कई वर्षों से किसी समिति द्वारा अपना कब्जा सामुदायिक भवन पर कर रखा था जिसका संचालन भी वह अवैध रूप से कर रहा था। सामुदायिक भवन को कब्जा मुक्त कराया गया है जिसको जनहित में उपयोग में लाया जाएगा,

■ **महापौर तथा नगर आयुक्त को पेश की रिपोर्ट**

जिसका संचालन भी गाजियाबाद नगर निगम द्वारा ही किया जाएगा। महापौर तथा नगर आयुक्त ने संबंधित संपत्ति विभाग के अधिकारियों को रोस्टर के अनुसार समस्त जोनों में वृहद स्तर पर अभियान चलाते हुए सरकारी भूमि को कब्जा मुक्त करने के निर्देश दिए हैं। नंदग्राम का सामुदायिक भवन का संचालन गाजियाबाद नगर निगम द्वारा किया जाएगा।

कैपिटल ज़ोन

उवाच "

थोड़े आलस और लापरवाही की वजह सड़क दुर्घटना में लोग अपनी जान गवां रहे है। वाहन चलाते हुए आपने हेलमेट और सीट बेल्ट नहीं लगा रखी हो एक्सीडेंट हो जाए तो चोट लग जाए तो आप और आपके परिवार को कितना नुकसान होगा। पुलिस आपकी सुरक्षा के लिए तैनात है न कि आपको परेशान करने कि लिए। ट्रैफिक नियम पालन करने से आप अपनी जिंदगी बढ़ा सकते है। **पवन कुमार, एसीपी ट्रैफिक**

यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में 25 हेक्टेयर में विकसित होगा ट्रांसपोर्ट नगर

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के सेक्टर-33 में ट्रांसपोर्ट नगर विकसित किया जाएगा। 25 हेक्टेयर में इसे विकसित करने की योजना है। इसके लिए 147 भूखंडों की योजना जल्द लाई जाएगी।

■ ट्रांसपोर्ट नगर के लिए प्राधिकरण जल्द लाएगा 147 भूखंड़ों की योजना

यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में गतिविधियां शुरू होने लगी हैं। बसावट बढ़ने से पहले यमुना प्राधिकरण यहां पर जरूरी सुविधाओं को विकसित करने पर जोर दे रहा है। प्राधिकरण ने ट्रांसपोर्ट नगर विकसित करने की योजना बनाई है। इसके लिए सेक्टर-33 का चयन किया गया है। प्राधिकरण इसमें सर्विस गैराज, आटो पार्ट्स शॉप, शोरूम, धर्म कांटा, गोडाउन, आफिस आदि विकसित करेगा। इसके लिए भूखंड की योजना निकाली जाएगी। ट्रांसपोर्ट नगर में रेस्तरां, होटल, मल्टी लेवल पार्किंग भी विकसित की जाएगी। इसके अलावा ट्रकों की पार्किंग के लिए भी जगह तय की जाएगी। ट्रांसपोर्ट कंपनियों के आफिस का भी प्रावधान किया जाएगा। प्राधिकरण ने इसके लिए भूखंडों की योजना निकालेगा। इसमें 120 वर्ग मीटर, 512, 640, 820 और 1200 वर्ग मीटर के भूखंड शामिल होंगे। प्राधिकरण की प्रस्तावित योजना में 147 भूखंड शामिल किए हैं।

यमुना एक्सप्रेस वे पर एक जनवरी से सफर हो जाएगा महंगा

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। यमुना एक्सप्रेस वे पर एक जनवरी 2024 से सफर करना महंगा हो जाएगा। यमुना एक्सप्रेस वे पर टोल दरें बढ़ाने की तैयारी है। टोल दरों में दो से पांच प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती है। इसकी तैयारी चल रही है। 18 दिसम्बर को इस बढ़ोतरी पर मुहर लगने की उम्मीद है। इसके बाद इस एक्सप्रेस वे पर सफर करना महंगा हो जाएगा।

ग्रेटर नोएडा से आगरा तक यमुना एक्सप्रेस वे पर 165 किलोमीटर लंबा है। इस पर सफर करने के लिए आपको टोल टैक्स देना पड़ता है। अब इस टोल टैक्स की दरों को बढ़ाने की तैयारी है। 18 दिसम्बर को यमुना प्राधिकरण की बोर्ड बैठक है। एक्सप्रेस वे का संचालन करने वाली कंपनी ने यमुना प्राधिकरण को टोल दरें बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है। एक्सप्रेस वे का मेंटेनेंस बढ़ने और अन्य कामों में अधिक पैसा खर्च हो रहा है। इसके चलते एक्सप्रेस वे का प्रबंधन करने वाली कंपनी ने टोल दरों को बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है। बताया जाता है कि कंपनी ने दो से पांच प्रतिशत तक टोल दरें बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है। अब यमुना प्राधिकरण इस प्रस्ताव को अपने बोर्ड में रखेगा। अगर बोर्ड ने मंजूरी दी तो टोल दरों में वृद्धि हो जाएगी। इसके बाद इस एक्सप्रेस वे पर सफर पहले के मुकाबले महंगा हो जाएगा।

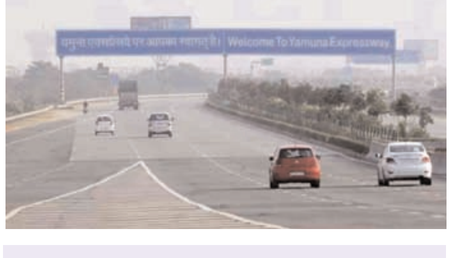

■ यमुना एक्सप्रेस वे पर टोल दरें बढ़ाने की तैयारी, 18 दिसम्बर को बोर्ड में रखा जाएगा प्रस्ताव

■ एक्सप्रेस वे का संचालन करने वाली कंपनी ने टोल दर पांच फीसदी तक बढ़ाने का दिया प्रस्ताव

■ यमुना प्राधिकरण की 18 दिसम्बर को होगी बोर्ड बैठक, बढ़ोतरी पर मुहर लगने की है उम्मीद

अभी यमुना एक्सप्रेस वे पर कार, वैन, जीप, हल्के वाहनों को 2.60 रुपए प्रति किलोमीटर की दर से टोल चुकाना पड़ता है। इसी तरह हल्के व्यवसायिक वाहनों को 4.15 रुपए प्रति किलोमीटर के हिसाब से टोल देना होता है। इसी तरह ट्रक-बस के लिए 8.45 रुपए प्रति किलोमीटर, तीन से छह धुरी वाले वाहनों को 12.90 रुपए प्रति किलोमीटर और सात या उससे ज्यादा धुरी वाले वाहनों को 16.60 रुपए प्रति किलोमीटर की दर से टोल देना होता है।

यमुना एक्सप्रेस वे पर वाहनों की रफ्तार पर लगी लगाम

ग्रेटर नोएडा। यमुना एक्सप्रेस वे पर रात 14 बजे से वाहनों की रफ्तार पर लगाम गई। कोहरे के चलते एक्सप्रेस वे पर 14 दिसम्बर की रात से वाहनों की रफ्तार को कम कर दिया गया। साथ ही वाहन चालकों को जागरूक करने के लिए पंपलेट आदि बांटे जाएंगे।

यमुना एक्सप्रेस वे पर 15 दिसम्बर से 15 फरवरी तक कोहरे और धुंध को देखते हुए वाहनों की रफ्तार को कम कर दिया है। कार और छोटे वाहनों की रफ्तार 100 किमी प्रति घंटा से कम करके 75 किमी प्रति घंटा कर दिया गया। ट्रक, बस आदि भारी वाहनों की रफ्तार 75 किमी प्रति घंटा से 60 किमी प्रति घंटा किया गया। रात 12 बजे से रफ्तार का नय नियम लागू हो गया। अगर कोई वाहन नियम का उल्लंघन करते पाए गए तो उनका चालान किया जाएगा। एक्सप्रेस वे के प्रवेश और निकास पर वाहनों चालकों को जागरूक करने के लिए पंपलेट आदि बांटा जा रहा है।

जेवर एयरपोर्ट पर मुख्यसचिव की अध्यक्षता में समन्वय समिति की बैठक आज

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र शुक्रवार को नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की समन्वय समिति की बैठक लेंगे। इसके अलावा ईस्टर्न पेरीफेरल और यमुना एक्सप्रेस वे को जोड़ने के लिए बनने वाले इंटरचेंज के निर्माण का शुभारंभ करेंगे। वह ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की समीक्षा बैठक भी करेंगे।

■ मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा आज करेंगे ईस्टर्न पेरीफेरल पर इंटरचेंज के निर्माण का उद्घाटन

■ ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के विकास कार्यों की भी मुख्य सचिव करेंगे समीक्षा

उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र शुक्रवार को ग्रेटर नोएडा आएंगे। वह नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर की समन्वय समिति की बैठक की अध्यक्षता करेंगे। बैठक में समिति के सभी सदस्य शामिल होंगे। समिति में प्राधिकरण के सीईओ के साथ अलावा केंद्रीय विभागों के अधिकारी शामिल हैं। बैठक में एयरपोर्ट की प्रगति और आगे की कार्य योजना को लेकर चर्चा होगी। यह बैठक एयरपोर्ट साइट पर होगी।

मुख्य सचिव ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस वे और यमुना एक्सप्रेस वे को जोड़ने के लिए बनने वाले इंटरचेंज का शुभारंभ करेंगे। यह इंटरचेंज जगनपुर अफजलपुर के पास बनेगा। इसके निर्माण में करीब 122 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसकी तैयारी पूरी हो गई है। मुख्य सचिव ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की समीक्षा बैठक भी करेंगे। समीक्षा बैठक को लेकर गुरुवार को ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण में तैयारी होती रही। वह वर्तमान योजनाओं और आने वाली योजनाओं के बारे में जानेंगे। उसको लेकर दिशा निर्देश भी देंगे।

एमआरएफ सेंटर पर ग्रेनो प्राधिकरण ने लगाया 5 लाख का जुर्माना

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने सेक्टर ज्यू वन में एमआरएफकेंद्र संचालित करने वाली संस्था इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन (आईपीसीए) पर 5 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। एमआरएफ प्रोसेसिंग सेंटर पर कंपोस्टिंग मशीन न चलाए जाने के चलते प्राधिकरण के जनस्वास्थ्य विभाग की तरफ से यह कार्रवाई की गई है। वहीं सेक्टर अल्फा वन की दो सोसाइटियों में कूड़े का उचित निस्तारण न करने पर मैसर्स के. सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट सर्विस पर 12,400 का जुर्माना लगाया गया है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार के निर्देश पर शहर में गंदगी फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई शुरू हो गई है। इसी क्रम में प्राधिकरण के ओएसडी इंदु प्रकाश सिंह ने गुरुवार को जनस्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ वेस्ट का निस्तारण करने के लिए सेक्टर ज्यू वन स्थित एमआरएफ/प्रोसेसिंग सेंटर का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान एमआरएफ प्रोसेसिंग सेंटर पर लगी कंपोस्टिंग मशीन बंद मिली। यह मशीन खराब हालत में थी। संस्था द्वारा गार्बेज को लखनावली स्थित अस्थाई डंपिंग साइट पर चोरी छुपे कूड़ा डंप किए जाने की भी सूचना मिल रही थी। इसके चलते स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक उत्सव कुमार निरंजन ने इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन (आईपीसीए) पर 5 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है।

■ औचक निरीक्षण के दौरान कंपोस्टिंग मशीन बंद मिलने पर की कार्रवाई

■ दो सोसाइटियों में कूड़े का उचित निस्तारण न करने पर भी कंपनी पर जुर्माना

जुर्माने की रकम शीघ्र जमा न करने पर और भी कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। इसके बाद ओएसडी इंदु प्रकाश सिंह ने सेक्टर अल्फा वन स्थित मिलेनियम विलेज और हरमुख अपार्टमेंट का जायजा लिया। यह दोनों सोसाइटियां बल्क वेस्ट जनरेटर की श्रेणी में आती है। इन सोसाइटियों में मैसर्स के .सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट सर्विस द्वारा ड्रम कंपोस्टिंग पद्धति से कूड़े का निस्तारण किए जा रहा है, लेकिन औचक निरीक्षण के दौरान ड्रम में बोरियां व अन्य सामग्री भरी पाई गई। इससे पता चलता है कि कूड़े से कंपोस्टिंग प्रक्रिया नहीं की जा रही, बल्कि कूड़े को इधर-उधर फेंका जा रहा है। जिसके चलते जन स्वास्थ्य विभाग की तरफ से दोनों सोसाइटियों में कूड़े के प्रबंधन का काम देख रही के. सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट सर्विस पर 6200--6200 रुपए का जुर्माना लगाया गया है। जुर्माने की रकम तीन कर दिवस में जमा करने की चेतावनी दी गई है। ओएसडी इंदु प्रकाश सिंह ने गंदगी फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई आगे भी जारी रखने की चेतावनी दी है।

नमो सेवा केन्द्र का उद्घाटन भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता ने किया

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। बंसल मार्केट गांधी रोड खुर्जा पर नमो सेवा केंद्र का उद्घाटन राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने किया। गोपाल कृष्ण अग्रवाल का खुर्जा आगमन पर बाल्मीकि चौक पर फूल माला, ढोल नगाड़ों के साथ स्वागत किया। इस अवसर पर गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने महर्षि वाल्मीकि की प्रतिमा पर फूल माला चढ़कर आशीर्वाद प्राप्त किया। वहां से जन समूह के साथ पैदल सभी से मिलते हुए जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए बंसल मार्केट स्थित नमो सेवा केन्द्र पहुंचे। इस अवसर पर गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने बताया कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने और जन कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए नमो-सेवा केंद्र खुर्जा की स्थापना की गई है। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका परिषद एवं जिला उपाध्यक्ष राजीव बंसल ने बताया कि हम कम से कम 10 व्यक्तियों को जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दें तो पात्र व्यक्तियों को अवश्य लाभ पहुंचेगा और एक सशक्त भारत का निर्माण होगा। जिला पंचायत सदस्य नाहर सिंह ने कहा कि हम सभी कार्यकर्ताओं को जनकल्याणकारी योजनाओं को अन्तिम पायदान तक पहुंचाने में जुटना होगा। इस अवसर पर संचालन नगर कोषाध्यक्ष डीसी गुप्ता ने किया और अध्यक्षता पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष एडवोकेट नवीन कुमार ने की।

सड़क सुरक्षा पर सेमिनार में युवाओं को किया गया जागरुक

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। शारदा विश्वविद्यालय के स्टूडेंट्स वेलफेयर विभाग ने सड़क सुरक्षा पर सेमिनार का आयोजन किया। इस दौरान लगभग 200 छात्रों को मुफ्त में हेलमेट दिए। कार्यक्रम मुख्य वक्ता इंटरनेशनल रोड सेफ्टी के अंबेस्डर करोलिस और एसीपी ट्रैफिक पवन कुमार रहे। कार्यक्रम में एसीपी ट्रैफिक पवन कुमार ने कहा कि थोड़े आलस और लापरवाही की वजह सड़क दुर्घटना में लोग अपनी जान गवां रहे है। वाहन चलाते हुए आपने हेलमेट और सीट बेल्ट नहीं लगा रखी हो एक्सीडेंट हो जाए तो चोट लग जाए तो आप और आपके परिवार को कितना नुकसान होगा। पुलिस आपकी सुरक्षा के लिए तैनात है न कि आपको परेशान करने कि लिए। ट्रैफिक नियम पालन करने से आप अपनी जिंदगी बढ़ा सकते है। इंटरनेशनल रोड सेफ्टी के एंबेसडर करोलिस ने कहा कि आपके शरीर में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण सिर है। उसकी सुरक्षा के लिए आपको ट्रैफिक नियम का पालन और अच्छे क्वालिटी के हेलमेट पहनना चाहिए। उन्होंने ने कहा कि मैं पूरी सुरक्षा के साथ पूरी दुनिया बाइक से घूम रहा हूं। आज के समय में आप अपने शरीर की सुरक्षा नहीं कर रहे हैं तो आपसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं है।

स्टूडेंट्स वेलफेयर विभाग के डीन बीके सिंह ने कहा कि दुनिया का सबसे युवा राष्ट्र होने के नाते भारत में दुनिया की सबसे जीवंत युवा आबादी है। जिसमें 808 मिलियन से अधिक लोग (या कुल आबादी का लगभग 66 प्रतिशत) 35 वर्ष से कम आयु के हैं। 18-45 आयु वर्ग के युवा वयस्क 2021 में पीड़ितों में से 67.6 प्रतिशत पीड़ित थे।

यह स्थापित करता है कि युवा सबसे कमजोर सड़क उपयोगकर्ता हैं, इसलिए उन्हें सड़क सुरक्षा के संदर्भ में अपनी क्षमता निर्माण के माध्यम से शिक्षित करने की आवश्यकता है। इस परियोजना को सड़कों पर युवाओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आईएसआई मार्क गुणवत्ता वाले हेलमेट और जुड़ाव प्रदान करके उनकी सुरक्षा बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा में लोगों ने मुख्यमंत्री के सम्बोधन को सुना

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। विकसित भारत संकल्प यात्रा गुरुवार को गांव धनवास में गांव एवं कलोदा गांव में पहुंची। धनवास गांव में भाजपा जिला अध्यक्ष गजेंद्र मावी ने ग्रामीणों को शपथ दिलाते हुए कहा हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए स्वदेशी सामान आत्मनिर्भर स्वयं की बनी चीजो का उत्पादन और उपयोग करे। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता इंद्र नगर मीडिया प्रभारी कर्मवीर आर्य संदीप शर्मा कपिल गुर्जर महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष रजनी तोमर विधानसभा में मुख्य अतिथि अभियान के जिला संयोजक रवि जिंदल वीरेंद्र भाटी अतुल गहलोत विचित्र तोमर गांव के प्रधान राजू खान राकेश प्रधान गांव कलौंदा में आजमगढ़ से सीधे मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी आदित्यनाथ के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जुड़े और उन्होंने उत्तर प्रदेश के लोगों को एवं लाभार्थियों को अधिकारियों को एवं भाजपा के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी सरकार ने कोई भी योजना जाति को देखकर नहीं बनाई। गरीब शोषित वंचित पिछड़ा को इसका लाभ पहुंचे जो पात्र व्यक्ति है यह योजना उन तक पहुंचे ऐसी सरकार की योजना है। कार्यक्रम में छह महिलाओं की गोद भराई कार्यक्रम भी हुआ एवं सात लोगों को आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए। पांच लोगों को उज्ज्वला गैस कनेक्शन दिया गया गांव के प्रधान राजू खघन को हर घर नल योजना के तहत कलौंदा में 1800 नल घर घर तक पहुंचाई उसके लिए उन्हें प्रशासित् पत्र देकर सम्मानित किया गया।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पखवाड़े के अंतर्गत ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला आयोजित

जेवर, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। जिलाधिकारी के निर्देशन में गुरुवार को ब्लॉक परिसर में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पखवाड़ा के अंतर्गत ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें महिलाओं से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई तथा महिलाओं की सुरक्षा, स्वालम्बन तथा बाल संरक्षण से सम्बंधित विभिन्न मुद्दो पर चर्चा की गई। सहायक विकास अधिकारी व प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी आलोक रंजन ने बताया कि महिला ग्राम प्रधान, समूह की महिलाओं, बी सी0 सखी, स्वास्थय व शिक्षा विभाग आदि स्टेक होल्डर्स हेतु विकास खण्ड में ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला की गई। जिसमें महिलाओं की सुरक्षा एवं स्वालम्बन तथा बाल संरक्षण से सम्बंधित विभिन्न मुद्दो, लैंगिक समानता, बाल विवाह प्रतिषेध, दहेज प्रतिषेध अधिनियम, पोक्सो अधिनियम, बालिका शिक्षा व स्वास्थ के प्रति चर्चा की गई।

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

भूखण्ड संख्या-01, सैक्टर-नॉलेज पार्क-4, ग्रेटर नोएडा सिटी-201310 जिला-गौतमबुद्धनगर।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम/सेक्टर-सैनी की प्रस्तावित आबादी में आवंटित आवंटन संख्या-एस.ए.आई01341, भूखण्ड संख्या-55, पाकेट-बी, क्षेत्रफल-60 वर्ग मीटर श्री हर किशन पुत्र श्री हरचैन, निवासी-ग्राम-सैनी, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 के पक्ष में आवंटित किया गया था। आवंटी श्री हर किशन पुत्र श्री हरचैन की मृत्यु के उपरांत इनके श्रीमती महावीरी पत्नी स्व0 श्री हरि किशन, सर्वश्री लक्ष्मी नारायण, शिव नारायण, शिव कुमार, धर्मेन्द्र, जौनी, प्रदीप पुत्रगण स्व0 श्री हरि किशन, निवासी-ग्राम-सैनी, ग्रेटर नोएडा, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 में से श्रीमती महावीरी पत्नी स्व0 श्री हरि किशन, निवासी-ग्राम-सैनी, ग्रेटर नोएडा, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 के पक्ष में नामांतरण करने हेतु नामांतरण प्रपत्र एव शपथ-पत्र प्रस्तुत किये गये है। अतः इस नामांतरण के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 35 दिन के अन्दर अपनी लिखित आपत्ति कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखो में इनके श्रीमती महावीरी पत्नी स्व0 श्री हरि किशन, निवासी-ग्राम-सैनी, ग्रेटर नोएडा, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 के पक्ष में सह आवंटी के रूप में दर्ज कर दिया जायेगा।

प्रबन्धक (कृषक आबादी)
ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण

राम-ईश इंस्टीट्यूट में रक्तदान शिविर का आयोजन

ग्रेटर नोएडा, 12 दिसम्बर (देशबन्धु)। राम-ईश इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, नोएडा के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विद्यार्थी और स्टाफ सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस दौरान शिविर में 140 यूनिट रक्त इक्ट्ठा किया गया। संस्थान प्रबंधन और प्राचार्य ने समाज के लिए उपयोगी इस कार्य के लिए सभी की सराहना की। शिविर में शामिल टीम के सदस्यों ने बताया कि एक यूनिट रक्तदान से आप किसी का जीवन बचा सकते हैं, रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है।

स्मार्ट इंडिया हैकथॉन में तेरह राज्यों की 35 टीमें ले रहीं है हिस्सा

ग्रेटर नोएडा, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। स्मार्ट इंडिया हैकथॉन-2023 (छठें संस्करण का ग्रैंड फिनाले) 19-23 दिसम्बर 2023 को गलगोटिया विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित होने जा रहा है। इससे पहले, विश्वविद्यालय ने टॉयकैथॉन और स्मार्ट इंडिया हैकथॉन 2022 का सफलतापूर्वक आयोजन किया है। विवि के कुलपति प्रोफेसर मल्लिकार्जुन बाबू ने प्रेसवार्ता में बताया कि गलगोटियास यूनिवर्सिटी को भारत सरकार द्वारा तीसरी बार इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम की मेजबानी के लिए चुना गया है। स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2023 के ग्रैंड फिनाले में मंत्रालय ने हमें नोडल सेंटर के रूप में चुनकर अपना विश्वास दिखाया है और हमारी पूरी टीम 70 फैकल्टी मेंबर और 200 स्टूडेंट वॉलिंटियर 32 संस्थानों के 250 से अधिक प्रतिभागियों की मेजबानी करने के लिए तत्पर हैं। प्रतिकुलपति (प्रो-वीसी) प्रो. अवधेश कुमार ने कहा कि स्मार्ट इंडिया हैकथॉन 2023 एक राष्ट्रव्यापी पहल है। जो छात्रों को हमारे दैनिक जीवन में आने वाली कुछ गंभीर समस्याओं को हल करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। गलगोटिया यूनिवर्सिटी के लिए इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम की मेजबानी करना गर्व का विषय है। नोडल अधिकारी मिनाक्षी शर्मा ने बताया कि गलगोटिया विश्वविद्यालय भारत के 13 विभिन्न राज्यों से आई कुल 35 टीमों की मेजबानी करेगा। कुल मिलाकर, 32 प्रतिभागी संस्थान हैं जिनमें 250 से अधिक प्रतिभागी हैं जिनमें 200 से अधिक छात्र और लगभग 40 सलाहकार (मेंटर) शामिल हैं। उन्होंने कहा कि गलगोटियास विश्वविद्यालय की टीमें तीन अलग-अलग सरकारी संगठनों द्वारा दिए गए 4 विषयों (स्मार्ट शिक्षा, स्मार्ट ऑटोमेशन, मेडटेक/बायोटेक/हेल्थटेक और विविध) के आधार पर विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. नितिन गौर ने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय पूर्व की भांति ही इस बार भी सफल आयोजन करेगा। जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. ए. राम पाण्डेय ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

■ गलगोटिया विवि में 19 से 23 दिसम्बर तक होगा आयोजन

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोनः- 0120-4270009

देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम जगनपुर अफजलपुर में उप जिलाधिकारी, सदर, गौतमबुद्धनगर से प्राप्त परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र संख्या 1802/एस0टी0/एस0डी0एम0/2022, दिनांक 09.11.2022 के अनुसार निम्न प्रकार मृतक स्व0 रामपाल पुत्र श्री पूरन निवासी ग्राम नवादा, परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर के स्थान पर उनके वारिसानों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के परिवारिक सदस्यों के नाम	मृतक से संबंध	आयु लगभग
जगनपुर अफजलपुर	1057, 1053, 1057, 1055, 1056	स्व0 रामपाल पुत्र श्री पूरन निवासी ग्राम नवादा, परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्रीमती लक्ष्मी	पत्नी	68 वर्ष
			श्री राजू	पुत्र	44 वर्ष
			श्री ब्रहमदत्त शर्मा	पुत्र	40 वर्ष
			श्रीमती बलेश	पुत्री विवाहित	52 वर्ष
			श्रीमती मुनेश	पुत्री विवाहित	34 वर्ष
			श्रीमती गीता शर्मा	पुत्री विवाहित	47 वर्ष
			श्रीमती बिना शर्मा	पुत्री विवाहित	55 वर्ष
			श्रीमती शिमला	पुत्री विवाहित	40 वर्ष

उपरोक्त परिवार सदस्यों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड व अन्य अनुमन्य लाभ संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा। यदि उच्च स्तरीय जांच के कम में प्रश्नगत भूमि पर किसी न्यायालय या आदेश द्वारा कृतक का स्वत्व समाप्त होता है अथवा क्षेत्रफल कम किया जाता है तो कम हुए क्षेत्रफल अथवा सम्पूर्ण क्षेत्रफल के सापेक्ष इस वारिसान को निरस्त समझा जाये।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उप जिलाधिकारी, सदर जनपद गौतमबुद्धनगर द्वारा परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र संख्या 785/एस0टी0/एस0डी0एम0/2023, दिनांक 19.08.2023 मृतक स्व0 श्री श्याम सिंह पुत्र श्री खचेडू सिंह व श्रीमती नरवीरो देवी पत्नी श्री श्याम सिंह नि0 ग्राम पारसौल तहसील सदर जनपद गौतमबुद्धनगर की मृत्यु कमशः दिनांक 20.12.1994 व 06.03.2023 को हो चुकी है। उनके स्थान पर उनके वारिसानों के नाम निम्न प्रकार दर्ज किया जाना प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के परिवारिक सदस्यों के नाम	मृतक से संबंध	आयु लगभग	
भट्टा	27	स्व0 श्री श्याम सिंह पुत्र श्री खचेडू सिंह व श्रीमती नरवीरो देवी पत्नी श्री श्याम सिंह नि0 ग्राम पारसौल	श्री ऋषिपाल सिंह मलिक	पुत्र	62 वर्ष	
			श्री राजेन्द्र सिंह	पुत्र	56 वर्ष	
पारसौल	113		श्रीमती कृष्णा देवी पत्नी स्व0 महेन्द्र सिंह मलिक	पुत्रवधू	60 वर्ष	
			श्री शैलेन्द्र सिंह पुत्र स्व0 महेन्द्र सिंह मलिक	पौत्र	38 वर्ष	
			श्री कपिल कुमार मलिक पुत्र स्व0 महेन्द्र सिंह मलिक	पौत्र	36 वर्ष	
			श्रीमती कान्ती देवी	पुत्री	58 वर्ष	विवाहित
			श्रीमती महेन्द्री देवी	पुत्री	53 वर्ष	विवाहित
			श्रीमती राजेन्द्री देवी	पुत्री	51 वर्ष	विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड व 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है उप जिलाधिकारी सदर से प्राप्त परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र संख्या 771/एस0टी0-एस0डी0एम0/2018 दिनांक 18.05.2018 के अनुसार मृतक श्री स्व0 महरचन्द पुत्र हरीश चन्द नि0 ग्राम मौहम्मदपुर गूर्जर परगना दनकौर तहसीलदार व जिला गौतमबुद्धनगर की मृत्यु दिनांक 14.11.2017 को हो चुकी है, जिसके अनुसार निम्न प्रकार मृतक के स्थान पर उनके वारिसानों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के पारिवारिक सदस्यों के नाम	आयु लगभग	मृतक से संबंध
मथुरापुर	52	स्व0 महरचन्द पुत्र हरीश चन्द नि0 ग्राम मौहम्मदपुर गूर्जर परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्रीमति राजो देवी	63 वर्ष	पत्नी
			कपिल नागर	33 वर्ष	पुत्र
			प्रवीन कुमार	32 वर्ष	पुत्र
			पवन कुमार	29 वर्ष	पुत्र
			कु0 पिंकी	27 वर्ष	पुत्री विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड व 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर संबंधी अभिलेखो में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उप जिलाधिकारी सदर से प्राप्त परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र 971/एस0टी0/एस0डी0एम0/2023, दिनांक 11.10.2023 स्व0 श्री नजर मौहम्मद पुत्र श्री छोटे नि0 ग्राम नि0 ग्राम फतेहपुर अट्टा की मृत्यु दिनांक 16.04.2023 को हो चुकी है। जिसके अनुसार निम्न मृतक के स्थान पर उनके वारिसानों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खाता संख्या	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के परिवारिक सदस्यों के नाम	आयु लगभग	मृतक से संबंध
फतेहपुर अट्टा	145	138, 139, 140, 141, 142/1 145, 154, 156, 194, 196, 197, 147/1, 151, 173, 174	स्व0 नजर मौहम्मद पुत्र छोटे नि0 ग्राम फतेहपुर अट्टा	श्रीमती मुन्नी	78	पत्नी
				श्रीमति इमराना पत्नी स्व0 वशमुद्दीन	46	पुत्रवधू
				श्री शहबाज पुत्र स्व0 वशमुद्दीन	17	पौत्र
				श्री अरबाज पुत्र स्व0 वशमुद्दीन	14	पौत्र
				श्री मौहम्मद बिलाल पुत्र स्व0 वशमुद्दीन	12	पौत्र
				श्रीमती मीना	52	पुत्री
				श्रीमति वसीला	46	पुत्री
				श्रीमती सीतारा	53	पुत्री
				श्रीमति नसरीन	55	पुत्री
				श्रीमति मदीना	36	पुत्री

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर इनके वारिसानों का नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड व 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, शुक्रवार 15 दिसम्बर 2023

संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

धुएं और नारों पर मौन मोदी

बुधवार को भारत के नये संसद भवन में घुसकर धुंआ फैलाने और बाहर नारेबाजी करने के पीछे जो लोग हैं, उनमें से चार को पकड़ लिया गया है तथा कुछ की तलाश जारी है। इनसे पूछताछ से मुख्यत: जो बात सामने आई है, उससे प्रथम दृष्टया यही प्रतीत होता है कि उनका मकसद कोई बड़ी घटना को अंजाम देना नहीं था, वरन जनता की कतिपय समस्याओं की ओर देश की सबसे बड़ी पंचायत का ध्यान आकृष्ट करना था। यह तो माना जा सकता है कि युवाओं द्वारा अपनी बात को थोड़ा सनसनीखेज तरीके से ज़रूर उठाया गया है, लेकिन इसके बरक्स दो बातें सामने आई हैं-पहली तो यह कि करोड़ों रुपयों से निर्मित नये संसद भवन की सुरक्षा व्यवस्था अत्यंत लचर है; और दूसरी बात है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हमेशा की भांति चुप्पी। इस हादसे ने साबित कर दिया है कि देश के साथ बड़ी से बड़ी बात हो जाये, मोदी अपना मौन व्रत कतई नहीं तोड़ेंगे। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं वरन एक हद तक शर्मनाक भी है।

नया संसद भवन मोदी का ड्रीम प्रोजेक्ट रहा है। देश में जब कोविड-19 का भीषण प्रकोप था तथा देश को महामारी से लड़ने के लिये बड़ी धन राशि की आवश्यकता थी, तब इसका निर्माण किया गया था। मोदी खुद इसकी प्रगति देखने आते रहते थे। उस समय इस बात का यह कहकर विरोध हुआ था कि पुराने संसद भवन के रहते, वह भी ठीक-ठाक हालत में होने के बावजूद इस नये भवन को बनवाना एक बड़ी फिजूलखर्ची है। बाद में यह बात साफ होती चली गई कि इसका उद्देश्य पुराने भवन के साथ नत्थी देश के स्वतंत्रता संग्राम की विरासत को मिटाना है। खासकर, उस भवन पर पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जो सुखद छांव बनी हुई थी, वह मोदी को उनकी विचारधारा के कारण कड़ी धूप सी प्रतीत होती थी। इसी क्रम में उन्होंने नेहरू के शासकीय निवास तीन मूर्ति भवन को भी प्रधानमंत्रियों के संग्रहालय में बदलवा दिया। नेहरू विरोध के अलावा मोदी नये भवन का 2024 के लोकसभा चुनाव के लिये भी इस्तेमाल करना चाहते हैं। बहरहाल, इस भवन के बारे में दावा किया गया था कि इसकी सुरक्षा बड़ी पुख्ता है। विशेषकर 13 दिसम्बर, 2001 को पुराने भवन पर हुए आतंकी हमले के मद्देनज़र इसकी ज़रूरत भी थी।

इस भवन के उद्घाटन के अवसर पर बुलाये गये विशेष सत्र को छोड़ दें तो यही इसका नियमित सत्र (शीतकालीन) है, जो अब भी जारी है। पहले ही सत्र में, वह भी ठीक उसी दिन- 22 वर्षों के बाद इसकी सुरक्षा व्यवस्था की पोल कुछ निहत्थे युवाओं ने खोलकर रख दी। उनके कृत्य को कतई समर्थन नहीं मिल रहा है परन्तु इसमें कोई शक नहीं रह जाना चाहिये कि इस भवन की सजावट पर तो खूब ध्यान दिया गया है, लेकिन सुरक्षा की बुनियादी आवश्यकता पूरी तरह से नज़रंदाज़ की गई है। दो दशक पूर्व हुए हमले में तो जांबाज़ सुरक्षाकर्मियों ने आतंकवादियों को संसद भवन में घुसने तक नहीं दिया था। अबकी एक नहीं दो लोग दर्शक दीर्घा से सदन के बीचों-बीच कूद पड़ते हैं और बाकायदा एक से दूसरी बेंचों को फलांगने में भी सफल हो जाते हैं।

इनमें से एक युवक ने अपने जूते में छिपाकर लाये केन स्प्रे से पीला धुंआ भी फैलाया। यानी वे कोई हथियार भी ला सकते थे। वे अगर नहीं लाये तो इसका जवाब बाहर उनके द्वारा लगाये गये नारों में छिपा है। बताया जाता है कि उनके साथ दो लोग और थे परन्तु वे दर्शक दीर्घा से ही अफरा-तफरी का फायदा लेकर निकल गये। महत्वपूर्ण सदन के भीतर का धुंआ ही नहीं है वरन गिरफ्तारी के बाद उनके द्वारा लगाये गये नारे भी हैं, जो उनके उद्देश्य को बतलाता है। वे सामान्यजन हैं जो बेरोजगारी, मणिपुर, तानाशाही से सम्बन्धित नारे लगा रहे थे।

सवाल यह है कि इस घटना के लिये जिम्मेदार कौन है? इस कांड के ठीक एक दिन पहले केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह लगभग 75 साल पहले हुए देश के विभाजन और कश्मीर के मामले में नेहरू की गलतियां गिना रहे थे, जबकि सामने हुई घटना की जिम्मेदारी से वे बचते फिर रहे हैं। सिर्फ वे नहीं, मोदी भी। पूरी सरकार ही मुंह छिपा रही है। मोदीजी ने इस मामले पर अब तक कुछ नहीं कहा है। इसी तरह गृहमंत्री अमित शाह भी जवाबदेही निभाने में निराश कर रहे हैं। दिल्ली पुलिस उनके अधीन है और सुरक्षा का जिम्मा उनके ऊपर है। इस मामले पर जब विपक्ष के लोगों ने संसद में सवाल उठाए तो उनके जवाब देने की जगह सांसदों का मुंह जबरदस्ती बंद कराया गया है। राज्यसभा में गुरुवार को विपक्ष ने 28 नोटिस इस मुद्दे पर बहस के लिए दिए थे। इसी तरह लोकसभा में भी एक दर्जन से ज्यादा इंडिया के सांसदों ने नोटिस देकर इस पर चर्चा की मांग की थी। लेकिन दोनों सदनों में किसी भी नोटिस पर सरकार ने चर्चा नहीं होने दी। और सवाल पूछने के जुर्म में 15 सांसदों को निलंबित कर दिया।

उल्लेखनीय है कि कुछ दिन पहले तेलंगाना में मोदी की प्रचार सभा में एक लड़की टावर पर चढ़ गई थी। वह भी बेरोजगारी से त्रस्त थी। रिश्तेदार बतलाते हैं कि वे देश की मूलभूत समस्याओं से व्यथित थे। नीलम ने तो कई परीक्षाएं पास की हैं पर उसके पास नौकरी नहीं है। रोजगार हो या तानाशाही का आरोप- जवाब तो मोदी को ही देने हैं लेकिन उनके पास आत्म प्रशंसा, विपक्ष को कोसने और खुद को निरीह दर्शाने के लिये कई बातें हैं पर इन बुनियादी बातों का उनके पास कोई जवाब नहीं है। यह नया संसद भवन देशवासियों के पैसों से बना है। इसलिये देश के सुरक्षित हाथों में होने का दिन-रात दावा करने वाले पीएम और भाजपा को बतलाना होगा कि इस गम्भीर चूक का दोषी कौन हैं तथा उन्हें क्या सज़ा दी जायेगी। बाहर बेरोजगारी और तानाशाही के खिलाफ जो नारे लग रहे थे, उनके जवाब भी मोदी को ही देने हैं। वैसे उनसे इसलिये उम्मीद नहीं की जा सकती क्योंकि पिछले 10 वर्षों से वे मौन ही तो हैं।

यूजीसी और एनसीईआरटी का हिन्दू राष्ट्र शैक्षणिक कार्यक्रम

भाजपा सरकार केंद्र में अपनी सत्ता की दूसरी पारी के अंत की ओर है। करीब दस साल की इस अवधि में सरकार ने देश के लगभग सभी संस्थानों और संस्थाओं की दशा और दिशा में जो बदलाव किये हैं, वे सबके सामने हैं। ईडी, आयकर विभाग और सीबीआई ने विपक्षी पार्टियों के खिलाफ वह सब कुछ किया, जो वे कर सकती थीं। कई मौकों पर चुनाव आयोग की भूमिका भी निष्पक्ष नहीं रही है। इस बीच, यूजीसी और एनसीईआरटी शिक्षा प्रणाली और पाठ्यक्रमों में सत्ताधारी दल को सुहाने वाले परिवर्तन करने में व्यस्त रही हैं।

नयी शिक्षा नीति (एनईपी) हमारी शिक्षा व्यवस्था के ढांचे और स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाली है। सरकार द्वारा नियमित रूप से ऐसे निर्देश जारी किये जा रहे हैं जिनसे विद्यार्थियों के मनो-मस्तिष्क में हिन्दू राष्ट्रवादी विचार और सिद्धांत बिठाये जा सकें। सरकार ने सबसे पहले विद्यार्थियों के आंदोलनों और उनके प्रतिरोध को कमज़ोर करने और उनमें भागीदारी करने वालों को डराने-धमकाने का अभियान शुरू किया। इन आंदोलनों के नेताओं पर राष्ट्रद्रोही का लेबल चस्पा कर दिया गया। तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने प्रस्तावित किया कि प्रत्येक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रांगण में एक बहुत ऊंचे खम्बे पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाए। यह भी प्रस्तावित किया गया कि जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय (जेएनयू) के कैंपस में सेना का एक टैंक स्थापित किया जाए। वह इसलिए क्योंकि वहां के विद्यार्थी ऐसे मसले उठा रहे थे जो सरकार को पसंद नहीं थे।

हाल में इसी तर्ज पर कई निर्देश / आदेश जारी किये गए हैं। इनमें से एक यह है कि आरएसएस के प्रचारक और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के संस्थापक दत्ताजी दिदोलकर की जन्म शताब्दी को मनाने के लिए एक साल तक चलने वाले आयोजनों में विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। एक हिन्दू राष्ट्रवादी को राष्ट्रनायक का दर्जा देने का इस प्रयास का फोकस महाराष्ट्र के कॉलेजों पर है. क्या हिन्दू राष्ट्रवादी नेताओं को हीरो बनाने का यूजीसी का यह प्रयास उचित है? क्या हमें उन नायकों को याद नहीं करना चाहिए जो भारतीय राष्ट्रवाद के हामी थे और जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ संग्राम का नेतृत्व किया था? आरएसएस से जुड़े दिदोलकर न तो स्वाधीनता संग्राम का हिस्सा थे और ना ही वे भारतीय संविधान के मूल्यों में आस्था रखते थे।

यूजीसी ने एक और सर्कुलर जारी कर कहा है कि कॉलेजों में 'सेल्फी पॉइंट' बनाए जाने चाहिए जिनकी पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री मोदी का चित्र हो। कहने की ज़रूरत नहीं कि यह 2024 के आमचुनाव की तैयारी है। किसी भी प्रजातान्त्रिक देश में ऐसा नहीं होना चाहिए। क्या सरकार को किसी भी एक पार्टी के शीर्ष नेता का प्रचार करना चाहिए? क्या यह प्रजातान्त्रिक मानकों का उल्लंघन नहीं है?

राम पुनियानी

> **नयी शिक्षा नीति (एनईपी) हमारी शिक्षा व्यवस्था के ढांचे और स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाली है। सरकार द्वारा नियमित रूप से ऐसे निर्देश जारी किये जा रहे हैं जिनसे विद्यार्थियों के मनो-मस्तिष्क में हिन्दू राष्ट्रवादी विचार और सिद्धांत बिठाये जा सकें। सरकार ने सबसे पहले विद्यार्थियों के आंदोलनों और उनके प्रतिरोध को कमज़ोर करने और उनमें भागीदारी करने वालों को डराने-धमकाने का अभियान शुरू किया। इन आंदोलनों के नेताओं पर राष्ट्रद्रोही का लेबल चस्पा कर दिया गया।**

प्रजातान्त्रिक और संवैधानिक मूल्यों का इस तरह का खुल्लमखुल्ला मखौल क्या सरकार द्वारा अपनी शक्तियों के घोर दुरुपयोग के श्रेणी में नहीं आता?

इससे भी एक कदम आगे बढ़कर, यह निर्देश जारी किया गया है कि कक्षा सात से लेकर कक्षा बारह तक के विद्यार्थियों को इतिहास के पाठ्यक्रम के भाग के रूप में 'रामायण' और 'महाभारत' पढ़ाया जाना चाहिए (टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 22 नवम्बर, 2023)। एनसीआरटी के एक्सपर्ट पैनल के अनुसार, इससे देश के लोगों में देशभक्ति और स्वाभिमान के भाव जागृत होंगे और वे अपने देश पर गर्व करना सीखेंगे! भारत के ये दो महान महाकाव्य निश्चित तौर पर हमारे पौराणिक साहित्य का हिस्सा हैं। वे उस समय के सामाजिक मूल्यों और मानकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिस समय वे लिखे गए थे। हम इन महाकाव्यों से उस समय के समाज के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं।

रामायण भारत में ही नहीं, वरन श्रीलंका, थाईलैंड, बाली और सुमात्रा सहित एशिया के कई देशों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। रामायण के कई अलग-अलग संस्करण हैं। रामायण के मूल लेखक वाल्मीकि थे। गोस्वामी तुलसीदास ने जनभाषा अवधी में उसका अनुवाद कर उसे आम जनता तक पहुंचाया। सोलहवीं सदी से रामायण उत्तर भारत की जन संस्कृति का हिस्सा बनी हुई है। भगवान राम की वह कथा जो हिन्दू राष्ट्रवादियों को प्रिय है, इस कथा के कई अलग-अलग पाठों में से एक है। पौला रिचमेन की पुस्तक 'मेनी रामायन्स' (ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस), भगवान राम की कहानी के अलग-अलग संस्करणों के बारे में बताती है। इसी तर्ज पर ए.के. रामानुजन ने एक लेख लिखा था जिसका शीर्षक था-'श्री हंड्रेड रामायंस : फाइव एग्जामपिल्स एंड श्री थॉट्स ऑन ट्रांसलेशन'। यह अत्यंत अर्थपूर्ण लेख दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का हिस्सा था। मगर बाद में एबीवीपी के विरोध के कारण इसे हटा दिया गया।

हिन्दू राष्ट्रवादी रामकथा के एक विशिष्ट संस्करण को बढ़ावा देना चाहते हैं। रामानुजन बताते हैं कि इस कथा के कई स्वरूप है- जैन और बौद्ध स्वरूप हैं, और महिलाओं का संस्करण भी है, जिसकी लेखिका आंध्रप्रदेश की रंगनायकम्मा हैं। आदिवासियों की अपनी रामकथा है। अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू धर्म की पहेलियां' में हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है कि राम ने शम्बूक की केवल इसलिए हत्या कर दी थी क्योंकि वह शूद्र होते हुए भी तपस्या कर रहा था। इसी तरह, राम ने छुपकर और पीछे से वार कर बाली को मार दिया था। बाली कुछ पिछड़ी जातियां ही श्रद्धा के पात्र हैं। कहा जाता है-'इडा पीडा जावो, बळीचे राज्य येवो' (हमारे दु:ख और तकलीफें खत्म हों और बाली का राज फिर से कायम हो)। अम्बेडकर राम की इसलिए भी कड़े शब्दों में निंदा करते हैं क्योंकि राम ने मात्र इसलिए सीता को जंगल में छोड़ दिया था क्योंकि उन्हें अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह था। पेरियार भी द्रविड़ों पर आर्य संस्कृति लादने के लिए राम की आलोचना करते हैं। ठीक-ठीक क्या हुआ था यह साफ़ नहीं है मगर यह महाकाव्य हमें उस काल के बारे में कई महत्वपूर्ण बातें बताता है।

उसी तरह महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित विश्व की सबसे लम्बी कविता 'महाभारत' भी हमें उस युग में झांकने का मौका देती हैं। ये दोनों ग्रन्थ ज्ञान के स्त्रोत हैं। मगर उन्हें इतिहास के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल करना एक अलग मसला है, जिसका सम्बन्ध हिन्दू राष्ट्रवाद से ज्यादा और विद्यार्थियों को इतिहास के सच से परिचित करवाना कम है।

यह भी कहा गया है कि पाठ्यपुस्तकों में इंडिया की जगह भारत शब्द का इस्तेमाल किया जाए। ऐसा बताया जा रहा है कि चूंकि हमारे देश को इंडिया नाम अंग्रेजों ने दिया था अत: वह गुलामी का प्रतीक है। इस तथ्य को जानबूझकर छुपाया जा रहा है कि हमारे देश के लिए इंडिया से मिलते-जुलते शब्दों का प्रयोग अंग्रेजों के भारत आने से बहुत पहले से हो रहा है। ईसा पूर्व 303 में मेगस्थनीज ने इस देश को इंडिका बताया था। सिन्धु नदी के नाम से जुड़े हुए शब्द भी लम्बे समय से इस्तेमाल हो रहे हैं। हमारे संविधान में प्रयुक्त वाक्यांश 'भारत देट इज़ इंडिया' का कोई जवाब नहीं है। मगर हिन्दू राष्ट्रवादी एजेंडा के चलते 'इंडिया' शब्द उन्हें असहज करता है।

वे भारत के इतिहास को नए सिरे से कालखंडों में विभाजित करना चाहते हैं। इतिहास के सबसे पुराने कालखंड, जिसे अंग्रेज़ हिन्दूकाल कहते हैं, को वे 'क्लासिक' (श्रेष्ठ या उत्कृष्ट) काल कहना चाहते हैं। उद्देश्य है इस कालखंड में प्रचलित मूल्यों को हमारे समाज के लिए आदर्श निरुपित करना। ये मूल्य, जो 'मनुस्मृति' में वर्णित हैं, वही हैं जिनके विरुद्ध अम्बेडकर ने विद्रोह का झंडा उठाया था और 'मनुस्मृति' का दहन किया था।

आज यूजीसी और एनसीईआरटी का मार्गदर्शक केवल और केवल हिन्दू राष्ट्रवादी एजेंडा है। भारतीय संविधान के मूल्यों से उन्हें कोई लेनादेना नहीं है।

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया)

कॉप 28 ने भले ही टकराव को टाल दिया, पर संघर्ष के बिंदु अनसुलझे रहे

■ **के रवीन्द्रन**

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कॉप 28 दुबई वैसे ही आगे बढ़ा है जैसी की उम्मीद थी। चूंकि सदस्य देश इस बात से जूझ रहे थे कि जीवाश्म ईंधन के सबसे संवेदनशील मुद्दे को कैसे औपचारिक रूप दिया जाए और उस पर कैसे ध्यान दिया जाए, इसलिए आम सहमति बनाने की कोशिश करने के लिए जलवायु शिखर सम्मेलन को निर्धारित सीमा से आगे बढ़ाना पड़ा। नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार कॉप 28 ने अंतिम घोषणा के रूप में एक प्रस्तावित पाठ जारी किया है, जो जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई के हिस्से के रूप में देशों से जीवाश्म ईंधन से दूर जाने का आह्वान करेगा।

यह कुछ सबसे मुखर राज्यों की सफलता का प्रतीक है जिन्होंने जीवाश्म युग को समाप्त करने के संकल्प को इंगित करने के लिए मजबूत भाषा पर जोर दिया, एक ऐसा लक्ष्य जिसका तेल और कोयला उत्पादक देशों, विशेष रूप से सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात द्वारा जोरदार विरोध किया जा रहा था। यह टकराव शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता में ही अंतर्निहित था, उस कुर्सी पर आबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी (एडीएनओसी) के सीईओ बैठे थे।

शिखर सम्मेलन के अध्यक्ष सुल्तान अल जबेर की एक टिप्पणी 'कोई विज्ञान नहीं है' जो यह दर्शाता है कि वैश्विक तापन को 1.5 एष्ट तक सीमित करने के लिए जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से बंद करने की आवश्यकता है, जिससे भौंहें तन गईं। वह इस हद तक दावा करने लगे कि जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से ख़त्म करना टिकाऊ नहीं होगा। दरअसल, मुख्य शिखर सम्मेलन से इतर एक महिला-उन्मुख कार्यक्रम में उनके और प्रतिनिधियों के बीच बातचीत हुई, जहां उन्होंने कहा कि उंगली उठाने का कोई मतलब नहीं है।

ओपेक सदस्य उत्सर्जन को पकड़ने और संग्रहीत करने की प्रौद्योगिकियों के माध्यम से जीवाश्म ईंधन के बजाय उत्सर्जन को लक्षित करने के विचार को बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन समस्या यह है कि कार्बन कैप्चर करना अत्यधिक महंगा है जिससे ध्यान वित्तीय संसाधनों पर केंद्रित हो जाता है। इसका मतलब होगा घोषणा की भाषा में फेज़ आउट को फेज़ डाउन से बदलना। लेकिन अधिकांश देशों ने चरणबद्ध तरीके से इसे ख़त्म करना पसंद किया।

भारत ने कथित तौर पर कोयले को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने से संबंधित मुद्दों को उठाया, जिसके बारे में उसने कहा कि यह निकट भविष्य में किसी भी समय संभव नहीं होगा। नई दिल्ली चाहती थी कि चरणबद्ध तरीके से अलग-अलग लक्ष्य निर्धारित किये जायें। विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए अधिक समय और वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है क्योंकि ऐसे लक्ष्यों और विकासशील देशों के लोगों की आकांक्षाओं के बीच संघर्ष होता है, जो कार्बन पदचिह्न में योगदान देता है।

वैश्विक स्तर पर कोयला पिछले 30 वर्षों से बिजली क्षेत्र पर हावी रहा है, और रिस्टैड एनर्जी के अनुसार 2024 में ईंधन की गिरावट की शुरुआत होगी क्योंकि सौर और पवन उत्पादन की लोकप्रियता बढ़ेगी। नवीकरणीय ऊर्जा से नयी बिजली आपूर्ति से बिजली की मांग में अधिक इजाफा होने की उम्मीद है, जिससे अगले साल से कोयले का विस्थापन शुरू हो जायेगा और आने वाले वर्षों में इसमें बढ़ोतरी होगी। परिणामस्वरूप, कोयले से चलने वाली बिजली 2024 में मामूली रूप से गिरकर 10,332 टेरावाट घंटे (टीडब्ल्यूएच) रह जायेगी, जो 2023 से 41 टीडब्ल्यूएच कम है। यह समुद्र में एक सापेक्ष गिरावट है, लेकिन यह आने वाली चीजों का संकेत है क्योंकि नवीकरणीय ऊर्जा अपने विकास पथ को जारी रखे हुए है।

सख्त उत्सर्जन नीतियों और किफायती प्राकृतिक गैस आपूर्ति की प्रचुर उपलब्धता के संयोजन के कारण हाल के वर्षों में यूरोप और उत्तरी अमेरिका में कोयला क्षमता और समग्र उपयोग में निवेश में गिरावट आई है। फिर भी, एशिया, मुख्य रूप से चीन में स्थायी विकास, ने वैश्विक कोयला खपत को बढ़ाये रखा है। ऐसी स्थिति में कम कार्बन वाले बिजली स्रोतों के तेजी से विकास से कोयला धीरे-धीरे विस्थापित हो जायेगा, जिसस एक स्वच्छ, हल्की प्रणाली की शुरुआत होगी, जबकि एशिया में नयी क्षमता में निवेश अगले कुछ वर्षों में जारी रहेगा।

> **वैश्विक स्तर पर कोयला पिछले 30 वर्षों से बिजली क्षेत्र पर हावी रहा है, और रिस्टैड एनर्जी के अनुसार 2024 में ईंधन की गिरावट की शुरुआत होगी क्योंकि सौर और पवन उत्पादन की लोकप्रियता बढ़ेगी। नवीकरणीय ऊर्जा से नयी बिजली आपूर्ति से बिजली की मांग में अधिक इजाफा होने की उम्मीद है, जिससे अगले साल से कोयले का विस्थापन शुरू हो जायेगा और आने वाले वर्षों में इसमें बढ़ोतरी होगी।**

प्रचुर कोयला भंडार और आर्थिक विकास को समर्थन देने के लिए ऊर्जा आपूर्ति को शीघ्रता से बढ़ाने की आवश्यकता के कारण, एशिया दुनिया की तीन-चौथाई से अधिक कोयला बिजली उत्पादन के लिए जिम्मेदार है। क्षेत्र में कोयला उत्पादन क्षमता लगातार बढ़ रही है, लेकिन पर्यावरण संबंधी चिंताओं के बीच नयी परियोजनाओं की गति धीमी हो रही है। चीन, जर्मनी और अमेरिका जैसे दुनिया भर के देश जो कोयले पर अत्यधिक निर्भर हैं, कोयले को आसानी से विस्थापित करने के लिए काफी तेजी से और अनुकूल अर्थव्यवस्था के साथ नवीकरणीय क्षमता विकसित कर रहे हैं।

यूरोप और उत्तरी अमेरिका व्यवस्थित रूप से कोयला उत्पादन को प्राकृतिक गैस और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे स्वच्छ स्रोतों से बदल रहे हैं, जिससे 1990 के बाद से कोयला बिजली क्षमता 200 गीगावॉट से अधिक कम हो गई है। यूरोप की गिरावट मुख्य रूप से सख्त उत्सर्जन नीतियों से प्रेरित है, जबकि उत्तरी अमेरिका ने मुख्य रूप से कोयला उत्पादन को गैस से बदल दिया है। प्रचुर क्षेत्रीय उत्पादन के कारण बिजली की कीमतें कम हो गई हैं।

एशिया ने पिछले पांच वर्षों में प्रत्येक में 40 गीगावॉट से अधिक नयी कोयला क्षमता जोड़ी है और अगले वर्ष 52 गीगावॉट जुड़ने की उम्मीद है। दूसरे शब्दों में, एशिया 2024 में अर्जेंटीना की कुल स्थापित क्षमता से अधिक कोयला क्षमता जोड़ेगा। इस नयी क्षमता का अधिकांश हिस्सा चीन में है, इसके बाद भारत और इंडोनेशिया का स्थान है। यह वृद्धि 2027 तक जारी रहने की उम्मीद है, हालांकि धीमी गति से, जिसके बाद कोयला बिजली संयंत्रों में गिरावट शुरू हो जायेगी।

पावन प्रसंग

अनमोल हैं पुस्तकें

पुस्तकें मनुष्य की सच्ची मित्र हैं, हितैषी हैं, जिनको पढ़ने से अल्पकाल में ही हमारा पीढ़ियों के ज्ञानभंडार से परिचय हो जाता है। यदि इस पर चिंतन-मनन करते हुए उनके सार को हृदयंगम किया जाए तो व्यक्ति के जीवन को बदलते देर नहीं लगती। अच्छी पुस्तकें जीवन को हर स्तर पर प्रकाशित व समृद्ध करती है और जीवन को उत्कर्ष आनंद एवं पूर्णता की राह पर आगे बढ़ाती हैं। स्वयं के द्वारा ज्ञान के अर्जन की एक सीमा है। पुस्तकें इस सीमा का विस्तार करती हैं। जब हम पुस्तकों को पढ़ते हैं तो देश ही नहीं, बल्किविश्व के श्रेष्ठ विचारकों, महापुरुषों एवं ज्ञानी जनों के जीवन का निचोड़ हमारी पहुंच में होता है। पीढ़ियों का ज्ञान हमें सहज रूप में उपलब्ध होता है। आवश्यकता इस ज्ञान के लिए अपने भीतर एक सच्ची अभीप्सा एवं तीव्र पिपासा जगाने की है तथा इसको ग्रहण एवं धारण करने की है। पुस्तकों का अध्ययन हमें कई स्तर पर समृद्ध करता है। इनको पढ़ने से हमारी बुद्धि के दरवाजे खुलते हैं व सोचने का दायरा भी विस्तृत होता है। साथ ही अपने समाज, संस्कृति, इतिहास, भूगोल आदि के साथ दूसरी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के प्रति समझ विकसित होती है। पूरे विश्व, प्रकृति एवं सृष्टि के प्रति संवेदनशीलता का विकास होता है और सही मायने में हम अपने देश, समाज व राष्ट्र के एक अच्छे नागरिक बनते हैं तथा समूचे विश्व को समझने की कुवत हममें पैदा होती है। बिना पुस्तकों को पढ़े हम कुएं के मेंढक की तरह अविकसित ही रह जाते हैं और अपने पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों से ग्रस्त एक पिछड़ा एवं संकीर्ण जीवन जी रहे होते हैं।

पुस्तकें हमें सीमित दायरे से बाहर निकालती हैं। निस्संदेह इसके लिए देश एवं विश्व भर के श्रेष्ठ साहित्य से परिचय एवं इनका चयन आवश्यक हो जाता है जो कि आज वैश्वीकरण के दौर में कठिन नहीं है। समाज एवं समूह में सार्थक चर्चा इसी आधार पर संभव होती है और हमारी लोक- व्यवहार की क्षमता में वृद्धि होती है। ज्ञानीजनों की मंडली में हम कुछ सार्थक संवाद करने व योगदान दे पाने की स्थिति में होते हैं। इसके साथ हम समाज के सहज सम्मान के अधिकारी बनते हैं और इन सबके साथ पुस्तकें हमारे आत्मविश्वास को भी बढ़ाती हैं। कठिन समय में अच्छी पुस्तकें हमें सच्चे मित्र की तरह सांत्वना देती हैं, ढाढस बंधाती हैं, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करती है।

व्यक्ति की रुचि व अनुभवों से जुड़ी पुस्तकें जीवन के किसी कठिन पड़ाव पर सटीक समाधान व सही दिशासूचक के रूप में प्राय: निर्णायक भूमिका निभाती देखी जाती हैं। निस्संदेह ये हमारे तनाव को कम करती हैं, अवसाद से उबारती हैं और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करती हैं। अच्छी पुस्तकें चिकित्सक की भूमिका में हमारा उपचार करती हैं। शारीरिक, मानसिक ही नहीं, बल्कि हमारा आत्मिक स्वास्थ्य भी श्रेष्ठ पुस्तकों के माध्यम से पुष्ट होता है।

जब हम मानवीय चेतना का मर्म उद्घाटित करने वाले साहित्य का परायण करते हैं तो हम गहनतम स्तर पर स्वयं की संभावनाओं के साथ इसकी व्याधियों से परिचित होते हैं व इनके निदान का प्रयास करते हैं। इसके साथ हमारे समग्र विकास का मार्ग भी प्रशस्त होता है। अध्ययन से हमारी स्मरणशक्ति बढ़ती है। विश्लेष्णात्मक-विवेचनात्मक सोचने की क्षमता सशक्त होती है। पढ़ने की आदत से व्यक्ति की क्षमता सशक्त होती है। पढ़ने की आदत से व्यक्ति की एकाग्रता और लक्ष्य केंद्रित होने की क्षमता मं वृद्धि होती है। निश्चित रूप से इससे व्यक्ति का मानसिक एवं बौद्धिक ह्रास रुकता है और मानसिक क्षमताएं मजबूत होती हैं।

शोध के आधार पर भी स्पष्ट हुआ है कि पुस्तकों के अध्ययन से मन-मस्तिष्क युवा, स्वस्थ व निरोग रहता है। यहां तक कि भूलने से जुड़े अल्जाइमर जैसे रोग को दूर रखने में यह सहायक सिद्ध होता है। अध्ययन के साथ हमारा शब्द भंडार भी समृद्ध होता है, जो हमारे लेखकीष कौशल में सहायक रहता है। लिखने के लिए दिए गए विचारों की आवश्यकता होती है, नए शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। पुस्तकों का अध्ययन यह सब उपलब्ध करा देता है।

युग निर्माण योजना

आपके पत्र

योजनाओं से बदल रही है महिलाओं की जिंदगी

देश भर में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए केंद्र से लेकर सभी राज्य सरकार अपने- अपने स्तर पर विभिन्न योजनाएं संचालित कर रही है। महिला आरक्षण से संबंधित विधेयक का सर्वसम्मति से संसद से पारित होना इस बात का सबूत है कि इस मुद्दे पर देश की सभी राजनीतिक दल पार्टी लाइन से ऊपर उठ कर एकमत हैं। महिला सशक्तिकरण की दिशा में बिहार का काम सभी राज्यों के लिए एक नजीर बन रहा है। पिछले दो दशकों में बिहार की आधी आबादी की जिंदगी में जो असाधारण बदलाव आए हैं, वे काबिले-तारीफ है। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने से लेकर त्रिस्तरीय पंचायतीराज संस्थाओं एवं नौकरियों में महिलाओं को 33 फीसदी से लेकर 50 फीसदी तक आरक्षण देकर आधी आबादी को राष्ट्र-निर्माण में भागीदार बनाने की नीतीश सरकार की पहल उल्लेखनीय है. सरकार के इस पहल का नतीजा है कि आज घर की दहलीज में कैद रहने वाली किशोरियां और महिलाएं आज घर से बाहर निकल कर विभिन्न सरकारी कार्यालयों, गैर सरकारी संगठनों, पंचायती राज संस्थाओं में बखूबी कामकाज संभाल रही हैं। स्कूलों से लेकर कॉलेजों में लड़कियों की अच्छी-खासी संख्या यह दर्शाती है कि राज्य में महिला साक्षरता की दर बढ़ रही है और यह सब नि:संदेह सरकारी पहल एवं कई योजनाओं के संचालन से ही संभव हुआ है।

मुख्यमंत्री साइकिल एवं पोशाक योजना की जब शुरुआत हुई थी, तब बिहार सरकार की इस पहल की देश-विदेश की मीडिया में खूब चर्चा हुई थी. इस पर कई संस्थानों द्वारा शोध कार्य भी किये गए. कल तक जिस सरकारी स्कूल का कैंपस छात्र-छात्राओं से वीरान रहता था, वह अचानक से गुलजार रहने लगा है। जिन ग्रामीण क्षेत्रों और समुदायों में बालिका शिक्षा के प्रति कोई रुचि नहीं थी, वही क्षेत्र और समुदाय आज उत्साह के साथ अपनी लड़कियों को स्कूल से लेकर कॉलेज तक भेज रहा है। तमाम तरह के नारों और वायदों के बाद भी आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े जिन समुदायों में बालिका शिक्षा का ग्राफ नीचे की ओर जा रहा था, आज वहां परिस्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। नये-नये पोशाक एवं नयी साइकिल पर सवार होकर दर्जनों लड़कियां जब एक साथ गांव की पगडंडियों व टूटी-फूटी कच्ची सड़कों से स्कूल के लिए निकलती हैं, तो नजारा देखने लायक होता है। इस योजना ने सुदूर ग्रामीण इलाके में रहने वाली किशोरियों के सपने को जैसे पंख लगा दिए हैं। नयी-नयी साइकिल स्कूल-ट्यूशन जाने का माध्यम तो बनी ही, यह घर के कामकाज जैसे- मवेशियों का चारा काट कर लाना, गेहूं-मक्के की बोरी को मिल तक पहुंचाने में भी मददगार साबित हुई है।

मुख्यमंत्री कन्या साइकिल योजना के लागू होने के बाद पहली बार इसका लाभ उठाने वाली अनेकों छात्राएं पढ़-लिख कर सशक्त हो चुकी हैं। उनमें से कुछ आज बिहार पुलिस में नौकरी भी कर रही हैं, तो कई सरकारी स्कूलों की शिक्षिकाएं बन गई हैं। आधी आबादी की जिंदगी में यह बदलाव न केवल महिला सशक्तिकरण की बेहतरीन मिसाल है बल्कि यह अन्य राज्यों के लिए भी नज़ीर बन चुका है। बेटी को सशक्त देख कर आज ग्रामीण क्षेत्रों के मां-बाप में भी आत्मविश्वास जगा है। उन्हें पहली बार एहसास हुआ है कि बेटी बोझ नहीं सच में लक्ष्मी होती हैं। आज घर घर में बेटियां लाडली बन चुकी है। इन योजनाओं ने माता-पिता के उस सोच को भी बदल दिया है जहां वह लड़की की शिक्षा पर पैसा खर्च करने से अधिक उसके दहेज़ का इंतज़ाम करने के फिक्रमंद होते थे।

रिंकू कुमारी, मुजफ्फरपुर बिहार

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770

ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

देश विदेश

कंबोडिया ने शांति सैनिकों का नया जत्था सूडान भेजा

नोम पेन्ह। कंबोडिया ने गुरुवार को युद्धग्रस्त अफ्रीकी देश दक्षिण सूडान में संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन में शामिल होने के लिए 34 महिलाओं सहित 73 शांति सैनिकों का एक नया जत्था भेजा। नेशनल सेंटर फॉर पीसकीपिंग फोर्सेज के महानिदेशक जनरल सेम सोवानी ने कहा कि यह 12वीं बार है, जो कि देश ने 11वें बैच की जगह लेने के लिए अपने नीले हेलमेट वाले सैनिकों को दक्षिण सूडान भेजा है, जिसका एक साल का मिशन समाप्त हो गया था।

हमास नेता गाजा युद्धविराम के लिए इजरायल के साथ वार्ता को तैयार

गाजा, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। हमास नेता इस्माइल हानियेह ने कहा है कि गाजा पर शासन करने वाला फिलिस्तीनी गुट इजरायल के साथ किसी भी व्यवस्था या पहल पर वार्ता करने के लिए तैयार है ताकि युद्धविराम हो सके।

शिन्हुआ की गुरुवार को जारी रिपोर्ट के मुताबिक हमास के राजनीतिक ब्यूरो के प्रमुख हनीयेह ने हमास से संबद्ध अल-अक्सा टीवी पर प्रसारित भाषण में कहा, हम किसी भी व्यवस्था या पहल पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं जिससे इजरायल के हमले रुक सके। हमास के बगैर गाजा के भविष्य के संबंध में व्यवस्था सफल नहीं होगी। श्री हनियेह ने कहा कि हमास

■ युद्धविराम की मांग करने वाले संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव का स्वागत किया

ने गाजा में तत्काल युद्धविराम की मांग करने वाले संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव का स्वागत किया है और गाजा संघर्ष को समाप्त करने के लिए सऊदी अरब तथा संयुक्त अरब-इस्लामिक असाधारण शिखर सम्मेलन द्वारा सौंपी गई मंत्रिस्तरीय समिति के प्रयासों की भी सराहना की। उन्होंने हमास की ओर से युद्ध के बाद की किसी भी राजनीतिक व्यवस्था को अस्वीकार करने की पुष्टि की, जिसमें हमास और अन्य फिलिस्तीनी गुटों को शामिल नहीं हैं। उन्होंन साथ ही गाजा पर इजरायली हमलों को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ाने का भी अपील की है। इससे पहले इजरायली मीडिया ने कई हमास नेताओं के कतर से अज्ञात गंतव्यों की ओर प्रस्थान की रिपोर्ट दी थी।

इजरायल ने वेस्ट बैंक पर किया हमला, दो की मौत

गाजा। इजरायल ने वेस्ट बैंक के जेनिन शहर पर ड्रोन हमले किए, जिसमें फिलिस्तीन के करीब दो लोगों की मौत हो गयी और 10 अन्य घायल हो गए। फिलिस्तीन न्यूज एजेंसी वफा ने गुरुवार को जारी रिपोर्ट में यह जानकारी दी। एजेंसी ने बताया कि मारे गए लोगों में एक नाबालिग भी शामिल है, जबकि घायलों में से तीन लोगों को गंभीर चोटें आई हैं। द टाइम्स ऑफ इज़राइल अखबार ने बताया कि इजरायली सेना जेनिन शरणार्थी शिविर में बड़े पैमाने पर ऑपरेशन कर रही है, जिसमें इजरायली बलों ने लगभग 400 इमारतों को स्कैन किया, सैकड़ों फिलिस्तीनियों को हिरासत में लिया, साथ ही हथियार और अन्य उपकरण भी जब्त किए। उल्लेखनीय है कि सात अक्टूबर को, फिलिस्तीनी आंदोलन हमास ने गाजा पट्टी से इज़रायल के खिलाफ बड़े पैमाने पर रॉकेट हमला किया और सीमा का उल्लंघन किया, जिसमें 1,200 से अधिक लोग मारे गए और लगभग 240 अन्य का अपहरण कर लिया गया। इज़रायल ने जवाबी हमले शुरू किए, गाजा की पूर्ण नाकाबंदी का आदेश दिया और हमास लड़ाकों को खत्म करने और बंधकों को बचाने के घोषित लक्ष्य के साथ फिलिस्तीनी इलाके में जमीनी घुसपैठ शुरू की।

अमेरिकी होमलैंड सुरक्षा विभाग ने की गाजा संघर्ष से निपटने के तरीकों की निंदा की

वाशिंगटन, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। अमेरिकी होमलैंड सुरक्षा विभाग (डीएचएस) के सौ से अधिक कर्मचारियों ने गृह मंत्री एलेजांद्रो मयोरकास को एक खुले पत्र में गाजा पट्टी में संघर्ष से निपटने के विभाग के तौर-तरीकों की निंदा की है। अल जजीरा ने पत्र का हवाला देते हुए गुरुवार को यह जानकारी दी। पत्र में सौ से अधिक कर्मचारियों के हस्ताक्षर हैं।

इससे पहले 22 नवंबर को लिखे गए पत्र में डीएचएस और अमेरिकी सीमा शुल्क और सीमा सुरक्षा, संघीय आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी, आव्रजन तथा सीमा शुल्क प्रवर्तन एवं नागरिकता एवं आव्रजन सेवाएं शामिल 139 स्टाफ कर्मियों ने निराशा व्यक्त करते हुए गाजा पट्टी में संघर्ष से निपटने के तौर-तरीकों की निंदा की। रिपोर्ट में कहा गया है कि गाजा में 18,000 से अधिक मारे जाने वाले फिलिस्तीनियों के प्रति शोक और संवेदना के भाव विभाग के संदेश में स्पष्ट तौर पर नहीं दिखाई दिए हैं। प्रसारक ने पत्र के हवाले से कहा, गाजा में गंभीर मानवीय संकट और वेस्ट बैंक की ऐसी विकट परिस्थितियां हैं जिन पर विभाग आम तौर पर विभिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया देगा। फिर भी डीएचएस नेतृत्व ने नागरिक, शरणार्थी शिविरों, अस्पतालों और एम्बुलेंसों पर बमबारी पर अपनी आंखें मूंदे हुए है। रिपोर्ट में पत्र का हवाला देते हुए स्टाफ सदस्य विभाग से 'स्थिति का निष्पक्ष और संतुलित प्रतिनिधित्व प्रदान करने तथा पेशेवर नतीजों के भय के बिना सम्मानजनक अभिव्यक्ति की अनुमति देने' का आह्वान करते हैं। गौरतलब है कि सात अक्टूबर को फिलिस्तीनी इस्लामिस्ट चरमपंथी समूह हमास ने गाजा पट्टी से इज़रायल पर बड़े पैमाने पर रॉकेट हमला किया और सीमा का उल्लंघन किया, जिसमें 1,200 से अधिक लोग मारे गए और लगभग 240 अन्य का अपहरण कर लिया गया था। इसके बाद इजरायल ने जवाबी हमले शुरू किए, गाजा की पूर्ण नाकाबंदी का आदेश दिया और हमास लड़ाकों को खात्म करने तथा बंधकों को बचाने के घोषणा के साथ फिलिस्तीनी इलाके में इजरायल सुरक्षा बलों ने जमीनी घुसपैठ शुरू की।

सुडोकू 6406

3	9	8						
	4	6	9					
		2		8				
5			7			4		8
		3	2		4	1		
4		1			8			7
				7		3		
					3	9	5	
						7	4	2

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : शुक्रवार 15 दिसम्बर, 2023 अगहन शुक्ल पक्ष 3

राशिफल

मेष - आज मन व्याकुल रहेगा और शरीर में आलस्य छाया रहेगा। स्वास्थ्य कुछ नरम-गरम हो सकता है। काम में सफलता देर से मिलेगी। विरोधियों के साथ वाद-विवाद टालें। दोपहर के बाद परिस्थिति में सुधार आएगा।

वृषभ - सरकार विरोधी काम और एक्टिविटी से दूर रहने की सलाह आपको दी जाती है। नए काम की शुरुआत ना करें। स्वास्थ्य भी बिगड़ सकता है। मन में किसी बात की चिंता रह सकती है।

मिथुन - आज का दिन सुख और शांतिपूर्वक गुजार सकेंगे। दैनिक कामों में कुछ ज्यादा ही व्यस्त रह सकते हैं। मन को प्रसन्न रखने के लिए आप मनोरंजन का सहारा लेंगे। मित्रों के साथ बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कर्क - व्यवसाय स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। मायके से अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। पारिवारिक वातावरण भी अनुकूल रहेगा। विरोधियों को लाभ प्राप्त नहीं हो पाएगा। शारीरिक और मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे।

सिंह - प्रणय प्रसंग के लिए आज का दिन अनुकूल है। फिर भी गुस्से पर संयम रखें। पेट से संबंधित रोगों से कोई कष्ट हो सकता है। दोपहर के बाद परिवार में आनंद और उल्लास का वातावरण रहेगा।

कन्या - आज शारीरिक ताजगी का आपमें अभाव रहेगा। किसी बात की चिंता से काम में मन नहीं लगेगा। धनहानि होने की आशंका है। क्रोध पर संयम रखें। काम में सफलता नहीं मिलने से निराशा हो सकती है।

तुला - नए काम की शुरुआत करने के लिए दिन अच्छा है। प्रिय व्यक्ति के साथ हुई मुलाकात आनंददायी रहेगी। भाग्यवृद्धि का अवसर मिलेगा। सामाजिक रूप से मान-सम्मान प्राप्त होगा।

वृश्चिक - निर्धारित काम न होने के कारण हताशा का अनुभव होगा। किसी भी महत्वपूर्ण काम का डिसीजन आज ना लें। पारिवारिक वातावरण में क्लेश रहेगा। दोपहर के बाद परिजनों तथा भाई-बहनों के साथ समय आनंदपूर्वक गुजार सकेंगे।

धनु - आज आपको आर्थिक लाभ मिलने के संकेत हैं। किसी स्नेहीजन के घर मांगलिक प्रसंग में उपस्थित रहना होगा। किसी मंदिर या धार्मिक जगह पर जाना हो सकता है। दांपत्यजीवन में सुख और आनंद मिलेगा।

मकर - कोर्ट कचहरी के मामलों से आज दूर रहें। मन में किसी बात को लेकर आज चिंता रह सकती है। आपके नकारात्मक विचार काम पर सीधा प्रभाव डालेंगे। वाणी पर संयम रखें। दुर्घटना का भय बना रहेगा। दोपहर के बाद स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन में प्रसन्नता छाई रहेगी।

कुंभ - आज के दिन की शुरुआत लाभदायी है। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में आप प्रगति करेंगे। किसी नए व्यक्ति से रिश्ता बन सकता है। दोपहर के बाद स्वास्थ्य कुछ बिगड़ेगा। परिवार में मनदु:ख होने से घर का वातावरण दूषित होगा। धन का खर्च अधिक होगा। अदालती कामों से संभलकर चलें। स्वभाव में उग्रता और क्रोध रह सकता है।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

पाकिस्तान के पांच जिलों में पाए गए पोलियो वायरस

इस्लामाबाद, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पांच जिलों के पर्यावरण नमूनों में पोलियो वायरस पाया गया है। देश के राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा विनियमन और समन्वय मंत्रालय ने यह जानकारी दी है। मंत्रालय ने बुधवार को एक बयान में कहा कि यह वायरस दक्षिण पश्चिम बलूचिस्तान प्रांत के दो जिलों के तीन नमूनों, उत्तर पश्चिम खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के दो जिलों के दो नमूनों और दक्षिणी बंदरगाह शहर कराची के एक नमूने में पाया गया। मंत्रालय ने कहा कि पोलियो कार्यक्रम की निगरानी प्रणाली बहुत मजबूत है।देश पोलियो उन्मूलन के लिए प्रयासरत है। इस संबंध में पोलियो के उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में एक एकीकृत रणनीति तैयार की गई है।

मंत्रालय ने रेखांकित किया कि माता-पिता को प्रत्येक पोलियो टीकाकरण अभियान के दौरान अपने बच्चों को पोलियो वैक्सीन अवश्य देनी चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अफ्रीका को पोलियो वायरस से मुक्त किए जाने के बाद अब केवल पाकिस्तान और अफगानिस्तान ही ऐसे देश बचे हैं जहां अभी तक पोलियो वायरस मौजूद है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि इस वर्ष पाकिस्तान में पोलियो के छह मामले सामने आए।

जापान में फंड घोटाले को लेकर तीन मंत्रियों ने दिया इस्तीफा

टोक्यो, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। जापान में राजनीतिक फंड घोटाले को लेकर सत्तारुढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के तीन मंत्रियों ने गुरुवार को अपने इस्तीफे दे दिए। स्थानीय मीडिया ने यह जानकारी दी है। सार्वजनिक प्रसारक एनएचके ने कहा कि अर्थव्यवस्था, व्यापार और उद्योग मंत्री यासुतोशी निशिमुरा, आंतरिक मामलों और संचार मंत्री जुनजी सुजुकी और कृषि, वानिकी और मत्स्य पालन मंत्री इचिरो मियाशिता ने आज अपने इस्तीफे सौंप दिए। एलडीपी पार्टी हाल ही में आरोपों के बीच भारी जांच के दायरे में रही है कि उसका सबसे बड़ा गुट राजनीतिक फंडिंग रिपोर्ट में धन उगाहने वाले आयोजनों

के राजस्व में करोड़ों येन की घोषणा करने में विफल रहा। इस गुट के कई प्रमुख कैबिनेट और एलडीपी नेताओं, सेइवा नीति अध्ययन समूह, जिसका नेतृत्व पहले दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने किया था, के खिलाफ आरोप लगाए गए हैं।

जापान में भूकंप के मध्यम झटके महसूस किए गए

बीजिंग। जापान के वोल्कानो द्वीप पर भूकंप के मध्यम झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 5.2 मापी गयी। जेएफजेड जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंस ने बुधवार को यह जानकारी दी। स्थानीय समयानुसार आज तड़के करीब 06: 40 बजे वोल्कानो द्वीप में भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमान पर 5.2 मापी गयी। भूकंप का केन्द्र 23.07 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 142.90 डिग्री पूर्वी देशांतर तथा सतह से 10 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था।

इटली अंतरिक्ष स्टेशन के लिए आवास मॉड्यूल का करेगा निर्माण

रोम, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। इटली आवासीय मॉड्यूल प्रदान करके अमेरिकी कंपनी एक्सिओम स्पेस की अंतरिक्ष में वाणिज्यिक स्टेशन बनाने की परियोजना में भाग लेगा।

प्रधानमंत्री कार्यालय 'चिगी पैलेस' ने बुधवार को यह जानकारी दी। बयान में कहा गया है, नए स्टेशन का एक हिस्सा थेल्स एलेनिया स्पेस इटालिया द्वारा निर्मित आवास मॉड्यूल से बनाया जाएगा, जो इन प्रौद्योगिकियों में विश्व में अग्रणी है। बयान में कहा गया है कि इटली 10 जनवरी, 2024 को होने वाले अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) के लिए एक्सिओम स्पेस के एक्स-3 मिशन में भी भाग लेगा। इतालवी वायु सेना के कर्नल वाल्टर विलादेई मिशन का संचालन करेंगे और विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करते हुए अंतरिक्ष स्टेशन पर 14 दिन बिताएंगे।

बयान में कहा गया है कि नासा ने एक्सिओम स्पेस को वाणिज्यिक अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण और प्रबंधन का काम सौंपा

है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि आईएसएस का परिचालन जीवन 2030 तक समाप्त होने की उम्मीद है।

बयान में कहा गया है, सबसे पहले, इसे आईएसएस में जोड़ा जाएगा, लेकिन फिर इसे अलग होना चाहिए और स्वायत्त रूप से संचालित होना चाहिए, कक्षा में नासा को सेवाएं प्रदान करनी चाहिए और कम कक्षा में वाणिज्यिक निजी गतिविधियों का समर्थन करना चाहिए। एक्सिओम स्पेस वर्तमान में दुनिया का पहला वाणिज्यिक अंतरिक्ष स्टेशन बना रहा है। कंपनी की वेबसाइट के अनुसार, थेल्स एलेनिया स्पेस ने एक्सिओम स्टेशन के पहले मॉड्यूल की प्राथमिक संरचनाओं का निर्माण शुरू कर दिया है। एक्सिओम स्पेस 2026 में स्टेशन के पहले खंड को कम-पृथ्वी की कक्षा में प्रक्षेपित करने की योजना बना रहा है।

ऑस्ट्रेलिया में 20 साल बाद महिला निर्दोष साबित

कैनबरा, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया में न्यू साउथ वेल्स की सुप्रीम कोर्ट ने चार बच्चों की हत्या के आरोप में 20 साल से जेल में बंद महिला को गुरुवार को दोषमुक्त कर दिया। न्यायालय ने कैथलीन फोल्बिग (50) के पक्ष में फैसला सुनाया गया। न्यायालय के अनुसार महिला के खिलाफ अभियोजक पुख्ता सबूत प्रस्तुत करने में विफल रहे इसलिए महिला को निर्दोष ठहराते हुए रिहा कर दिया गया। सुश्री फोल्बिग ने कहा कि उनकी बेगुनाही के सबूत को दशकों से अनदेखा और खारिज किया गया है। उन्होंने अदालत के बाहर कहा, सिस्टम ने यह स्वीकार करने के बजाय कहा कि कभी-कभी बच्चे अचानक और अप्रत्याशित रूप से तथा हृदयविदारक रूप से मर सकते हैं। सुश्री फोल्बिग के मामले को ऑस्ट्रेलिया में न्याय की सबसे बड़ी चूक में से एक बताया गया है। दरअसल, मामला महिला के चार नवजात बच्चे कालेब, पैट्रिक, सारा और लौरा की मृत्यु से संबंधित था। इनमें से प्रत्येक बच्चे की 1989 और 1999 के बीच अचानक मृत्यु हो गई, जिनकी आयु 19 दिन से 18 महीने के बीच थी। उसके मुकदमे में अभियोजकों ने आरोप लगाया कि महिला ने उनका गला घोंट दिया था।

वर्ग पहेली 6406

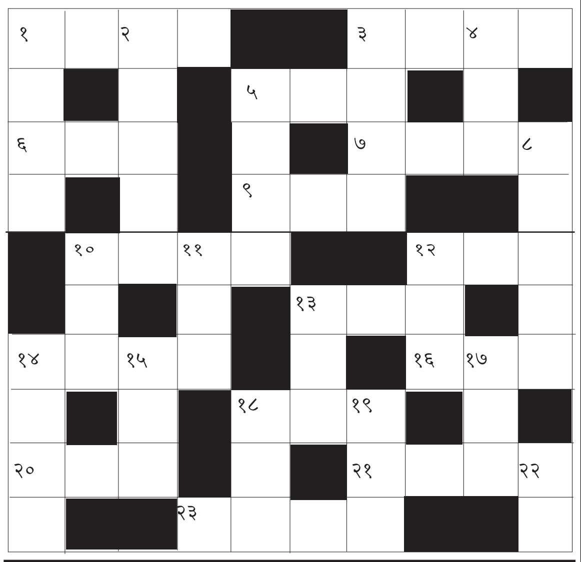

बायें से दायें:-

१. इधर-उधर की बातें, गपशप
३. जहर पीना
५. हमेशा
६. वृद्धिकारक
७. बचा-खुचा
९. कलदार
१०. नियमबद्ध करना,
१२. नायाब
१३. यात्रियों का दल (उर्दू)
१४. क़त्ल करने की जगह
१६. निर्माण, सृजन
१८. नीति-विरुद्ध
२०. निषिद्ध, मनाही
२१. झूठ बोलने वाला
२३. किसी कहानी का मूल

ऊपर से नीचे:-

१. बुढ़ापा
२. स्वर्णनिर्मित
३. चीरने वाला, दिल दहलाने वाला
४. वर्षा ऋतु
५. निवारण, हल
८. रजामंद होना (मुहावरा)
१०. अवरोध रहित
११. अफसोस, दुख
१२. लाड़-प्यार, स्नेह
१३. वैधानिक (उर्दू)
१४. अधीनस्थ
१५. मुल्तवी, आगे के लिए बढ़ाया
१७. एक प्रसिद्ध पक्षी
१८. वरना
१९. अंधकार
२२. चिराग

वर्ग पहेली-6405

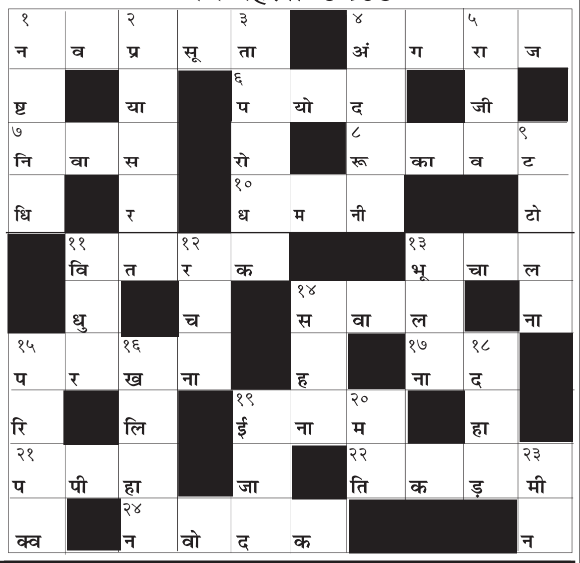

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

आज का इतिहास

1749-छत्रपति शिवाजी के पोते शाहू की मौत हुई।
1803-ईस्ट इंडिया कंपनी ने उड़ीसा (अब ओडिशा) पर क़ब्ज़ा किया।
1911-बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसाइटी की स्थापना हुई।
1916-प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वेरदून में हुई लड़ाई में फ्रांस ने जर्मनी को हराया।
1917-मोलदावियन गणराज्य ने रूस से स्वतंत्र होने की घोषणा की।
1950-भारत के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं स्वतन्त्र भारत के प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल का निधन।
1953-भारत की एस विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र महासभा के आठवें सत्र की प्रथम महिला अध्यक्ष चुनी गई।
1965-बंगलादेश में गंगा नदी के तट पर आये चक्रवात में 15,000 लोगों की मौत हुई।
1970-पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी के नेता शुभेन्दु अधिकारी का जन्म।
1976-भारत के प्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ियों में से एक बाइचुंग भूटिया का जन्म।
1991-जाने माने फिल्म निर्माता सत्यजीत रे सिनेमा जगत में उनकी उपलब्धियों के लिए स्पेशल ऑस्कर से नवाजा गया।
1993-जेनेवा में गैट (व्यापार एवं तटकर पर आम अहमति) विश्व व्यापार समझौते पर 126 देशों द्वारा हस्ताक्षर।
1995-यूरोपीय यूनियन के नेताओं में समग्र एकीकृत यूरोप की मुद्रा यूरो के लिए सहमति।
1997-अरुंधति रॉय को उनके उपन्यास 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' के लिए ब्रिटेन के सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार 'बुकर पुरस्कार' से नवाजा गया।
2000-चेरनोबिल रिएक्टर सदा के लिए बंद।
2001-इटली में पीसा की झुकी मीनार को 11 साल बंद रहने के बाद दोबारा खोला गया।

बयान *संयुक्त राष्ट्र महासभा अध्यक्ष ने बातचीत से किया आग्रह*

सुरक्षा परिषद सुधार पर गतिरोध दूर हो

संयुक्त राष्ट्र, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष डेनिस फ्रांसिस ने विश्व निकाय के सदस्यों से बातचीत के जरिए सुरक्षा परिषद सुधार पर गतिरोध को दूर करने की अपील की है। सुरक्षा परिषद रिफॉर्म पर ग्लोबल साउथ थिंक टैंक के एक सम्मेलन में उन्होंने बुधवार को कहा, दुनिया भर में संघर्ष फैल रहा है, ऐसे में सुरक्षा परिषद चिंताजनक स्थिति में फंसी हुई लगती है। ऐसा माना जाता है कि परिषद अपने मैंडेट को पूरा नहीं कर रही है। परिणामस्वरूप, पूरे संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता खतरे में है।

हमें एक ऐसी परिषद की आवश्यकता है जो अधिक संतुलित, अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, अधिक उत्तरदायी, अधिक लोकतांत्रिक और अधिक पारदर्शी हो। यूएनजीए प्रमुख ने कहा कि सुधार लाने के लिए, सदस्य देशों को बातचीत से मुद्दे का समाधान ढूंढना होगा। हमारा उद्देश्य सतत गतिरोध से आगे बढ़ने के तरीके ढूंढना और/या बनाना होना चाहिए। गोलमेज सम्मेलन का आयोजन एल- 69 द्वारा किया गया था, जो भारत के संयुक्त राष्ट्र मिशन के सहयोग से सुरक्षा परिषद में सुधार की वकालत करने वाले दुनिया भर के 30 से अधिक देशों का एक समूह है। भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने परिषद की वर्तमान संरचना को कालभ्रमित बताया जो पिछले दशकों में अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आए

'संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता खतरे में'

बदलावों के अनुकूल ढलने में विफल रही है। उन्होंने कहा, सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता में ग्लोबल नॉर्थ के देशों की प्रधानता है, इसे बदलना होगा।

परिषद को न केवल विस्तार करना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करते हुए लोकतंत्रीकरण भी करना चाहिए कि गैर-स्थायी सदस्यों की भी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका हो। उन्होंने कहा, हम ग्लोबल साउथ का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमारी मांग केवल प्रतिनिधित्व के लिए नहीं है बल्कि उन फैसलों में न्यायसंगत भागीदारी के लिए है जो सीधे हमारे क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। ऑस्ट्रिया के स्थायी प्रतिनिधि अलेक्जेंडर मार्शचिक, जो परिषद सुधारों के लिए अंतर सरकारी वार्ता (आईजीएन) के सह-अध्यक्ष हैं, ने कहा कि इस विचार को लेकर काफी समानता है कि सुरक्षा परिषद में ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करने की जरूरत है।

सम्मेलन का संचालन करने वाले ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष समीर सरन ने कहा कि सुधारों पर विचार करते समय, हमें इस बात पर पुनर्विचार करना चाहिए कि महासभा को किस तरह से प्रयास करना चाहिए और परिषद की विकृतियों को सुधारने की क्षमता होनी चाहिए।

दुनिया को जानें

इंग्लैंड में कोरोना महामारी के बाद से धूम्रपान करने वालों की संख्या बढ़ी

ब्रिटेन, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। इंग्लैंड में कोरोना महामारी के बाद से धूम्रपान में दशकों से चली आ रही गिरावट लगभग रुक गई है। बीबीसी ने एक अध्ययन के हवाले से यह जानकारी दी है। शोध के अनुसार, गिरावट की दर महामारी से पहले के वर्षों में 5.2फीसदी से धीमी होकर अप्रैल 2020 और अगस्त 2022 के बीच केवल 0.3 फीसदी रह गई। मुख्य शोधकर्ता ने कहा कि आशंका है कि अधिक युवा धूम्रपान करने लगे हैं और तत्काल उपाय करने की आवश्यकता है। सरकार ने कहा कि वह कानूनी उम्र बढ़ाने सहित इंग्लैंड को धूम्रपान मुक्त बनाने के लिए 'ठोस कार्रवाई'कर रही है। शोधकर्ताओं ने 101,960 वयस्कों के साथ सर्वेक्षण के आधार पर, अनुमान लगाया कि जून 2017 में 16.2 फीसदी लोग धूम्रपान करते थे, जो मार्च 2020 में महामारी की शुरुआत तक गिरकर 15.1 फीसदी हो गया, लेकिन अगस्त 2022 में केवल 15 फीसदी रह गया, तब से गिरवाट की धीमी दर लगातार बनी हुई है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय का आंकड़ा भी 2000 और 2020 के बीच धूम्रपान में साल-दर-साल गिरावट दर्शाता है।

प्रादेशिकी

इंटरमीडिएट स्तरीय भर्ती के तहत 236 पदों पर ऑनलाइन आवेदन शुरू

देहरादून। उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ने इंटरमीडिएट स्तरीय भर्ती के तहत 236 पदों पर ऑनलाइन आवेदन शुरू कर दिए हैं। 12वीं पास युवा इस भर्ती के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके तहत परिवहन आरक्षी के 118, आबकारी सिपाही के 100, उप आबकारी निरीक्षक के 14, पंतनगर विवि में हॉस्टल मैनेजर ग्रेड-3 के दो, महिला कल्याण विभाग में हाउस कीपर के दो पदों पर भर्ती की जाएगी। 31 दिसंबर तक आवेदन किए जा सकते हैं। जिसके बाद चार जनवरी से आठ जनवरी के बीच आवेदन में त्रुटि सुधार का अवसर मिलेगा। आयोग ने परीक्षा की अनुमानित तिथि 31 जनवरी तय की है। परिवहन आरक्षी के लिए आयु 18 से 30 वर्ष, आबकारी सिपाही के लिए 18 से 35 वर्ष, उप आबकारी निरीक्षक के लिए 21 से 42, हॉस्टल मैनेजर के लिए 18 से 42 और हाउस कीपर के लिए 21 से 42 वर्ष आयु होनी चाहिए।

उत्तराखंड की नदियों में मशीनों से ड्रेजिंग पर लगी रोक हटी

नैनीताल, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। उत्तराखंड की नदियों में मशीनों से ड्रेजिंग और खनन करने की अनुमति दिए जाने को लेकर सरकार की ओर से दायर प्रार्थना पर नैनीताल हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। मामले में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनोज कुमार तिवारी और न्यायमूर्ति विवेक भारती शर्मा की खंडपीठ ने पूर्व के आदेश में संशोधन करते हुए नदियों में मशीनों से ड्रेजिंग पर लगी रोक हटा दिया है। अब प्रदेश में एसओपी के आधार पर मशीनों से नदियों में ड्रेजिंग कर सकेंगे। जबकि, मशीनों से खनन पर लगी रोक जारी रहेगी।

गौर हो कि नैनीताल हाईकोर्ट ने बीती 19 दिसंबर 2022 को नदियों में भारी मशीन से हो रही ड्रेजिंग पर रोक लगाई थी। लिहाजा, सरकार ने इस रोक को हटाने के लिए आदेश में संशोधन करने की मांग की थी। प्रार्थना पत्र में सरकार की ओर से कहा गया कि कोर्ट ने बीते साल नदियों से मलबा हटाने के लिए मशीनों के इस्तेमाल पर रोक लगा दी थी। जिससे कई तरह की दिक्कतें आ रही हैं।

- हाईकोर्ट ने पूर्व के आदेश में किया संशोधन
- मशीनों से खनन पर लगी रोक रहेगी जारी
- मशीनों से ड्रेजिंग की अनुमति से बाढ़ राहत कार्यो में आएगी तेजी

इससे सरकार के बाढ़ और राहत के काम नहीं हो पा रहे हैं। नदियों से मैनुअली यानी हाथों से मलबा उठाना संभव नहीं है। सरकार का कहना था कि नदियों में मॉनिटरिंग के लिए ठोस कदम उठाई जा रही है। बकायदा इसके लिए कमेटियों का गठन किया गया है। वहीं, सरकार के इस प्रार्थना पत्र के आधार पर कोर्ट ने ये आदेश दिए।बता दें कि गुलजारपुर निवासी प्रिंस पाल सिंह और गगन प्रसार ने नैनीताल हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की थी। जिसमें उन्होंने कहा था कि उधम सिंह नगर जिले में रामनगर रेंज के गुलजारपुर स्थित जंगलों से लगातार अवैध खनन हो रहा है। इसे तत्काल रोका जाए। क्योंकि, इससे वन संपदा को भी काफी नुकसान हो रहा है। इसके अलावा खनन कार्य में भारी मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। जिसे रोका जाए।

वित्तीय अनियमितता पर हाईकोर्ट से सरकार से मांगा शपथ पत्र

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट में नगर पंचायत पुरोला के निवर्तमान चेयरमैन पर वित्तीय अनियमितता करने और उनके द्वारा सरकारी भूमि का दुरुपयोग करने के खिलाफ दायर जनहित याचिका पर सुनवाई हुई। मामले की सुनवाई करते हुए कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनोज कुमार तिवारी और न्यायमूर्ति विवेक भारती शर्मा की खंडपीठ ने राज्य सरकार से 14 फरवरी तक विस्तृत शपथपत्र पेश करने को कहा है। सुनवाई के दौरान सरकार ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि सरकारी भूमि का दुरुपयोग हुआ है। जिस पर कोर्ट ने सरकार से इस पर एक विस्तृत शपथपत्र पेश करने को कहा है। मामले की अगली सुनवाई के लिए 14 फरवरी की तारीख निर्धारित की गई है। मामले के अनुसार पुरोला के वार्ड मेंबर विनोद नौडियाल ने जनहित याचिका दायर कर कहा है कि निवर्तमान नगर पंचायत चेयरमैन ने सरकारी जमीन पर ना सिर्फ अपना होटल नेगी टावर बनाया है, बल्कि कई सरकारी जमीन को अधिकारियों के साथ मिलकर खुर्द-बुर्द किया है। इससे पहले भी जांच हुई, जिसमें वित्तीय अनियमितता करने के आरोप सही पाए गए, लेकिन सरकार ने उनके खिलाफ आजतक कोई भी कार्रवाई नहीं की। जनहित याचिका में सीबीआई और फिर एसआईटी से जांच करने के साथ-साथ दोषियों पर आपराधिक मुकदमा दर्ज करने की मांग की है।

खराब स्ट्रीट लाइटों व रैन बसेरों की समस्याओं को लेकर एमएनए को सौंपा ज्ञापन

हरिद्वार, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। शहर के कई वार्डो व बाजारों में बंद पड़ी स्ट्रीट लाइटों की समस्या को लेकर महानगर व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष सुनील सेठी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल नगर आयुक्त वरूण चैधरी से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने नगर आयुक्त को ज्ञापन सौंपते हुए मांग की कि कई वार्डो व बाजारों में बंद पड़ी स्ट्रीट लाइट को ठीक करावाने की मांग की। महानगर व्यापार मंडल के प्रतिंधिमंडल ने नगर आयुक्त वरुण चैधरी को ज्ञापन सोपते हुए मांग कि शहर के कई वार्डो में बाजारों में बंद पड़ी लाइटों को ठीक करवाया जाए एवं जरूरत के स्थानों पर अन्य लाइट लगवाई जाए। सेठी ने नगर आयुक्त को अवगत करवाते हुए बताया कि सर्दियों के सीजन में जब अंधेरा कोहरा शाम को जल्दी हो जाता है तब स्ट्रीट लाइट न होने या खराब होने की वजह से दुर्घटनाओं का खतरा बड़ जाता है। शहर के मुख्य बाजारों एवं कई वार्डो गली मोहल्ले रात्रि में प्रकाश की व्यवस्था से दूर है क्योंकि कुछ जगह या तो लाइट खराब पड़ी है या कुछ जगह लाइटें नही लगाई गई है। मुख्य बाजारों के कई हर्टेज पोल खराब पड़े है चैराहे तिराहे भी अंधकार में डूबे रहते है। जिससे आमजनता और यात्रियों को रात्रि में परेशानी होती है।

महानगर व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में मिला प्रतिनिधिमंडल

राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी ने भाजपा पर हमला बोला

सुक्खू सरकार 5 सालों में कांग्रेस की सभी गारंटियों को पूरा करेगी

शिमला, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी ने भाजपा पर हमला बोला है। गारंटियों के मुद्दे पर भाजपा नेताओं की लगातार बयानबाजी से खफा दिखे जगत सिंह नेगी ने कहा कि सुक्खू सरकार 5 सालों में कांग्रेस की सभी गारंटियों को पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि 5 साल सत्ता में रहते हुए प्रदेश की पूर्व भाजपा सरकार ने प्रदेश को सिर्फ कर्ज के बोझ तले दबाने का काम किया, विकास कार्य ठप्प रहे। नेगी शिमला में पत्रकारों से अनौपचारिक बातचीत कर रहे थे। पत्रकारों के एक सवाल के जवाब में उन्होंने आपदा राहत के नाम पर केंद्र से मिली 633 करोड़ से अधिक की रकम को ऊंट के मुंह में जीरा करार दिया।

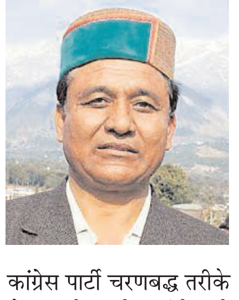

गारंटियों के मुद्दे पर भाजपा नेताओं के आरोपों को लेकर उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी चरणबद्ध तरीके से अपनी सभी गारंटी पूरी कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का एक साल का कार्यकाल पूरा होने के मौके पर धर्मशाला में आयोजित रैली में मुख्यमंत्री ने जनवरी महीने से लाहौल स्पीति की महिलाओं को 1500 मासिक पेंशन देने का ऐलान कर दिया है । इसके अलावा मिल्क फेडरेशन के माध्यम से खरीदे जाने वाले दूध की कीमत भी छः रुपए प्रति लीटर बढ़ा दी हैं। आपदा की वजह से गारंटी पूरी करने में थोड़ी देरी हुई है लेकिन सरकार 5 साल में सभी गारंटरयां पूरी करेगी।

जगत सिंह नेगी ने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि पूर्व में रही भाजपा सरकार ने 5 साल हिमाचल प्रदेश को कर्ज के बोझ में डुबोया और विकास कार्य पूरी तरह से ठप्प रहे। कर्मचारियों की देनदारियां अलग से है जिन्हें भाजपा की डबल इंजन सरकार ने नहीं दिया।

आपदा राहत के एवज केंद्र से प्रदेश को मिली 633 करोड़ से अधिक की रकम को लेकर पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि हिमाचल सरकार ने 10 हजार करोड़ रूपए की राहत राशि की मांग की है लेकिन केंद्र ने केवल 633 करोड़ की राशि जारी की , यह नाकाफी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की धर्मशाला रैली में आर्थिक मदद का मुद्दा उठने के बाद केंद्र सरकार ने यह रकम जारी की है।

सार संक्षेप

ट्रेन के इंजन की चपेट में आने से हाथी की मौत, बच्चा गम्भीर

नैनीताल। देर रात रेल के इंजन की चपेट में आकर एक हाथी की मौके पर ही मौत हो गयी। जबकि उसके साथ चल रहा एक बच्चा गम्भीर रूप से घायल हुआ है। सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंच कर हाथी के शव को कब्जे में ले लिया, जबकि हाथी के बच्चे को रेस्क्यू कर उसे उपचार हेतू लालकुंआ लाने की तैयारी की जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार लालकुंआ क्षेत्र बीती देर रात्रि करीब तीन बजे तराई केंद्रीय वन प्रभाग के टांडा जंगल से निकल कर रेल पटरी क्रॉस करते हुए तराई पूर्वी वन प्रभाग गौला रेंज क्षेत्र की तरफ जा रहे नर हाथी की ट्रेन के इंजन से टकराने से दर्दनाक मौत हो गई, जबकि उसके साथ चल रहा करीब सात या आठ साल का बच्चा भी इस घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम ने घायल हाथी के बच्चे का रेस्क्यू प्रारंभ कर दिया है।

ईडी ने आईएफएस किशन चंद की 31 करोड़ की सम्पत्ति की अटैच

देहरादून। उत्तराखंड में रिटायर्ड आईएफएस अधिकारी किशन चंद पर कानूनी शिकंजा कसता जा रहा है। पहले विजिलेंस फिर सीबीआई और अब ईडी ने भी किशन चंद के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। इस कड़ी में रिटायर्ड आईएफएस किशनचंद की 31 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति अटैच की गई है। उत्तराखंड में तमाम मामलों को लेकर चर्चित रहे रिटायर्ड आईएफएस किशन चंद ने ईडी यानी प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई में अब तक हुई कार्रवाई और उस पर एजेंसी को दिए हुए जवाब की जानकारी दी। किशन चंद ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की तरफ से की गई कार्रवाई की पुष्टि करते हुए कहा कि एजेंसी की तरफ से उनकी जो संपत्ति अटैच की गई है और उसका मूल्य बताया गया है। वह मौजूदा मार्केट वैल्यू के लिहाज से है। जबकि उन्होंने यह संपत्ति सालों पहले ही मार्केट वैल्यू से काफी कम कीमत में ली गयी थी। दरअसल किशन चंद पर मनी लांड्रिंग के तहत यह कार्रवाई की गई है। इसमें उनके एक स्कूल भवन के साथ ही स्टोन क्रशर प्लांट को भी अटैच किया गया है। यह संपत्तियां किशन चंद या उनके परिवार के नाम पर दर्ज हैं। किशन चंद की उत्तराखंड में वन अधिकारी के रूप में लंबी सेवा रही है और एक प्रमोटी आईएफएस अधिकारी के रूप में उन्होंने कई प्रभागों में प्रभागीय वन अधिकारी की जिम्मेदारी भी संभाली है। रिटायर्ड आईएफएस अधिकारी किशनचंद सबसे पहले आए से अधिक संपत्ति के मामले में कानूनी शिकंजे में आए थे। इस दौरान विजिलेंस ने उनकी जांच की और उनके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज की गई। अभी विजिलेंस की जांच चल ही रही थी कि इस दौरान कॉर्बेट टाइगर रिजर्व में पाखरों टाइगर सफारी मामले पर विवाद हो गया।

सुडोकू 6406 का हल

3	9	8	1	4	6	2	7	5
7	4	6	9	2	5	8	1	3
1	5	2	3	8	7	6	9	4
5	6	9	7	3	1	4	2	8
8	7	3	2	5	4	1	6	9
4	2	1	6	9	8	5	3	7
9	1	4	5	7	2	3	8	6
2	8	7	4	6	3	9	5	1
6	3	5	8	1	9	7	4	2

विद्यालयों को शिक्षा के लिए बेहतर व सुंदर भी प्राथमिकता: डॉ. धन सिंह

पौड़ी, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। उच्च शिक्षा व स्वास्थ्य मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने अपनी विधानसभा के चार दिवसीय भ्रमण के दूसरे दिन विकासखंड थलीसैंण के अंतर्गत विभिन्न कार्यो का लोकार्पण व शिलान्यास किये। उन्होंने 67.45 लाख की लागत से चाकीसैंण-जाख मोटर मार्ग व 218.65 लाख की लागत से चाकीसैंण-मरखोला-बांजकोट मार्ग के डामरीकरण का शिलान्यास किया। मंत्री ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय चाकीसैंण के सौंदर्यीकरण कार्यों का शिलान्यास करते हुए कहा कि विद्यालयों को शिक्षा के लिए बेहतर तो बनाना ही है साथ ही विद्यालयों को सुंदर भी बनाना है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार छात्र-छात्राओं को ओर बेहतर शिक्षा देने का कार्य कर रही है। उन्होंने वहां उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि लक्ष्य को हासिल करना है तो उसके लिए मेहनत जरूरी है, जिससे लक्ष्य को समय पर हासिल किया जा सके।

प्राथमिक विद्यालय चाकीसैंण के सौंदर्यीकरण कार्यों का किया शिलान्यास

मंत्री ने 12.61 लाख की लागत से स्वास्थ्य केंद्र चाकीसैंण के मरम्मत कार्यों का लोकार्पण भी किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से राज्य सरकार निरंतर कार्य कर रही है। वहीं उन्होंने चाकीसैंण में उत्तराखण्ड पॉवर कॉरपोरेशन लिमिटेड के 33 केवी सब स्टेशन का लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने मरखोला गांव में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए देश के प्रधानमंत्री की जनकल्याणकारी योजनाओं हेतु आम जनमानस को जागरूक करने की दृष्टि से मोदी की गारंटी वैन को रवाना भी किया। मंत्री ने कहा कि सरकार की पहली प्राथमिकता चैमुखी विकास व सर्वांगीण विकास करना है। इस दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं भी सुनी। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष सहकारिता संघ मातवर सिंह रावत, मुख्य शिक्षाधिकारी दिनेश गौड़, जिला पंचायत सदस्य प्रियंका देवी सहित अन्य उपस्थित थे।

बटाला में भाजपा का सफाया, नेता अकाली दल में हुए शामिल: बादल

अमृतसर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का गुरुवार को बटाला में सफाया हो गया और इसके लगभग सभी नेता शिरोमणी अकाली दल अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल की मौजूदगी में अपने समर्थकों के साथ इसमें शामिल हो गए। यहां पूर्व मंत्री अनिल जोशी द्वारा आयाजित एक समारोह में बटाला नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष- नरेश महाजन, नौ पूर्व पार्षद, दो मौजूदा पार्षद-सुमन हांडा और सुधा महाजन, बटाला भाजपा मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष, पार्टी के किसान मोर्चा, व्यापार मंडल, युवा मोर्चा, ओबीसी सेल के पदाधिकारी, वरिष्ठ नागरिक सेल के पूर्व उपाध्यक्ष और ट्रकर्स एसोसिएशन के पदाधिकारी अकाली दल में शामिल हो गए। पार्टी में भाजपा बटाला इकाई के शामिल नेताओं का स्वागत करते हुए श्री बादल ने कहा, ''मैं आपको आश्वासन देता हूं कि मैं शांति और साम्प्रदायिक सद्भाव के साथ तेजी से विकास और सामाजिक कल्याण लाभों को सभी तक पहुंचाना सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हूं। उन्होने अकाली दल में विश्वास जताने के लिए भाजपा नेताओं को धन्यवाद दिया और उन्हें पार्टी में उचित सम्मान देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर बटाला नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष नरेश महाजन ने कहा कि भाजपा नेता अकाली दल की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति के बारे में आश्वस्त है और उन्हें लगता है कि पंजाब को अकेले श्री बादल की कुशल नेतृत्व में आगे लेकर जाया जा सकता है।

वरिष्ठ अधिकारियों का अभिवादन सही तरीके से करें: डीजीपी

■ **अमर नाथ तिवारी**

देहरादून, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। पुलिस महानिदेशक अभिनव कुमार ने कहा कि वरिष्ठ अधिकारियों का सही से अभिवादन नहीं किया जा रहा है, पुलिस एक अनुशासित बल है, अनुशासित बल इस प्रकार का कृत्य कदापि उचित नहीं है। भविष्य में ऐसा देखा गया तो सम्बन्धित के खिलाफ कार्यवाही होगी।

पुलिस महानिदेशक ने समस्त पुलिस अधिकारियोंव कर्मचारियों के लिए नर्देशित किया गया है कि अति विशिष्ट, विशिष्ट महानुभावों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के भ्रमण के दौरान ड्यूटी पर तैनात पुलिस कार्मिक अपनी ड्यूटी पर सतर्क न रहकर अन्य क्रिया कलापों यथा मोबाईल पर व्यस्त रहना, किसी अन्य व्यक्ति से बातचीत करना, किसी दुकान पर बैठे रहना आदि में समय व्यतीत करते हैं। अति विशिष्ट,विशिष्ट व्यक्तियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के भ्रमण जैसी महत्वपूर्ण ड्यूटी के दौरान इस प्रकार की लापरवाही बरतना अनुशासनहीनता का घोतक है। इसी प्रकार की लापरवाही से सुरक्षा व्यवस्था में चूक हो सकती है। डियूटी के पर्यवेक्षण अधिकारियों ने भी इस ओर ध्यान नही दिया जा रहा है। कतिपय पुलिस कर्मचारियों अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सही से अभिवादन नहीं किया जा रहा है, पुलिस एक अनुशासित बल है, अनुशासित बल द्वारा इस प्रकार का कृत्य कदापि

उचित नहीं है। पुलिस महानिदेशक द्वारा अति विशिष्ट, विशिष्ट व्यक्तियो तथा वरिष्ठ अधिकारियों के भ्रमण के दौरान सतर्कता से ड्यूटी करने तथा वरिष्ठ अधिकारियों को सही से अभिवादन किये जाने के लिए अपने अधीनस्थ समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को आदेश का अनुपालन करने के लिए बताया गया एवं साथ ही यदि भविष्य में इस प्रकार की कोई लापरवाही पायी जाती है तो सम्बन्धित कार्मिक के विरुद्व अनुशासनात्मक कार्रवाई एवं सम्बन्धित पर्यवेक्षण अधिकारी का भी उत्तरदायित्व निर्धारित किये जाने के सम्बन्ध में बताया गया।

पंजाब में अगले साल बिजली दर में वृद्धि की संभावना नहीं

जालंधर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। पंजाब स्टेट पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (पीएसपीसीएल) ने अपनी वार्षिक राजस्व आवश्यकता (एआरआर) में उल्लेख किया है कि वर्तमान टैरिफ के आधार पर अगले वर्ष यह 1558 करोड़ रुपए अधिशेष होगा। व्यावहारिक रूप से इसका तात्पर्य यह है कि पीएसपीसीएल ने अगले वर्ष के लिए बिजली दर में कोई वृद्धि की मांग नहीं की है। पंजाब राज्य इंजीनियर एसोसिएशन के प्रवक्ता वीके गुप्ता ने गुरुवार को बताया कि एआरआर में 2024-25 के लिए वार्षिक राजस्व आवश्यकता 46383 करोड़ रुपये आंकी गई है और मौजूदा दरों पर इसकी वार्षिक आय 47940 करोड़ रुपये होगी। एआरआर का मुख्य घटक बिजली खरीद लागत है जिसका मूल्यांकन 30062 करोड़ रुपये किया गया है, इसके बाद कर्मचारियों का खर्च 7281 करोड़ रुपये है। पीएसटीसीएल को देय ट्रांसमिशन शुल्क 1651 करोड़ रुपए है। पंजाब सरकार द्वारा देय सब्सिडी 21910 करोड़ रुपये आंकी गई है और इसमें कृषि क्षेत्र के लिए 10148 करोड़ रुपये, घरेलू उपभोक्ताओं के लिए 8786 करोड़ रुपये और उद्योग के लिए 2976 करोड़ रुपये शामिल हैं।

कांग्रेस के 'यूथ जोड़ों बूथ जोड़ों' कार्यक्रम को सफल बनाएं: शिवि चैहान

हरिद्वार, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। युवा कांग्रेस के पदाधिकारियों की बैठक का आयोजन मध्य हरिद्वार स्थित होटल में किया गया। बैठक में यूथ जोड़ो बूथ जोड़ो, संसद घेराव, कार्यक्रम पर चर्चा की गई। इस अवसर पर प्रदेश प्रभारी शिवि चैहान और प्रदेश अध्यक्ष सुमित्तर भुल्लर ने कहा कि प्रत्येक पदाधिकारी यूथ जोड़ो बूथ जोड़ो कार्यक्रम को सफल बनाएं। चुनाव में हार जीत होती रहती है उससे निराश होने की आवश्यकता नहीं है। जनता के बीच जाओ और युवाओं की आवाज उठाओ। 20 दिसंबर को संसद घेराव का कार्यक्रम है जिसे सफल बनाने के लिए जिले से अधिक से अधिक लोगों को दिल्ली पहुंचना है। सरकार के खिलाफ आक्रामक होना होगा। हरिद्वार जिलाध्यक्ष कैश खुराना, रुड़की जिलाध्यक्ष सचिन चैधरी ने कहा कि यूथ कांग्रेस प्रदेश के युवाओं की

- कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए किया गया बैठक का आयोजन
- 20 दिसम्बर को कांग्रेस के संसद घेरों अभियान को लेकर हुई चर्चा

लड़ाई को आगे बढ़ा रही है। रोजगार का मुद्दा बहुत बड़ा है। सिडकुल पूर्व मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी की देन है लेकिन उसमे बहुत भ्रष्टाचार हो रहा है। सिडकुल में स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार मिले। जल्द ही सिडकुल घेराव का कार्यक्रम भी होगा। संसद घेराव में भी सैकड़ों की संख्या में युवा दिल्ली पहुंचेंगे। आगामी लोकसभा चुनाव में युवा कांग्रेस अहम भूमिका निभाएगी। उपाध्यक्ष लक्ष्य चैहान, आदित्य मल्होत्रा ने कहा कि ऐप के माध्यम से अधिक से अधिक युवाओं को युवा कांग्रेस से जोड़ा जाएगा।

इस अवसर पर उपाध्यक्ष लक्ष्य चैहान, आदित्य मल्होत्रा, ग्रामीण विधानसभा अध्यक्ष जरीफ खान, महबूब आलम, उपाध्यक्ष सुमित सैनी, महासचिव लक्की महाजन, हरजीत सिंह, शहजाद अली, शुभम जोशी, डा अनूप, विकास शर्मा, मुजफ्फर अली, नईम मलिक, अब्दुस समद, आनंद शर्मा, अमित कुमार, अशोक सैनी, गुलबहार मलिक, ऋतुराज, मुकुल चैहान, दाताराम चैहान आदि उपस्थित थे।

बारिश के कारण क्षतिग्रस्त हुई मनसा देवी मंदिर की पहाड़ियों को होगी मरम्मत

हरिद्वार, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। बीते दिनों हुई बारिश के कारण क्षतिग्रस्त हुई मनसा देवी मंदिर की पहाड़ियों के ट्रीटमेंट की कवायद तेज हो गई है। जिलाधिकारी के निर्देश पर राजाजी पार्क प्रशासन और सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने क्षतिग्रस्त पहाड़ियों का निरीक्षण किया। अब जल्द ही सिंचाई विभाग एस्टीमेट बनाकर जिलाधिकारी को सौंपेगा। पहले चरण में हिल बाइपास मार्ग, रेलवे लाइन और पहाड़ी के नीचे आबादी वाले इलाकों में रिटेनिंग वॉल और नालों पर चेकडैम बनाए जाएंगे। दूसरे चरण में उत्तराखण्ड लैंडस्लाइड मैनेजमेंट मिटिगेशन सेंटर की बनाई गई कार्ययोजना पर काम शुरू होगा।

बता दे बीते दिनों हुई भारी बारिश के चलते मनसा देवी की पहाड़ियों पर भयंकर भूस्खलन हुआ। भूस्खलन से हिल बायपास मार्ग बंद पड़ा हुआ है। सरकार के निर्देश पर प्रशासन द्वारा पहाड़ियों के ट्रीटमेंट का काम शुरू कर दिया गया है। जिलाधिकारी धीराज सिंह गर्ब्याल के निर्देश पर उत्तराखंड सिंचाई विभाग और राजाजी टाइगर रिजर्व पार्क की संयुक्त टीम ने मनसा देवी पहाड़ पर भूस्खलन की रोकथाम के लिए निरीक्षण किया। इस दौरान संयुक्त टीम ने भूस्खलन रोकने के लिए छोटी अवधि में होने वाले कार्यों को चिह्नित किया। एक सप्ताह के भीतर कार्यदायी संस्था उत्तराखंड सिंचाई विभाग कार्यों का प्रस्ताव बना कर डीएम को सौंपेगा।

- विशेषज्ञों ने किया मौके पर जाकर निरीक्षण
- दो चरणों में होगा मनसा देवी पहाड़ियों का ट्रीटमेंट

राजाजी पार्क और उत्तराखंड सिंचाई विभाग की टीम ने मनसा देवी पहाड़ का निरीक्षण कर जांच की। इस दौरान टीम ने मौके पर रिटेनिंग वॉल, चेकडैम, नालों और नालियों के निर्माण आदि छोटी अवधि के कार्य होने वाले स्थानों को चिह्नित किया। हरिद्वार जिलाधिकारी ने बताया निरीक्षण में हिल बाईपास की रिटेनिंग वॉल, निचले स्थानों पर सड़क किनारे बनने वाले नालों पर कितने चेकडैम लगने हैं। निचली आबादी और रेलवे ट्रैक को आगामी वर्षाकाल में नुकसान न हो आदि बिंदुओं पर होने वाले कार्यों को चिह्नित किया गया है। लंबी अवधि के कार्य की डीपीआर उत्तराखंड लैंडस्लाइड मैनेजमेंट एंड मिटिगेशन सेंटर बना रहा है। एक सप्ताह के भीतर कार्यदायी संस्था उत्तराखंड सिंचाई विभाग कार्यों का प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत करेगा।

हरिद्वार जिलाधिकारी ने बताया पहाड़ का ट्रीटमेंट दो भागों में किया जाएगा। पहले शॉर्ट टर्म कार्यों को पर फोकस किया जाएगा। उसके बाद मेजर कार्यों पर फोकस किया जाएगा। शॉर्ट टर्म कार्यों की अगर बात की जाए तो उसमें चैक डैम पहाड़ का ट्रीटमेंट और पहाड़ पर प्लांटेशन इत्यादि का कार्य किया जाएगा। मेजर कार्यों की बात की जाए तो पहाड़ से मिट्टी शहर की ओर ना आए इसके लिए पहाड़ पर मिट्टी को रोकना व इसी के साथ पहाड़ की विशेषज्ञों द्वारा दी गई गायों पर विचार करके मेजर कार्य किए जाएंगे। पहले तो चरण में हमारे द्वारा शॉर्ट टर्म कार्य पर फोकस किया जाएगा।

घरों में पहुंचता है मलबा

मनसा देवी पहाड़ से आठ मुख्य स्थानों पर भूस्खलन होता है। भूस्खलन के कारण निचले क्षेत्र में हर साल बड़ी आबादी को नुकसान उठाना पड़ता है। पहाड़ का मलबा लोगों के घरों में पहुंच जाता है। क्षेत्र की ब्रह्मपुरी, भूरे की खोल, भीमगोड़ा, खड़खड़ी, मनसा देवी मंदिर पैदल मार्ग, अपर रोड, सब्जी मंडी आदि क्षेत्रों में पहाड़ों का मलबा आता है। जिससे जनजीवन अस्त व्यस्त हो जाता है।

दून के ट्रैफिक पर रहेगी हाईटैक ड्रोन कैमरों की नजर

देहरादून, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। राजधानी की यातायात व्यवस्था में प्रभावी सुधार के लिए एक नई पहल की शुरुआत करते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय सिहं ने मुंबई की आइडिया फोर्ज टेक्नोलॉजी लिमिटेड कंपनी से अनुबंध किया गया है। इस अनुबंध के तहत कंपनी ने नगर क्षेत्र के सभी मुख्य मार्गो चकराता रोड, शिमला बायपास रोड, सहारनपुर रोड, हरिद्वार बायपास रोड, राजपुर रोड, ईसी रोड आदि क्षेत्रों की हाईटेक ड्रोनों की सहायता से लगातार निगरानी की जायेगी तथा इन स्थानों पर यातायात नियमों का उल्लंघन, नो पार्किंग में खड़े वाहनों, अस्थाई अतिक्रमण पर नजर रखते हुए प्रभावी कार्रवाई की जायेगी, इसके अतिरिक्त नगर क्षेत्र में निकलने वाली शोभा यात्राओं व जूलूसो की नियमित मॉनिटरिंग भी इन ड्रोनों की सहायता से की जाएगी। शुरूवात में पुलिस कार्यालय तथा आईएसबीटी स्थित कंट्रोल रूम से 2 ड्रोनों का संचालन किया जाएगा तथा इस दौरान सभी मार्गों पर हो रही प्रत्येक गतिविधि पर आसमान से पुलिस नजदीकी नजर रखेगी। ड्रोन्स का लाइव एक्सेस जनपद के उच्च अधिकारियों के पास भी रहेगा, जिससे वह भी समय-समय पर ड्रोन की गतिविधियों और उसकी लाइव लोकेशन से मॉनिटरिंग की जा सके। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक फलाइंग हॉक का विधिवत शुभारंभ किया। जिसके साथ ही ड्रोन के माध्यम से चिन्हित किए गए क्षेत्र की विधिवत मॉनिटरिंग की शुरुआत की गई है।

आसमान से पुलिस देखेगी शहर में ट्रैफिक वॉयलेशन

प्रादेशिकी

रजत जयंती के रूप में मनाया जाएगा 'फर्रुखाबाद महोत्सव'

फर्रुखाबाद, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। पिछले कई सालों से बंद चल रहे फर्रुखाबाद महोत्सव को पुन: कराए जाने को लेकर जिला प्रशासन नें कमर कस ली है। जिसकी तैयारी की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी संजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में फर्रुखाबाद महोत्सव को रजत जयंती वर्ष समारोह मनाया जाने एवं तैयारी के संबंध में समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुईं। जिसमे महोत्सव को भव्यता प्रदान करनें के लिए बिंदु बार चर्चा की गई। विधायक अमृतपुर सुशील शाक्य नें कहा कि आगामी वर्ष से फर्रुखाबाद महोत्सव का आयोजन स्थापना दिवस से किया जाये। फर्रुखाबाद महोत्सव की तिथि निर्धारित करने का निर्णय आगामी बैठक में लिया जाएगा। महोत्सव को पूरी भव्यता से मनाने हेतु शासन से भी बजट की मांग करने के निर्देश दिए।

लखनऊ में देश भर के 14 वर्ष तक के खिलाड़ियों का लगेगा जमावड़ा

अंडर-14 वर्ष आयु वर्ग के बालक व बालिकाओं की 67वी राष्ट्रीय विद्यालीय खेल प्रतियोगिता का होगा आयोजन

लखनऊ, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश को खेलों के लिए बेहतरीन गंतव्य बनाने में जुटी योगी सरकार अब लखनऊ में एक और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन करने जा रही है। माध्यमिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा गुरू गोविन्द सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज, कुर्सी रोड, गुडम्बा, लखनऊ में 16 से 20 दिसम्बर, 2023 तक अण्डर-14 आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं की 67वी राष्ट्रीय विद्यालयी एथलेटिक्स चैम्पियनशिप 2023-24 का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 16 दिसम्बर को प्रतियोगिता का शुभारंभ करेंगे। प्रतियोगिता में देश भर के सभी राज्य, केंद्र शासित प्रदेश और संगठनों को मिलाकर 34 इकाइयों की टीमों से लगभग 1000 बालक-बालिकाएं और कोच, टेक्निकल ऑफिशियल 14 दिसम्बर से लखनऊ आएंगे तथा प्रतियोगिता सम्पन्न होने के बाद 21 दिसम्बर को लखनऊ से प्रस्थान करेंगे। यह प्रतियोगिता स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में कराई जा रही है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बालक/बालिकाओं की अलग अलग 9

■ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कल करेंगे प्रतियोगिता का शुभारंभ

व्यक्तिगत स्पर्धाएं (80 मीटर हर्डल रेस, 100 मीटर रेस, 200 मीटर रेस, 600 मीटर रेस, हाई जम्प, लांग जम्प, शॉटपुट एवं डिस्कस थ्रो तथा 1 रिले रेस की स्पर्धा) आयोजित की जाएंगी।

बाहर से आने वाले सभी खिलाड़ियों तथा अधिकारियों के ठहरने की व्यवस्था लखनऊ के विभिन्न संस्थानों तथा होटलों में की गई है तथा आवासीय स्थलों पर पर्याप्त साफ-सफाई और फागिंग की व्यवस्था की गई है। मौसम को देखते हुए ठंडक का विशेष इंतजाम किया गया है।

आयोजन स्थल पर चिकित्सा केंद्र स्थापित

देशभर से आए हुए सभी खिलाड़ियों तथा अधिकारियों को उनके आवास से आयोजन स्थल तक पहुंचाने के लिए यातायात प्रवाह को सुरक्षित बनाने के लिए ट्रैफिक पुलिस की व्यवस्था की गई है। आयोजन स्थल और सभी आवासीय परिसरों को प्रतिदिन दो बार साफ किया जाएगा तथा परिसर में पर्याप्त संख्या में सफाई कर्मियों की तैनाती रहेगी तथा मच्छरों और अन्य कीटों के लिए नियमित रूप से फॉगिंग की व्यवस्था की गई है एवं आवासीय परिसरों में सुरक्षा गार्ड चौबीस घंटे तैनात रहेंगे।

चिकित्सा सुविधा के लिए आयोजन स्थल पर चिकित्सा केंद्र स्थापित किया गया है, जिसमें योग्य चिकित्सक और पैरामेडिक्स की टीम उपलब्ध रहेगी। एम्बुलेंस सेवा भी आपात की स्थिति संभालने के लिए तैयार रहेगी तथा प्रतिभागी खिलाड़ियों के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी की जाएगी।

आरजी की छात्राओं के लिए कार्यशाला आयोजित

मेरठ, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला के निर्देशन में सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग द्वारा सूक्ष्म जीव विज्ञान में प्रयुक्त होने वाले इंस्ट्रूमेंट पर आरपीजी गर्ल्स कॉलेज की बीएससी फूड साइंस की छात्राओं के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया। विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर जितेंद्र सिंह ने विभाग की उपलब्धियां के बारे में बताते हुए विभाग में होने वाले सभी शोधों के बारे में बताया। उन्होंने कहा की माइक्रो बायोलॉजिस्ट के लिए करियर की अपार संभावनाएं हैं। डॉक्टर दिनेश पवार ने कहा की नई-नई बीमारियों को फैलाने में बैक्टीरिया वायरस प्रोटोजोआ आदि महत्वपूर्ण आर्गनिज्म होते हैं ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि इनको विशेष यंत्रों की सहायता से देखा जा सकता है। उन्होंने माइक्रो बायोलॉजी में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के यंत्रों के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. लक्ष्मण नागर ने विभाग की सभी प्रयोगशालाओं का छात्राओं का भ्रमण कराते हुए कहा की यदि आप बीमारियों और सूक्ष्मजीवों पर एंटीबायोटिक दवाइयां के प्रभावों के बीच संबंधों का अध्ययन करना चाहते हैं तो माइक्रो बायोलॉजी आपके लिए करियर का विकल्प है। आरजीपीजी कॉलेज से डॉक्टर दीक्षा यजुर्वेदी, अलीना अख्तर, नीरू बत्रा, के नेतृत्व में इन छात्राओं ने भ्रमण किया। डॉक्टर दीक्षा ने कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला जी एवं विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर जितेंद्र सिंह के प्रति आभार प्रकट किया।

स्काउट से देश सेवा की भावना होती है जागृत : मेघराज सिंह

एएस व रुद्रा स्कूल में तीन दिवसीय स्काउट शिविर शुरू

मवाना, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। एएस इंटर कॉलेज मवाना में तीन दिवसीय स्काउट कैंप का शुभारंभ गुरुवार को नगर पालिका के अध्यक्ष अखिल कुमार कौशिक तथा प्रबंधक पवन कुमार रस्तोगी व प्रधानाचार्य डॉ. मेघराज सिंह ने स्काउट गाइड छात्र-छात्राओं के साथ ध्वजारोहण के उपरांत किया। स्काउट की ट्रेनिंग करने के लिए स्काउट भवन मेरठ से मास्टर ट्रेनर के रूप में सोमेंद्र कुमार व सोनू कुमार के साथ विद्यालय के स्काउट प्रभारी रामभूल नाथ, सह प्रभारी श्रवण कुमार, अनुरागी देवी ने छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित किया। डॉ. मेघराज सिंह ने बताया कि स्काउट से देश सेवा की भावना जागृत होती है, इस कारण पूर्ण मनोयोग के साथ इस प्रशिक्षण को प्राप्त करना है, जो भी छात्र-छात्रा प्रशिक्षण में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगा, उन्हें प्रबंधन समिति के द्वारा 11 सौ सम्मान राशि दी जाएगी। प्रशिक्षण के दौरान एक परीक्षा भी आयोजित कराई जाएगी। परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा को सम्मानित किया जाएगा। प्रधानाचार्या डॉक्टर शिवानी सिंह, एडमिशन और मार्केटिंग हैड सुमित काकरान, खेल अधिकारी लक्ष्मीकांत शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी अनुज नागर, एकेडमिक कोर्डिनेटर निशांक त्यागी, हिंदुस्तान स्काउट एंड गाइड के प्रदेश कमिश्नर अजय साहनी व जिला संगठन आयुक्त रोहित मुंगरा ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

सार संक्षेप

सेना दिवस पर लखनऊ में पहली बार होगी भव्य सैन्य परेड

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अगले साल 15 जनवरी को सेना दिवस के अवसर पर भव्य आर्मी डे परेड का आयोजन किया जायेगा। यह पहला मौका है जब लखनऊ पहली बार सैन्य परेड की मेजबानी करेगा जबकि आजादी के बाद यह दूसरी बार है जब सेना दिवस दिल्ली के बाहर आयोजित किया जा रहा है। सेना की मध्य कमान, जिसे सूर्या कमान के नाम से भी जाना जाता है, 15 जनवरी को लखनऊ छावनी स्थित 11 गोरखा राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर में 76वीं सेना दिवस परेड का आयोजन करेगी। मध्य कमान के प्रवक्ता ने गुरुवार को बताया कि भारतीय सेना की रेजिमेंटों से वीर सैनिकों की मार्चिंग टुकड़ियां परेड में भाग लेंगी।

पीआरडी जवान की ट्रेन की चपेट में आने से मौत

ललितपुर। उत्तर प्रदेश के ललितपुर में बुधवार को ड्यूटी कर घर वापिस जा रहे पीआरडी जवान की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। थाना जखौरा क्षेत्रांतर्गत ग्राम रायपुर निवासी पीआरडी जवान गिरजा शंकर उर्फ गणेश प्रसाद बरार पुत्र खुमान बरार जिला मुख्यालय पर स्थित यातायात कार्यालय पर ड्यूटी कर मेमू ट्रेन से अपने घर वापिस जा रहा था। वह जखौरा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतरकर रेलवे स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी ट्रेन के नीचे से निकलकर प्लेटफार्म क्रमांक एक पर जा रहा था, उसी समय दूसरी पटरी पर झांसी की ओर से आ रही ट्रेन की चपेट में आ गया, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया।

झांसी मेडिकल कॉलेज पोस्टमार्टम हाउस में निकले नरमुंड

झांसी। उत्तर प्रदेश में झांसी स्थित महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज के पोस्टमार्टम हाउस में आज उस समय हड़कंप मच गया जब सफाई के दौरान नरमुंड और इंसानी हड्डियां बरामद की गईं। मामले की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य ने मेडिकल कॉलेज के पोस्टमार्टम हाउस में तमाम तरह की अव्यवस्थाओं के आरोप लगाए। जैन ने अन्य कांग्रेसियों के साथ मामले को लेकर मौके पर पहुंचे और उन्होंने नरमुंड व मानव अवशेष मिलने पर एक बेहद गंभीर मामला बताते हुए मानव अंगों की तस्करी किये जाने का भी आरोप लगाया और मिले मानव अवशेषों की डीएनए जांच की मांग की। उन्होंने इसे घोर लापरवाही और भ्रष्टाचार का मामला बताया।

पर्यावरण की चुनौतियों से निपटने को वैज्ञानिकों ने किया मंथन

लखनऊ। सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ एवं राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान अकादमी (नेसा) के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को यहां पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के पहले दिन वैज्ञानिकों ने ग्रीन केमिस्ट्री, प्रदूषण रोकथाम एवं जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों पर विचार विमर्श किया।

हस्तिनापुर का भौगोलिक भ्रमण करने पहुंचे मेरठ कॉलेज के छात्र

मेरठ, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। मेरठ कॉलेज मेरठ के भूगोल विभाग के बीए पंचम सेमेस्टर एंव एमए प्रथम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं को हस्तिनापुर का भौगोलिक भ्रमण करवाया गया। यह भौगोलिक भ्रमण बीए पंचम सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित है। जिसके तहत छात्र -छात्राओं को विभिन्न भौतिक स्थलाकृतियों जैसे गंगा का खादर एवं बांगर क्षेत्र की उत्पत्ति, बनावट एवं अन्य विशेषताओं से अवगत कराया गया। इसके साथ-साथ हस्तिनापुर मे अवस्थित बर्ड सैंक्चुअरी जहां साइबेरियन पक्षी प्रवास कर रहे हैं। पारिस्थितिकी संतुलन एवं वन्य जीव अधिनियम के बारे में भी अवगत कराया गया। भ्रमण के सफल आयोजन में भूगोल विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनीता मलिक, प्रोफेसर नीरज कुमार तोमर प्रोफेसर राजीव कुमार, शोधार्थी अनुज कुमार, त्रिदेव कुमार एंव सुधीर जोशिया का सहयोग रहा।

मारपीट के मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर पीड़ितों ने घेरा थाना

■ गिरफ्तारी न होने से छुब्द परिजनों थाना घेरा

■ 24 घंटे में आरोपी की गिरफ्तारी के आश्वासन पर धरना समाप्त

मवाना/हस्तिनापुर, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। थाना क्षेत्र के गांव अकबरपुर गढी में तीन दिन पूर्व दो पक्षों में हुई मारपीट मैं आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से पीड़ितों का आक्रोश गुरुवार को मुखर हो गया। आरोपी की गिरफ्तारी की मांग को लेकर पीड़ित परिजनों ने थाने के गेट पर ढाई घंटे तक हंगामा किया।

थाना पुलिस के आरोपी की 24 घंटे के अंदर गिरफ्तारी के आश्वासन पर पीड़ितों ने धरना समाप्त किया। बता दें कि रविवार देर शाम अकबरपुर गढी निवासी शिवकुमार पुत्र शेर सिंह पुत्र गांव के समीप स्थित खेतों पर पानी देने के लिए गया था। तभी प्रधान के परिजनों ने शिव कुमार पुरानी रंजीश के चलते लाठी-डंडों व धारदार हथियारों से जान ले हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। परिजनों ने घायल को हस्तिनापुर स्थित सीएससी भर्ती कराया जहां प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने के चलते हायर सेंटर रेफर कर दिया। पीड़ित पक्ष में ने थाने पर नामजद तहरीर दी।

तहरीर मिलने के बाद जहां थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है वहीं पीड़ित पक्ष ने थाना पुलिस पर एक पक्षी कार्रवाई का आरोप लगाते हुए मकान पर पलायन और बिकाऊ के नोटिस चस्मा कर दिए। प्रधान पक्ष ने पीडितों ने पहले भी की मारपीट पीड़ित पक्ष ने बताया कि प्रधान पक्ष द्वारा ब्राहाण समाज के साथ हुई यह पहली घटना नहीं है मई 2023 में प्रधान पक्ष के लोगों ने पीड़ितों के साथ गन्ना तोल केंद्र पर मारपीट की थी। जिसमें प्रधान पक्ष के खिलाफ थान पर मुकदमा पंजीकृत है तभी से प्रधान पक्ष आये दिन उनके साथ घटना करता आ रहा है। प्रधान पक्ष के मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी न होने से गुरुवार को पीड़ित पक्ष का आक्रोश मुखर हो गया। पीड़ित पक्ष के लोग ग्रामीणों के साथ ट्रैक्टर ट्राली में सवार हो थाने पहुंचे। जहां पीड़ित पक्ष ने थाने के गेट पर धरना दे हंगामा शुरू कर दिया। और मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी की मांग करने लगे।

अयोध्या शोध संस्थान का नाम बदला

लखनऊ, 14 दिसम्बर, (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश सरकार ने अयोध्या में संचालित अयोध्या शोध संस्थान को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने के लिए इस संस्थान का नाम तत्काल प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान करने का निर्णय लिया है। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने गुरुवार को बताया कि संस्कृति विभाग द्वारा संचालित अयोध्या शोध संस्थान 18 अगस्त, 1986 से कार्य कर रहा है। चूंकि रामायण का मूल आधार सनातन संस्कृति है, जिसकी जड़े वैदिक काल तथा उसके पूर्व से भी है। इसको दृष्टिगत रखते हुए वैदिक विज्ञान एवं साहित्य पर विस्तार से शोध करने की आवश्यकता है। इस परिप्रेक्ष में राज्य सरकार ने इस संस्थान का नाम बदलने का फैसला लिया है। उन्होंने बताया कि इसके नये नामकरण के संबंध में प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा धर्मार्थ कार्य मुकेश मेश्राम की ओर से शासनादेश जारी करा दिया गया है। अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान परिवर्तित करने का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में प्रभु श्रीराम से जुड़े रामकथा साहित्य पर गम्भीर अध्ययन एवं शोध कार्य करना है।

मवाना में चालक पिता-पुत्र से तमंचे के बल पर चालीस हजार की लूट

मवाना, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। नगर निवासी व्यापारी का भुगतान लेकर वापस लौट रहे पिकप गाड़ी चालक और उसके पुत्र से आल्टो कार सवार बदमाशों ने चालीस हजार रुपए लूट लिए। लूट की वारदात करने के बाद बदमाश नेशनल हाईवे की ओर फरार हो गए। पीड़ित की सूचना पर थाना पुलिस ने घंटे बदमाशों की धरपकड़ का प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। पीड़ित ने घटना की तहरीर दी है। जानकारी के अनुसार नगर के मोहल्ला मुन्नाला निवासी आजाद महिंद्रा पिकप गाड़ी चला कर अपने परिवार का पालन पोषण करता है। गुरुवार को आजाद अपने पुत्र रिहान के साथ कस्बे निवासी व्यापारी के यहां से गेहूं का बीज लेकर खतौली में गया था। खतौली से माल का भुगतान लेकर वापस मवाना लौट रहे थे 40। पीड़ितों ने बताया कि शाम करीब 3 बजे जैसे ही वे फलावदा रोड़ पर बाईपास से निकलकर बाग के पास पहुंचे तो एक साधू ने उनकी गाड़ी हाथ का इशारा कर रुकवाई। साधू ने उनसे एक रुपया मांगा। इस पर रिहान ने साधू को पाच रुपए दिए तो साधू ने पांच रुपए लेने से मना कर दिया। बकौल पीडित, तभी पीछे से आई एक सफेद आल्टो कार से दो बदमाश उत्तरे और तमचे से आतंकित करते हुए उनसे 40 हजार रुपए लूट लिए। साधू भी कार में बैठकर बदमाशों के साथ खतौली की ओर फरार हो गए। कार में एक महिला भी सवार थी। उसके बाद पीड़ित थाने पहुंचे और पुलिस को घटना की जानकारी दी।

बाघ दिखने से ग्रामीण आबादी में हड़कंप

शाहजहांपुर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां) उत्तर प्रदेश में शाहजहांपुर जिले के थाना मदनापुर क्षेत्र में जंगल से दूर ग्रामीण आबादी में टाइगर देखे जाने से हड़कंप मच गया। टाइगर देखने की सूचना के बाद मौके पर डीएफओ समेत तमाम अधिकारी पहुंच गए हैं। टाइगर को तलाशने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है साथ ही मौके पर पुलिस भी तैनात की गई है। प्रभागीय वन अधिकारी प्रखर गुप्ता ने गुरुवार को बताया कि थाना मदनपुर क्षेत्र के बुधवाना और चिराऊ गांव के लोगों ने गांव के बेहद किनारे टाइगर देखा था। ग्रामीणों की सूचना पर डीएफओ समेत वन विभाग के कई अधिकारी मौके पर पहुंचे। इसके अलावा थाने की पुलिस को भी मौके पर बुलाया गया। वन विभाग को मौके पर टाइगर के पैरों के निशान मिले हैं। डीएफओ का कहना है कि यह एक बड़ी बिल्ली या टाइगर के पैरों के निशान है।

शोध एवं शैक्षणिक क्षेत्र में एमओयू सीसीएसयू के हस्ताक्षर

मेरठ, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ एवं सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ के मध्य शोध एवं शैक्षणिक क्षेत्र में एमओयू हस्ताक्षर किया गया।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला एवं सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ के कुलपति प्रोफेसर के के सिंह सिंह की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में दोनों विश्वविद्यालय के मध्य एमओ यू हस्ताक्षर किया गया। इस एमओयू के हस्ताक्षर होने के पश्चात अब दोनों विश्वविद्यालय एक साथ मिलकर गुणवत्ता परख शोध, अध्ययन, शिक्षकों का आदान-प्रदान करेंगे। प्रोफेसर संगीता शुक्ला जी ने कहा कि इस एमओयू के तहत दोनों ही विश्वविद्यालय शोध के क्षेत्र में एक दूसरे का सहयोग करेंगे और नए मौके को तलाशेंगे। दोनों विश्वविद्यालय के शोधार्थी

एक दूसरे की प्रयोगशालाओं का लाभ उठा सकेंगे।प्रोफेसर के के सिंह ने कहा कि इस एमओयू के तहत दोनों विश्वविद्यालय के शिक्षक अपने-अपने अनुभव एक दूसरे से साझा कर सकेंगे इस समझौते की मदद से दोनों विश्वविद्यालय के शिक्षकों को एक दूसरे से नवाचार सीखने में मदद मिलेगी।

प्रोफेसर के के सिंह अपनी पूरी टीम के साथ जिसमे कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रोफेसर रामजी सिंह, वित्त नियंत्रक लक्ष्मी मिश्रा, शोध निदेशक प्रोफेसर अनिल सिरोही, प्रोफेसर लोकेश गंगवार, के साथ चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में पहुंचे।

आयोजन | *गृह विज्ञान विभाग की ओर से फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता का किया आयोजन*

छात्रों ने बिना ईंधन के ही बनाए विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजन

मेरठ, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। विनायक विद्यापीठ के गृह विज्ञान विभाग की ओर से फायरलेस कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि आर्मी पब्लिक स्कूल की गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष मोनिका राजधान रही। प्रतियोगिता की शुरुआत मुख्य अतिथि मोनिका राजधान द्वारा रिबन काट कर एवं सरस्वती मां की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर की गई इस दौरान महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अनुप्रिता शर्मा,

निदेशक इंजी. विकास कुमार, डीन एकता सिंधु, गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष दीपिका शर्मा सहायक प्रोफेसर तोफिदा सैफी, मानसी चौधरी, आकृति शर्मा, नीतू विहान के अलावा अन्य सभी विभागाध्यक्ष एवं फैकल्टी मेंबर्स मौजूद रहे। प्रतियोगिता में छात्राओं ने बिना किसी ईधन की सहायता से विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन जिसमे मिक्सड स्प्राउट चाट, ओरियो मिल्क केक, ब्रेड सैंडविच, वनीला केक, भेलपुरी, बनेना शेक, डार्क चाकलेट शेक, कोकोनट लड्डू, काजू कतली, वेज

■ विजेता टीमों को पुरस्कार देकर किया गया सम्मानित

■ 35 टीमों के 140 छात्र-छात्राओं ने लिया था हिस्सा

सलाद इत्यादि थे। महाविद्यालय की गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष दीपिका शर्मा ने बताया कि प्रतियोगिता में 35 टीमों (140 छात्र-छात्राएं) ने हिस्सा लिया जिसमे उन्होंने बिना ईंधन के विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट स्वादिष्ट व्यंजन तैयार कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि मोनिका राजधान, प्राचार्या डा. अनुप्रिता शर्मा एवं डीन एकता सिंधु निर्णायक की भूमिका में रही और उन्होंने छात्रों द्वारा बनाई गई डिशेज को चखा एवं उनसे संबंधित कुछ प्रश्न भी किये जिनका प्रतियोगियों ने उत्तर देकर निर्णायक मंडल को संतुष्ट किया अंत में निर्णायक मंडल द्वारा प्रथम स्थान गृह विज्ञान और एमबी विभाग को, द्वितीय स्थान आरएन इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, मोदीपुरम और विनायक विद्यापीठ के बीबीए विभाग को एवं तृतीय स्थान नानक गर्ल्स इंटर कालेज, कंकरखेड़ा को दिया। सभी विजेता टीमों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने सभी विजेता टीमों को अपनी शुभकामनाए दी। इस प्रतियोगिता में आर एन इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, मोदीपुरम, गुरुनानक गर्ल्स इंटर कॉलेज, कंकरखेड़ा के अलावा आसपास के कई स्कूल की छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अनुप्रिता शर्मा ने इस प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं को प्रतिभाग करने के लिए सराहा। निदेशक इंजि. विकास ने सभी अतिथियों को उनका बहुमूल्य समय देने के लिए धन्यवाद किया।

विवेचक के खिलाफ विभागीय जांच के आदेश

फर्रुखाबाद, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। आरोपियों को अनुचित लाभ देकर उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर में अंतिम आख्या कोर्ट में पेश की गई जिस पर न्यायालय विवेचक के खिलाफ सख्त हो गया। न्यायालय नें अंतिम आख्या निरस्त कर विवेचक के खिलाफ विभागीय जाँच के आदेश एसपी को दिए हैं। शहर कोतवाली के मोहल्ला चोभदारान निवासी नरेश पुत्र परमानन्द ने मोहल्ला नवाब दिलावर जंग निवासी मनोज कुमार पुत्र रावण गुरु व निकेश उर्फ नितेश निवासी चिलपुरा छत्तादलपतराय के खिलाफ उनके पुत्र गोविन्द की 5 हजार रुपए के तगादे के लिए जहरीला पदार्थ खिलाकर हत्या किये जानें का वाद न्यायालय में 2 सितम्बर 2009 को दर्ज कराया था। न्यायालय के आदेश पर विवेचक नें चार्जशीट दाखिल ना करके मामले में अंतिम आख्या न्यायालय में पेश कर दी। जिस पर शिकायत कर्ता नरेश नें न्यायालय में आपत्ति दाखिल की। आपत्ति आनें पर न्यायालय नें पुलिस की अंतिम आख्या निरस्त कर पुन: विवेचना के आदेश दिए है। जबकि विवेचक के खिलाफ विभागीय जांच के आदेश भी दिए हैं।

दुनिया रंग-बिरंगी

देशबन्धु | नई दिल्ली, शुक्रवार, 15 दिसम्बर, 2023, डाक पंजीयन संख्या :- DL (ND)-11/6176/2015-16-17

'द फ्रीलांसर-द कन्क्लूजन' में बेहद खास होगा मोहित रैना का किरदार

मुंबई। अपनी हिट स्ट्रीमिंग सीरीज 'द फ्रीलांसर' के दूसरे सीजन की रिलीज का इंतजार कर रहे अभिनेता मोहित रैना ने कहा कि सीरीज के दूसरे सीजन में अविनाश कामथ का उनका मुख्य किरदार अधिक लचीला और दृढ़ होगा। दूसरे सीजन में मोहित का किरदार अपने मिशन के आखिरी चरण पर निकलता है। यह सीरीज शिरीष थोराट की किताब 'ए टिकट टू सीरिया' पर आधारित है और इसका निर्देशन भाव धूलिया ने किया है। सीरीज में सुशांत सिंह, जॉन कोकेन, गौरी बालाजी और नवनीत मलिक, मंजिरी फडनिस और सारा जेन डायस भी हैं। अपने किरदार के बारे में बात करते हुए मोहित रैना ने कहा कि अब तक अविनाश कामथ को लेकर दर्शकों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी रही है।

भयंकर मानव संहारक साबित हो रहा है प्रदूषण

संसाधनों पर अत्यधिक दबाव के कारण प्रदूषण का खतरा ज्यादा

देहरादून, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। दुनियाभर में विभिन्न कारणों से प्रदूषण का कहर बढ़ता जा रहा है। इनमें मानवीय कारण भी हैं तो प्राकृतिक कारण भी हैं। विश्व की सबसे पुरानी स्वास्थ्य पत्रिकाओं में से एक 'द लैसेंट' की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन और भारत प्रदूषण के कहर से सर्वाधिक प्रभावित हैं। चूंकि जनसंख्या के मामले में भारत ने चीन को पीछे छोड़ दिया है तो प्रदूषण के काल ने भी चीन को पीछे छोड़ कर भारत को अपने पहले निशाने पर ले लिया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बढ़ती आबादी और आबादी की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने तथा उसकी सुख सुविधाओं के लिए प्रकृति के साथ बेतहासा छेड़छाड़ या संसाधनों पर अत्यधिक दबाव के कारण प्रदूषण का खतरा ज्यादा बढ़ रहा है।

लैसेंट पत्रिका द्वारा गठित लैसेंट कमीशन के एक नए अध्ययन के अनुसार प्रदूषण के कारण विश्व में 2019 में 90 लाख और भारत में 23 लाख से अधिक लोगों की असामयिक मृत्यु हुई। जबकि चीन में प्रदूषण से लगभग 21 लाख लोगों की मौत हुई। रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 16 लाख मौतें अकेले वायु प्रदूषण के कारण हुईं, और 5,00,000 से अधिक मौतें जल प्रदूषण के कारण हुईं। हालांकि घरेलू वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण जैसे अत्यधिक गरीबी से जुड़े प्रदूषण के कारण होने वाली मौतों में गिरावट आई है, लेकिन औद्योगिक

प्रदूषण, परिवेशी वायु प्रदूषण और विषाक्त रासायनिक प्रदूषण के कारण होने वाली मौतों में वृद्धि से इस गिरावट की भरपाई हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि सन् 2000 में पारंपरिक प्रदूषण से होने वाला नुकसान भारत की जीडीपी का 3.2 प्रतिशत था। तब से पारंपरिक प्रदूषण के कारण होने वाली मृत्यु दर में गिरावट के साथ ही आर्थिक नुकसान में भी काफी कमी आई है, लेकिन यह नुकसान अभी भी भारत की जीडीपी का लगभग 1 प्रतिशत है।

आनुवांशिक कारक भी बीमारियां पैदा करने के लिए जिम्मेदार प्रदूषण

दरअसल परिणाम की परवाह किए बिना हवा, भूमि, पानी और समुद्र में छोड़ा गया मानवजनित अवांछित कचरा ही प्रदूषण होता है जो कि मानव स्वास्थ्य और इस पृथ्वी के बातावरण के लिए एक खतरा है और आधुनिक मानव जगत को खतरे में डालता है। धूल कण और विभिन्न गैसें वायु को प्रदूषित कर रही हैं। ओजोन, सल्फर और नाइट्रोजन के ऑक्साइड, मीठे पानी का प्रदूषण, पारा, नाइट्रोजन, फास्फोरस, प्लास्टिक और पेट्रोलियम अपशिष्ट द्वारा समुद्र का प्रदूषण और सीसा, पारा, कीटनाशकों, औद्योगिक रसायनों, इलेक्ट्रॉनिक कचरे और रेडियोधर्मी कचरे द्वारा भूमि जहरीली हो रही है। वास्तव में हम जिस वातावरण में रहते हैं उसका हमारे स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है। घरेलू, कार्यस्थल, बाहरी और इनडोर के वातावरण कई अलग-अलग तरह से स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा कर सकते हैं। हवा की खराब गुणवत्ता जिसमें हम सांस ले सकते हैं, जो दूषित पानी हम पी सकते हैं और जिस परिवेश में हम रहते हैं, वह हमारे जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करता है। हालांकि आनुवांशिक कारक भी बीमारियां पैदा करने के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं, लेकिन पर्यावरणीय कारक विभिन्न बीमारियों के होने में अधिक सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

प्रदूषण नियंत्रण के लिए 1992 में भारत सरकार द्वारा अपनायी गयी नीति के विवरण में पारंपरिक उपाय के स्थान पर प्रदूषण की रोकथाम पर जोर दिया गया। साथ ही प्रदूषण की रोकथाम के लिए महत्वणपूर्ण तत्व के रूप में उपलब्ध श्रेष्ठ एवं व्यावहारिक तकनीक अपनाने की पहचान की गई। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय और इससे जुड़े संगठनो में प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण से संबंधित विभिन्नि कार्यक्रमों एवं योजनाओं का ध्यान, स्वच्छ और कम अपशिष्ट तकनीकों, अपशिष्ट न्यूनीकरण, पुनरूउपयोग या पुनरूचक्रीकरण, जल की गुणवत्ता में सुधार, पर्यावरण अंकेक्षण, प्राकृतिक संसाधन का लेखांकन, जन आधारित मानकों का विकास, संस्थागत एवं मानव संसाधन विकास आदि, विषयों पर जोर दिया गया है।

जो मुश्किल नहीं है, वो प्यार नहीं है : मौनी रॉय

मुंबई, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। 'टेम्पटेशन आइलैंड इंडिया' की मेजबानी कर रही अभिनेत्री मौनी रॉय ने शो में रिश्तों के भीतर की चुनौतियों पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि वास्तविकता एक बार फिर कल्पना से अधिक विचित्र साबित हुई है। हाल के एपिसोड में दर्शकों ने अर्जुन और चेष्टा के ब्रेकअप को देखा, जो भविष्य में एक साथ सामना करने के लिए निधि और मोहक के एकजुट निर्णय के साथ जुड़ा था। आगामी एपिसोड निशंक और चेतना तथा गार्गी और रौनक के भाग्य को उजागर करने का वादा करता है, जिससे उनके रिश्तों की जटिलताओं में स्पष्टता आएगी। पूरी यात्रा के दौरान दिलों की रानी, मौनी शो का एक अभिन्न हिस्सा रही हैं, और मेजबान करण कुंद्रा के साथ मार्गदर्शन प्रदान करती रही हैं। मौनी ने कहा कि जो कभी विला में रहते थे, वे अब सार्थक संबंधों में विकसित हो गए हैं। प्यार का अंतिम फैसला सुनाना आसान काम नहीं होगा। इस शो ने मात्र आकर्षण को रिश्तों के बारे में गहन अहसास में बदल दिया है। सही ही कहते हैं, जो मुश्किल नहीं है, वो प्यार नहीं है। उन्होंने आगे जोर देकर कहा कि मैंने शो में व्यक्तियों को महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजरते हुए, मजबूत और आत्मविश्वासी व्यक्तित्व के रूप में विकसित होते देखा है। साथ ही कई लोगों ने अपनी पूरी क्षमता से अपने संबंधों की गहराई का पता लगाया। मैं वास्तव में इन जोड़ों के जीवन में खुल रहे अध्यायों को देखने के लिए उत्सुक हूं। 'नागिन' फेम अभिनेत्री ने कहा कि टेम्पटेशन आइलैंड इंडिया पर विचार करते हुए मुझे कहना होगा कि वास्तविकता एक बार फिर कल्पना से अधिक अजनबी साबित हुई है। रोलर कोस्टर की सवारी के रूप में प्रस्तुत रिश्तों की गतिशीलता मेरी उम्मीदों से परे है।

हनीवेल 26 भारतीय छात्रों को अंतरिक्ष शिविर के लिए यूएस स्पेस एंड रॉकेट सेंटर ले गई

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। उपभोक्ता प्रौद्योगिकी कंपनी हनीवेल इंडिया ने गुरुवार को कहा कि वह अपने 13वें वार्षिक अंतरिक्ष शिविर के लिए 26 भारतीय छात्रों को यूएस स्पेस एंड रॉकेट सेंटर (यूएसएसआरसी) ले गई। बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद और मदुरै समेत भारतीय शहरों के चयनित छात्र उस समूह का हिस्सा थे, जिसमें 45 देशों और 29 अमेरिकी राज्यों और प्रदेशों के छात्र थे। जिनमें हनीवेल कर्मचारियों के बच्चे और चार्लोट मैक्लेनबर्ग काउंटी स्कूलों के छात्र शामिल हैं जो गैर-लाभकारी कैरोलिना यूथ गठबंधन में कॉलेज तैयारी कार्यक्रम का हिस्सा थे।

कंपनी ने वार्षिक हनीवेल लीडरशिप चैलेंज अकादमी (एचएलसीए) के लिए हंट्सविले (अलबामा) में यूएसएसआरसी में 237 छात्रों की मेजबानी की। हनीवेल के संचार उपाध्यक्ष जयमे मेयर ने एक बयान में कहा कि13 वर्षों से हनीवेल ने दुनिया भर के छात्रों को अंतरिक्ष शिविर की यात्रा करने और वास्तविक दुनिया के एसटीईएम अनुभवों में हिस्सा लेने के लिए प्रायोजित किया है, जिससे उनके तकनीकी, सहयोगात्मक और संचार कौशल बनाने में मदद मिलती है। कंपनी ने कहा कि 15-20 अक्टूबर और 22-27 अक्टूबर 2023 के दो सप्ताह के कार्यक्रम

में 16 से 18 वर्ष के हाई स्कूल के छात्रों को कोडिंग, कंप्यूटर विज्ञान, नेतृत्व व संचार कौशल और अंतरिक्ष विज्ञान में व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यूएसएसआरसी के सीईओ डॉ. किम्बर्ली रॉबिन्सन ने कहा कि इमर्सिव प्रोग्राम के माध्यम से, छात्र कौशल (स्किल) सीखते हैं, जो नई और अनूठी चुनौतियों से निपटने में उनके आगे के जीवन में काम आएंगे।

2010 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से हनीवेल ने अंतरिक्ष शिविर में भाग लेने के लिए 3,000 से अधिक छात्रों को प्रायोजित किया है।

ब्रह्मपुत्र वैली फिल्म फेस्टिवल के 8वें सीज़न की शानदार शुरुआत

गुवाहाटी, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। ब्रह्मपुत्र वैली फिल्म फेस्टिवल के 8वें सीजन की शुरूआत हो चुकी है। इसका आयोजन गुवाहाटी में स्थित ज्योति चित्रबन में हो रहा है। इस सीजन की शुरुआत फिल्म 'कूकी' से हुई। गौरतलब है कि निरी मीडिया ओपीसी प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले बनी फिल्म 'कूकी' डॉ. जुनमोनी देवी खौंड द्वारा निर्मित और प्रणब जे डेका द्वारा निर्देशित पहली हिंदी फिल्म है। डॉ. जुनमोनी देवी

खौंड की फिल्म कूकी एक गैर-असमिया लड़की और उसके जीवन संघर्ष, प्रेम और बाधाओं की कहानी है जो असम की संस्कृति के विभिन्न रूपों को बखूबी दिखाती है। इस फिल्म में बॉलीवुड अभिनेता राजेश तैलंग, दीपानिता सरमा, रितु शिवपुरी, देवोलीना भट्टाचार्य, बोधिसत्व सरमा और असम के अभिनेता कमल लोचन, विभूति भूषण हजारिका, प्रीति कंगकाना, रंजीब लाल बोरा ने अभिनय किया है। स्क्रीनिंग में मौजूद दर्शकों ने 'कूकी' की मुख्य कलाकार रितिशा खौंड को उनके साहसी और चुनौतीपूर्ण अभिनय के लिए खूब सराहा। कई कलाकारों ने कहा है कि अभिनेत्री रितिशा आने वाले समय में इंडस्ट्री में अपनी एक अलग पहचान और जगह बनाने में कामयाब होंगी। बता दें कि रितिशा इससे पहले लोकप्रिय वेब सीरीज 'इललीगल' में 'जैक' के रूप में निभाए गए अपने किरदार के लिए सुर्खियों में आई थीं। डॉ. जुनमोनी देवी खौंड 'तुला अरु तेजा', 'सुमा परसाटे' जैसी असमिया फिल्में और असमिया, हिंदी, बंगाली और भोजपुरी भाषा में वेबसीरीज 'अवैध', 'रोल प्ले', 'रूपांतर' और 'गैंगस्टार बबुआ' जैसी वेबसीरीज बनाकर सांस्कृतिक जगत में योगदान दे चुके हैं।

सरिस्का में पर्यटकों को लुभाते हैं मगरमच्छ

मगरमच्छ का कुनबा बढ़कर पहुंचा 300 के पार

अलवर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। राजस्थान में अलवर शहर के समीप सिलीसेड झील के करीब बहाव क्षेत्र में बने में जलाशय करीब 300 मगरमच्छ इन दिनों पर्यटकों को काफी लुभाते हैं लेकिन सुरक्षा अभाव में

उनका जीवन भी खतरे में संभव है।

सरिस्का प्रशासन ने उनकी सुरक्षा के लिए कोई बंदोबस्त नहीं किए हैं। सरिस्का अभयारण्य से दस साल पहले करीब आधा दर्जन मगरमच्छ इस झील के पास लाकर छोड़ा था। अब इनका कुनबा बढ़कर 300 पार पहुंच गया।

सर्दी के मौसम में सिलिसेढ़ झील के समीप बनी एक ताल में बस रहा मगरमच्छों का कुनबा धूप सीखने के लिए बाहर जमीन पर आ जाते हैं जिन्हें देखने के लिए रोजाना सैकड़ो की तादाद में पर्यटक पहुंच रहे हैं। यह मगरमच्छ अलवर जिले के ही नहीं अपितु बाहर से भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं वही सरिस्का प्रशासन के द्वारा सुरक्षा के यहां कोई इंतजाम नहीं होने के कारण कभी भी बड़ा हादसा होने की संभावना बनी रहती है। इस साल में लगभग 300 से अधिक मगरमच्छ विचरण करते हैं जो की पाल के आसपास उग रही बड़ी-बड़ी घासो के अंदर छिपे रहते हैं, जिन्हें देखने के लिए रोजाना काफी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। ऐसे में कोई व्यक्ति मगरमच्छ का शिकार न बन जाए इसलिए सरिस्का प्रशासन को चाहिए कि यहां सुरक्षा की दृष्टि से या तो कोई गार्ड तैनात करें या फिर इस पाल के चारों तरफ जालियां लगाई जाए जिससे कि कोई हादसा होने की संभावना न हो ।

गौरतलब है कि कुछ वर्ष पहले सरिस्का प्रशासन ने यहां पर पर्यटकों की जंगल सफारी भी शुरू की थी लेकिन आज वह बंद है। पास ही में बना रहे एक होटल संचालक ने बताया कि सर्दियों के मौसम में मगरमच्छ धूप सेकने के लिए बाहर जमीन पर आ जाते हैं जिन्हें देखने के लिए रोजाना यहां काफी संख्या में लोग आते हैं जो कि इन मगरमच्छों को पत्थर भी मारते हैं। ऐसे में कभी भी कोई घटना घट सकती है।

पांच वर्षीय बालिका का नि:शुल्क कृत्रिम अंग से जीवन हुआ आसान

उदयपुर, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। राजस्थान के उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान ने पांच साल की एक बालिका के पांव को नि:शुल्क कृत्रिम अंग पहना कर उसके उठने, बैठने और चलने की मुश्किल को आसान कर दिया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि राजस्थान में नीम का थाना की भूमि यादव का बाएं पांव जन्मजात दायां पांव से करीब 10 इंच छोटा था। जिससे उसे उठने, बैठने व चलने में न केवल परेशानी होती थी, बल्कि दूसरे पांव के भी घुटने से नाकाम होने की आशंका थी।

उन्होंने बताया कि गम 5 नवम्बर को उसके दादा-दादी भूमि को संस्थान में लेकर आए थे। इसके बाद संस्थान के विशेषज्ञ चिकित्सकों एवं कृत्रिम अंग निर्माण विभाग के तकनीशियनों ने विशेष कृत्रिम अंग बनाकर चार दिन तक उसे उठने, बैठने एवं चलने का प्रशिक्षण दिया। भूमि यादव अब वह बिना सहारे एवं दायां पांव को मोड़े बिना आसानी से चल लेती है।

ग्रामीण ने पशुप्रेम की पेश की अनूठी मिसाल

पालतू कुतिया के बच्चे देने पर किया भोज का आयोजन

महोबा, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में महोबा जिले के कुलपहाड़ क्षेत्र में एक ग्रामीण ने पशुप्रेम की अनूठी मिसाल पेश करते हुए पालतू कुतिया के बच्चे देने पर न सिर्फ समारोह आयोजित किया बल्कि गांव के 250 लोगों को दावत देकर जश्न मनाया। जिले में यह कार्यक्रम चर्चा का विषय बना है।

गांव के 250 लोगों को दावत देकर जश्न मनाया

मामला यहां बेलाताल विकास खंड के अकौना गांव का है। जहां पेशे से किसान 40 वर्षीय राजेन्द्र यादव की पालतू कुतिया चम्पी ने पिछले दिनों एक साथ आठ बच्चों को जन्म दिया था। घर में आठ पपी आने पर परिवार के लोग खासे उल्लसित थे। यही वजह रही कि राजेन्द्र ने बुधवार को खास समारोह का आयोजन किया जिसमें किसान के परिजन एवं रिश्तेदार के साथ ग्रामीण सम्मलित हुए। राजेन्द्र ने इस मौके पर कुआं पूजन कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें कुतिया को महावर आदि लगा कर न सिर्फ सजाया संवारा गया बल्कि उसे गांव में चंगेल भी घुमाया, जहां बैंड बाजों ओर डीजे की धुनों पर ग्रामीणों ने जमकर नृत्य किया। परंपरागत तरीके से सभी रस्म निर्वहन होने के उपरांत यहां करीब 250 लोगों की दावत भी हुई जिसमें

विभिन्न प्रकार के लजीज पकवान परोसे गए। अकौना की ग्राम प्रधान उमा देवी कुशवाहा ने बताया कि गांव में अपनी तरह के इस अनूठे आयोजन में सभी लोगों से पूरे जोश-खरोश के साथ शिरकत की। ग्रामीणों ने किसान राजेन्द्र यादव के पशु प्रेम को जमकर सराहा। उधर किसान राजेन्द्र ने कहा कि उसकी पालतू कुतिया बेजुबान पशु अवश्य है किंतु अपने आचरण से पूरे घर की चहेती है। परिवार के सभी सदस्य उससे बहुत प्रेम करते हैं और घर का सदस्य मानते है। यही वजह रही कि उसके बच्चे होने पर परिवार ने जश्न का आयोजन किया।

आईएफएफके में 'अट्टम' की आखिरी स्क्रीनिंग के लिए तैयार

तिरुवनंतपुरम, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। केरल अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफके) में आनंद एकार्शी की पहली फिल्म आट्टम (द प्ले) गुरुवार को अपनी आखिरी स्क्रीनिंग के लिए तैयार है। फिल्म को महोत्सव में पहले ही दर्शकों का भारी समर्थन मिला है। यह फिल्म एक ऐसी महिला के इर्द-गिर्द घूमती है जिसे उस स्थान पर यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है जिसे वह सुरक्षित मानती थी।

महोत्सव में इसके अलावा 66 अन्य फिल्में भी आज 14 स्क्रीनों पर दिखाई जाएंगी। इसमें आठ ऑस्कर-नामांकित फिल्में शामिल हैं। इनमें से सात फिल्मों की आखिरी स्क्रीनिंग हो रही है, जिनमें टाइगर स्ट्राइप्स, परफेक्ट डेज़, अबाउट ड्राई ग्रास, द डेलिनक्वेंट्स, फॉलन लीव्स, द सेटलर्स और ब्लागाज़ लेसन्स शामिल हैं। आईएफएफके में अट्टम के अलावा, आठ मलयालम फिल्मों की भी उस दिन आखिरी स्क्रीनिंग हुई। इसमें वलसाई परवाकल, फैमिली, एन्नेन्नम, कैथल-द कोर, फाइव फर्स्ट डेट्स, बी 32 मुथल 44 वेरे, थडावु और ओ बेबी शामिल हैं। मलयालम के दो क्लासिक्स एम टी वासुदेवन नायर द्वारा लिखित निर्मल्यम और एके लोहितादास द्वारा लिखित भूतक्कन्नडी भी गुरुवार को क्रमश: विशेष स्क्रीनिंग और रीस्टोर क्लासिक्स श्रेणियों

के तहत प्रदर्शित किए जाएंगे।

महोत्सव के सातवें दिन विश्व सिनेमा श्रेणी के तहत करीम कासेम की थर्ड, अब्बास अमिनी की एंडलेस बॉर्डर्स और मौली मैनिंग वॉकर की हाउ टू हैव सेक्स सहित 24 फिल्में दिखाई जाएंगी। इनमें से 23 फिल्मों की आखिरी स्क्रीनिंग हो रही है। उत्तम कामती की खेरवाल, हर्षद नलवाडे की फॉलोअर, डोमिनिक संगमा की रैप्चर, और शाहरुख खान चावड़ा की कायो कायो कलर की भी इंडियन सिनेमा नाउ श्रेणी के तहत उनकी आखिरी स्क्रीनिंग होगी। महोत्सव में नथालिया सियाम की फुटप्रिंट्स ऑन वॉटर, मिंजू किम की ए लेटर फ्रॉम क्योटो, और अमांडा नेल ईयू की टाइगर स्ट्राइप्स फीमेल गेज़ श्रेणी के अंतर्गत दिखाई जाने वाली फ़िल्में हैं। अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता अनुभाग के तहत 14 दिसम्बर को कनु बहल की आगरा, डॉन पलाथारा की फैमिली, शोकिर खोलिकोव की संडे, लिल्लाह हल्ला की पावर एली सहित 11 फिल्में भी दिखाई जाएंगी।

जमती डल झील से खुशी पर बिना बर्फ की सर्दी बढ़ा रही परेशानी

■ करीब 40 दिनों तक चलता है चिल्लेकलां ■ 40 दिनों तक न्यूनतम और अधिकतम तापमान, दोनों में गिरावट आएगी

■ सुरेश एस डुग्गर

जम्मू, 14 दिसम्बर (देशबन्धु)। कश्मीर की विश्व प्रसिद्ध डल झील जमने लगी है क्योंकि भयानक सर्दी का आलम यह है कि अन्य पानी के स्रोत्र तो जमने ही लगे हैं डल झील भी इससे अछूती नहीं है। यही कारण था कि जैसे जैसे सर्दी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे विश्व प्रसिद्ध डल झील की ऊपरी सतह भी जमती जा रही है। इतना जरूर है कि कश्मीर आने वाले पर्यटकों के लिए यह नजारा बेहद ही दिलकश है जिन्होंने पहली बार इस झील को जमते हुए देखा है। पर कश्मीरियों की परेशानी इस बार बिना बर्फ वाली सर्दी है। उनकी चिंता यह है कि अगर बर्फबारी न हुई तो वे कई परेशानियों से घिर जाएंगें। सेना पहले ही एलओसी पर परेशान है क्योंकि कम

बर्फबारी के कारण वे दर्रे खुले हुए हैं जहां से आतंकी घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे हैं। तो सूखी सर्दी बीमारियों को न्यौता दे रही है। जबकि बर्फबारी न होने की आशंका की स्थिति में गर्मियों में पानी और बिजली की किल्लत का सामना भी करना पड़ सकता है। वैसे चिल्लेकलां के दौरान डल झील का जमना कोई नई बात नहीं है। पर कश्मीर में अभी चिल्लेकलां (भयानक सर्दी का मौसम) का आगमन नहीं हुआ है पर कश्मीरी अभी से ठंड से चिल्लाने लगे हैं। ऐसे में उन्हें चिंता है कि इस बार चिल्लेकलां के दौरान कितनी भयानक सर्दी पड़ेगी।

कश्मीर में 21 और 22 दिसम्बर की रात से सर्दी के मौसम की शुरूआत मानी जाती है। करीब 40 दिनों तक के मौसम को चिल्लेकलां कहा जाता है। और पिछले करीब तीन सालों से इस दिन हुई बर्फबारी कई सालों के बाद सही समय पर होने पर खुशी जरूर जाहिर की जाती रही है। दरअसल कुदरत का समय चक्र सुधरने पर कश्मीरियों की परेशानियां बढ़ गई क्योंकि पिछले कई सालों से बर्फबारी के समय पर न होने के कारण वे चिल्लेकलां को ही भुला बैठे थे।

जानकारी के लिए चिल्लेकलां करीब 40 दिनों तक चलता है और उसके बाद चिल्ले खुर्द और फिर चिल्ले बच्चा का मौसम आ जाता है। अभी तक चिल्लेकलां के दौरान 1986 में कश्मीर में तापमान शून्य ये 9 डिग्री नीचे गया था जब विश्व प्रसिद्ध डल झील दूसरी बार जम गई थी। वैसे चिल्लेकलां के दौरान कश्मीर के तापमान में जो गिरावट देखी गई है उसके मुताबिक तापमान शून्य से 5 व 7 डिग्री ही नीचे जाता है। पर इस बार अभी से तापमान शून्य से 5.4 डिग्री नीचे है। यही नहीं श्रीनगर शहर गुलमर्ग से भी ज्यादा ठंडा है। श्रीनगर स्थित मौसम विभाग ने कहा कि 24 दिसम्बर के बाद ही जबरदस्त हिमपात की संभावना है। अगले 40 दिनों तक न्यूनतम और अधिकतम तापमान, दोनों में गिरावट आएगी। हिमपात और बारिश भी होगी। कुछ वर्षों के दौरान चिल्ले कलां के बजाय चिल्ले खुर्द और चिल्ले बच्चा के दौरान सबसे ज्यादा हिमपात हुआ है।

अपने क्षेत्र की अस्मिता के लिए दिल्ली पहुंचे पांगी जनजाति के लोग

नई दिल्ली। पांगी विधानसभा क्षेत्र को फिर से बहाल करने और चेहनी पास सुरंग के निर्माण की मांग को लेकर हिमाचल प्रदेश में चंबा के पांगी से पंगवाल एकता मंच के लोग देश की राजधानी नई दिल्ली पहुंचे हैं। प्रेस क्लब ऑफ इंडिया, दिल्ली में प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए गैर सरकारी संगठन पंगवाल एकता मंच के अध्यक्ष त्रिलोक ठाकुर ने कहा कि उनकी ये दो प्रमुख मांगें हैं। उन्होंने कहा कि उनका संगठन 25 हजार पंगवाल जनजाति का प्रतिनिधत्व करता है। पांगी, हिमाचल प्रदेश का सबसे दुर्गम और हिमाच्छादित जनजातीय बहुल क्षेत्र है। पंगवाल जनजाति, देश के संविधान की 5वीं अनुसूची में एक स्वतन्त्र जनजाति है।

देशबन्धु

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढने वाले शेयर

रियल्टी	3.80 प्रतिशत
आईटी	3.21 प्रतिशत
टेक	2.72 प्रतिशत
दूरसंचार	2.14 प्रतिशत
कमोडिटीज़	0.75 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

सन फार्मा	1.90 प्रतिशत
मारुति	1.87 प्रतिशत
टाइटन	1.71 प्रतिशत
इंडसइंड बैंक	1.71 प्रतिशत
रिलायंस	1.43 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	47,310
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	31,400
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	70,096
वायदा	70,183
चांदी सिक्का लिवाली	870
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दडा	2500-2600
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

चावल

चीनी एस	3640-3740
चीनी एम	3800-3900
मिल डिलीवरी	3520-3620
गुड़	4300-4400

दाल-दलहन

चना	6450-6550
दाल चना	7450-7550
मसूर काली	7800-7900
उड़द दाल	10600-10700
मूंग दाल	9900-10000
अरहर दाल	10400-10500

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में जारी तेजी के बीच घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज टिकाव रहा, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 89.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

खाद्य, विनिर्मित उत्पादों की महंगाई से थोक मुद्रास्फीति सात माह बाद शून्य से ऊपर

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति खाद्य और विनिर्मित वर्ग की विभिन्न वस्तुओं की कीमतों में तेजी के चलते नवंबर, 2023 में बढ़ कर 0.26 प्रतिशत रही। यह लगातार सात महीने से शून्य के नीचे थी। थोक मुद्रास्फीति लम्बे समय बाद शून्य से ऊपर आई है। इसका अर्थ है कि बाजार में थोक कीमतों में एक साल पहले की तुलना में वृद्धि हुई है। अक्टूबर, 23 में थोक मुद्रास्फीति शून्य से 0.52 प्रतिशत और पिछले वर्ष नवंबर में 6.12 प्रतिशत थी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा गुरुवार को जारी प्रारंभिक आंकड़ों के अनुसार सभी वर्ग की वस्तुओं संबंधी थोक मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 2011-12=100) इस वर्ष नवंबर में 152.9 अंक रहा जो एक माह पूर्व 152.1 अंक था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार नवंबर में प्रथमिक वस्तुओं की कीमतों में सालाना आधार पर 4.76 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी जबकि ईंधन और बिजली का थोक मूल्य स्तर 4.61 प्रतिशत नीचे रहा और विनिर्मित उत्पादों की कीमतें 0.64 प्रतिशत नीचे रहीं। एक माह पहले ईंधन-और बिजली वर्ग में सामान्य कीमत स्तर एक साल पहले की तुलना में 2.47 प्रतिशत नीचे और विनिर्मित उत्पादों का कीमत स्तर 1.13 प्रतिशत नीचे है। आंकड़े दर्शाते हैं कि इन तीनों ही श्रेणियों में थोक कीमतों में नवंबर में तेजी आयी है। दो दिन पहले आए खुदरा मूल्य सूचकांक के अनुसार नवंबर में खुदरा मुद्रास्फीति 5.55 प्रतिशत पर पहुंच गयी जो अक्टूबर में 4.8 प्रतिशत थी। थोक मूल्य सूचकांक के आंकड़ों के अनुसार नवंबर,23 में खाद्य वस्तुओं की कीमतें सालाना आधार पर 8.18 प्रतिशत ऊंची थी। इनमें अनाजों की मुद्रास्फीति 7.12 प्रतिशत ऊंची रही। नवंबर में चावल का थोक भाव एक साल पहले से 10.44 प्रतिशत , दालें 21.64 प्रतिशत , प्याज के भाव 101.24 प्रतिशत ऊंचे चल रहे हैं। आलू का थोक मूल्य नवंबर,22 की तुलना में 27.22 प्रतिशत नीचे है। भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति नीति निर्धारण में खुदरा मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर ध्यान देती है। उसके समाने खुदरा मुद्रास्फीति को 2-6 प्रतिशत की सीमा में रखने का लक्ष्य है। रिजर्व बैंक पिछली कुछ द्वैमासिक समीक्षाओं में नीतिगत ब्याज दर को 6.5 प्रतिशत के स्तर पर अपरिवर्तित रखा है।

मुंबई के यूजर ने इस साल स्विगी पर 42.3 लाख रुपए का खाना ऑर्डर किया

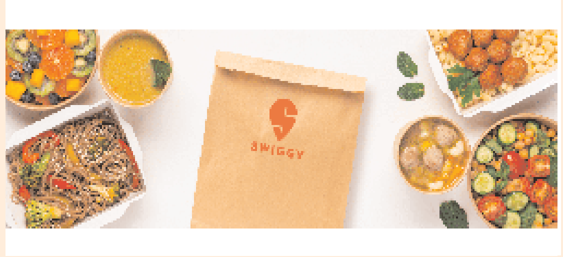

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। 'हाउ इंडिया स्विगी' ड इन 2023' में इस साल की खास बातों को उजागर करते हुए ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म ने गुरुवार को बताया कि मुंबई के एक अकेले यूजर ने इस साल खाने के ऑर्डर पर 42.3 लाख रुपए खर्च किए। प्लेटफ़ॉर्म को 10 हजार रुपए से अधिक के सबसे ज्यादा ऑर्डर चेन्नई, दिल्ली और हैदराबाद के यूजर अकाउंट्स से प्राप्त हुए। बिरयानी लगातार आठवें वर्ष स्विगी पर सबसे अधिक ऑर्डर किए जाने वाले व्यंजन के रूप में चार्ट में शीर्ष पर रही। प्लेटफॉर्म को 2023 में प्रति सेकंड बिरयानी के 2.5 ऑर्डर मिले। शाकाहारी बिरयानी के मुकाबले चिकन बिरयानी का ऑर्डर 5.5 गुना रहा। स्विगी ने कहा, 'प्लेटफॉर्म पर बिरयानी को आश्चर्यजनक रूप से 40,30,827 बार खोजा गया है। हर छठी बिरयानी हैदराबाद से ऑर्डर की गई थी और बिरयानी ब्रिगेड का चैंपियन शहर का एक स्विगी यूजर रहा जिसने इस साल 1,633 बिरयानी का ऑर्डर दिया था - रोजाना चार बिरयानी से अधिक।' दुर्गा पूजा के दौरान गुलाब जामुन के 77 लाख से ज्यादा ऑर्डर मिले। गरबा के साथ-साथ, नवरात्रि के सभी नौ दिनों के शाकाहारी ऑर्डरों में मसाला डोसा सबसे पसंदीदा था। इडली ने भी एक समय सर्वोच्च स्थान हासिल किया जब हैदराबाद के एक ग्राहक ने उस पर छह लाख रुपये खर्च किए।

सभी के पसंदीदा चॉकलेट केक के लिए 85 लाख ऑर्डर के साथ बेंगलुरु को 'केक कैपिटल' के रूप में सम्मानित किया गया। कंपनी ने कहा कि 2023 में वेलेंटाइन डे के दौरान, भारत ने प्रति मिनट 271 केक का ऑर्डर दिया। स्विगी इंस्टामार्ट पर जयपुर के एक यूजर ने एक ही दिन में 67 ऑर्डर दिए। सबसे बड़ा अकेला ऑर्डर 31,748 रुपये का था। चेन्नई के इस यूजर ने कॉफ़ी, जूस, कुकीज़, नाचोज़ और चिप्स का स्टॉक कर लिया। इस वर्ष, स्विगी के डिलीवरी पार्टनर ने इलेक्ट्रिक वाहनों और साइकिलों का उपयोग करके प्रभावशाली 16.642 करोड़ हरित किलोमीटर की दूरी तय की, जिससे टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल डिलीवरी में योगदान मिला। चेन्नई के डिलीवरी पार्टनर वेंकटसेन और कोच्चि की सैंथिनी ने 10,360 और 6,253 ऑर्डर डिलिवर किये। अतिरिक्त प्रयास करते हुए, स्विगी के एक डिलीवरी पार्टनर ने फास्ट फूड पहुंचाने के लिए 45.5 किमी की यात्रा की।

ई-कॉमर्स कंपनी इट्सी ने की 225 कर्मचारियों की छंटनी

सैन फ्रांसिस्को, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। ई-कॉमर्स कंपनी इट्सी अपने कारोबार के पुनर्गठन और लागत को सुव्यवस्थित करने के लिए 11 फीसदी कर्मचारियों की छंटनी कर रही है। सीएनबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, छुट्टियों के मौसम में इट्सी में लगभग 225 कर्मचारी अपनी नौकरियां खो देंगे, इससे इसके मुख्य बाज़ार में कर्मचारियों की संख्या लगभग 1,770 रह जाएगी। इट्सी के सीईओ जोश सिल्वरमैन ने एक ईमेल में कर्मचारियों को बताया, 'हम एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण मैक्रो और प्रतिस्पर्धी माहौल में काम कर रहे हैं, और (सकल व्यापारिक बिक्री) 2021 से अनिवार्य रूप से स्थिर बनी हुई है।' उन्होंने कहा, इसका मतलब है कि हम अपने विक्रेताओं को अधिक बिक्री नहीं ला रहे हैं, जो कि उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज है, जो हम कर सकते हैं। साथ ही, कर्मचारियों के खर्च में वृद्धि हुई है, भले ही हमने लागत में कटौती के उपाय पेश किए हैं और भर्ती योजनाओं को रोक दिया है। घोषणा के बाद इट्सी स्टॉक 2 प्रतिशत गिरकर बंद हुआ, जबकि पहले दिन में इसमें 7 प्रतिशत की गिरावट आई थी। छंटनी के कारण इट्सी की लागत 25-30 मिलियन डॉलर के बीच होगी, इसमें विच्छेद भुगतान, कर्मचारी लाभ और अन्य संबंधित लागतें शामिल हैं। पुनर्गठन से सार्थक परिचालन दक्षता और लागत बचत और/या लागत से बचाव की उम्मीद है।

कोटक महिंद्रा बैंक की स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना के लिए आईआईटी कानपुर से साझेदारी

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (आईआईटीके) और कोटक महिंद्रा बैंक ने आज कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी - आईआईटी कानपुर में शुरू करने की घोषणा की। एकीकृत स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना के लिए बैंक ने आईआईटी कानपुर के साथ साझेदारी की है। करने की घोषणा की। आईआईटी कानुपर के निदेशक प्रो एस गणेश और बैंक के अध्यक्ष प्रकाश आप्टे ने आज यहां यह घोषणा की। इस मौके पर प्रो गणेश ने कहा 'स्थिरता हमारे समय की सबसे प्रमुख वैश्विक चुनौतियों में से एक बनकर उभरी है जिसके लिए विभिन्न हितधारकों को एक साथ काम करने की आवश्यकता है और इस मिशन में हमारे जैसे शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। आईआईटी कानपुर की कई अग्रणी पहलों को जोड़ते हुए और कोटक महिंद्रा बैंक के उदार सीएसआर फंडिंग समर्थन के साथ, संस्थान विचारशील नेतृत्व प्रदान करने, स्थिरता कार्यों के लिए ठोस समाधान विकसित करने और भविष्य की पीढ़ियों को तैयार करने के समग्र दृष्टिकोण के साथ सतत विकास का नेतृत्व करने के लिए 'कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी' की स्थापना कर रहा है।

श्री आप्टे ने कहा, हमें आईआईटी कानपुर के सहयोग से कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। यह सहयोग आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय मापदंडों पर सकारात्मक प्रभाव के माध्यम से समुदायों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के हमारे सीएसआर दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो भारत के सामाजिक विकास उद्देश्यों और संयुक्त राष्ट्र के एसडीजी के अनुरूप है। हमारा मानना है कि इस स्कूल के निर्माण से कोटक और आईआईटी कानपुर दोनों को एक परंपरा विकसित करने और स्थिरता की दिशा में काम करने का सही समय पर अवसर मिल है, जो आज हमारे सामने अस्तित्व को बचाने की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है।

कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी का नेतृत्व दुनिया भर के अनुभवी प्रोफेसरों और अग्रणी उद्योग विशेषज्ञों द्वारा किया जाएगा।

सार संक्षेप

घरेलू बी2बी ई-कॉमर्स यूनिकॉर्न उड़ान ने 34 करोड़ डॉलर जुटाए

नई दिल्ली। बी2बी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म उड़ान ने गुरुवार को कहा कि उसने ब्रिटेन स्थित बचत और निवेश कंपनी एमएंडजी प्रूडेंशियल के नेतृत्व में सीरीज ई राउंड में 34 करोड़ डॉलर (इक्विटी और परिवर्तनीय नोट्स का मिश्रण) जुटाए हैं। इस राउंड में मौजूदा निवेशकों लाइटस्पीड वेंचर पार्टनर्स और डीएसटी ग्लोबल ने भी भाग लिया। उड़ान ने कहा कि इसका उद्देश्य ग्राहक अनुभव, बाजार में पैठ, रणनीतिक विक्रेता साझेदारी को मजबूत करने और आपूर्ति-श्रृंखला तथा क्रेडिट की दीर्घकालिक क्षमताओं को मजबूत करने के लिए नए फंड की जरूरत को पूरा करना है। उड़ान के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी वैभव गुप्ता ने कहा, 'ताजा फंडिंग 'विकास और लाभप्रदता की हमारी निरंतर यात्रा को सक्षम बनायेगी, जिससे हम अगले एक-डेढ़ साल में सार्वजनिक-बाजार के लिए तैयार हो जायेंगे हैं। 'सन् 2016 में स्थापित बेंगलुरु स्थित उड़ान ने अब तक 1.8 अरब डॉलर की फंडिंग जुटाई है। यूनिकॉर्न ने कहा कि नवीनतम फंडिंग दौर नियामक अनुमोदन के अधीन है। पिछले साल, उड़ान ने नए निवेशकों को परिवर्तनीय नोट जारी करके 20 करोड़ डॉलर का ऋण जुटाया था। गुप्ता ने कहा, सीरीज़ ई राउंड हमारी बैलेंस शीट को मजबूत करता है और हमारी व्यावसायिक योजना को पूरी तरह से वित्तपोषित करता है। क्षेत्रीय-संचालित डिज़ाइन हमें अपने ग्राहकों के करीब लाएगा और हमारे संचालन को अधिक चुस्त और कुशल बनायेगा।

लावा ने लांच किया युवा3 प्रो स्मार्टफोन

नई दिल्ली। मोबाइल फोन बनाने वाली कंपनी लावा इंटरनेशनल ने आज किफायती श्रेणी में अपना नया स्मार्टफोन युवा 3 प्रो लांच करने की घोषणा की जिसमें आठ जीबी रैम और 50 एमपी का डुअल रियर कैमरा है। ।

कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि 8999 रुपए मूल्य पर लाँच इस स्मार्टफोल का प्रीमियम ग्लास फिनिश डिजाइन है। इसमें पंच होल डिस्प्ले है। इसका स्क्रीन 6.5 इंच का है और इसमें आठ जीबी का रैम और 128 जीबी रॉम है। इसमें आठ जीबी वर्चुअल रैम की सुविधा भी मिलती है। इस फोन में 50 एमपी का डुअल एआई रियर कैमरा और आठ एमपी का फ्रंट कैमरा है। यूएनआईएसओसी टी 616 ऑक्टा कोर प्रोसेसर आधारित इस स्मार्टफोन में 5000 एमएएच की बैटरी है जो 18 वॉट चार्जिंग तकनीक से लैस है। इसकी बिक्री आज से ही कंपनी की वेबसाइट और ऑफलाइन स्टोर पर शुरू हो गयी है।

रियलमी ने लांच किया सी 67 5जी स्मार्टफोन

नई दिल्ली। स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनी रियलमी ने आज भारतीय बाजार में नया 5 जी स्मार्टफोन रियलमी सी 67 लाँच करने की घोषणा की जिसमें 50 एमपी का एआई कैमरा है। कंपनी ने इसे एक वर्चुअल कार्यक्रम में लाँच करते हुये कहा कि मीडियाटेक माइमेंसिटी 6100 प्लस 5 जी चिपसेट वाले इस 5 जी स्मार्टफोन में 5000 एमएएच की बैटरी है जो 33 वॉट सुपरवूक फास्ट चार्जिंग से लैस है जिसेस मात्र 29 मिनट में यह फोन 50 प्रतिशत चार्ज हो सकता है।

सेंसेक्स 70 और निफ्टी 21 हजार अंक के पार

मुंबई, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। अमेरिकी फेड रिजर्व के ब्याज दरों में कटौती करने के संकेत से विश्व बाज़ार की तेजी से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत आज शेयर बाजार ने इतिहास रच दिया और सेंसेक्स पहली बार 70 हजार एवं निफ्टी 21 हजार अंक को पार कर गया। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 929.60 अंक अर्थात 1.34 प्रतिशत की उद्दन भरकर सार्वकालिक उच्चतम स्तर 70 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर के पार 70514.20 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 256.35 अंक यानी 1.23 प्रतिशत की छलांग लगाकर अबतक के रिकॉर्ड 21182.70 स्तर पर रहा।

इस दौरान बीएसई का मिडकैप 1.06 प्रतिशत की तेजी के साथ 36,223.86 अंक और स्मॉलकैप 0.62 प्रतिशत चढ़कर 41,841.93 अंक पर रहा। बीएसई में कुल 3892 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2064 में लिवाली जबकि 1702 में बिकवाली हुई वहीं 126 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी की 38 कंपनियों के शेयर हरे जबकि शेष 12 लाल निशान पर बंद हुए। विश्लेषकों के अनुसार, अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल ब्याज दरों में कटौती करने के स्पष्ट संदेश ने आने वाले दिनों में एक स्मार्ट सांता क्लॉज़ रैली के लिए प्लेटफार्म तैयार कर दिया है। यह चुनाव पूर्व रैली को भी गति दे सकता है, जो बाजार को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है। फेड के कल के संदेश का अर्थ यह है कि सख्ती का दौर खत्म हो गया है और वर्ष 2024 में तीन बार ब्याज दरों में कटौती संभव है। अमेरिका में 10 वर्षीय यील्ड में चार प्रतिशत की गिरावट से घरेलू बाजार में बड़े पूंजी प्रवाह को बढ़ावा मिलेगा। यह पूंजी लार्ज कैप ख़ासकर बैंकिंग और आईटी जैसे समूहों के लिए होगा।

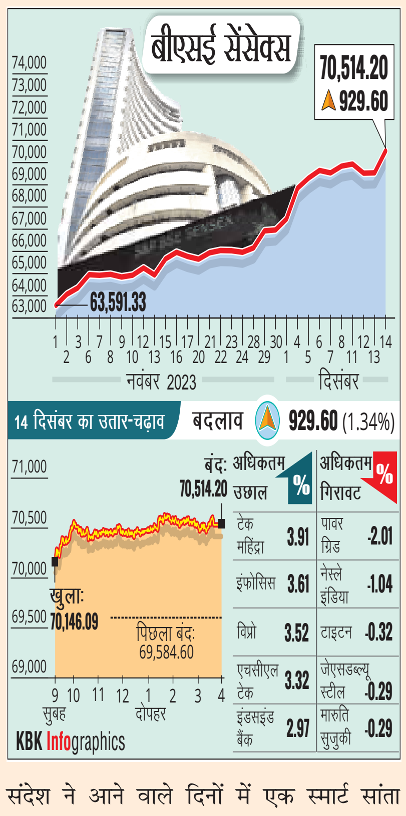

इससे बीएसई में कंज्यूमर ड्यूरेबल्स की 0.20 प्रतिशत की गिरावट को छोड़कर 19 समूहों में जमकर लिवाली हुई। इस दौरान रियल्टी 3.80, आईटी 3.21, टेक 2.72, दूरसंचार 2.14, कमोडिटीज़ 0.75, सीडी 0.88, ऊर्जा 1.28, एफएमसीजी 0.31, वित्तीय सेवाएं 1.38, हेल्थकेयर 0.02, इंडस्ट्रियल्स 0.52, यूटिलिटीज़ 0.78, ऑटो 0.67, बैंकिंग 1.26, कैपिटल गुड्स 0.47, धातु 0.84, तेल एवं गैस 1.36, पावर 0.89 और सर्विसेज समूह के शेयर 0.48 प्रतिशत चढ़ गए।

इस दौरान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेजी का रुख रहा। ब्रिटेन का एफ़टीएसई 1.89, जर्मनी का डैक्स 0.69 और हांगकांग का हैंगसेंग 1.07 प्रतिशत उछल गया। हालांकि जापान का निक्केई 0.73 और चीन के शंघाई कम्पोजिट में 0.33 प्रतिशत की गिरावट रही।

एस्सार ने गुजरात सरकार के साथ ऊर्जा परिवर्तन, बिजली और बंदरगाह क्षेत्रों में 55 हजार करोड़ रुपए के तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए

अहमदाबाद, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। एस्सार ने वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 से पहले कुल 55 हजार करोड़ रुपए के निवेश के लिए गुजरात सरकार के साथ तीन समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। एस्सार राज्य में ऊर्जा परिवर्तन, बिजली और बंदरगाह क्षेत्रों में रणनीतिक निवेश करने के नए चरण में है। इस पहल का लक्ष्य 10 हजार से अधिक रोजगार के अवसर पैदा करना है। पिछले चार दशकों में, एस्सार ने गुजरात में ऊर्जा, धातु एवं खनन, और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में एक लाख करोड़ रुपए से अधिक का निवेश किया है।

एस्सार की विकास गाथा में गुजरात ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्य औद्योगिक परियोजनाओं में कंपनी के निवेश ने राज्य के औद्योगिक परिदृश्य को बेहतर किया है, जो निवेश गंतव्य के रूप में राज्य की क्षमता के लिए एक केस-स्टडी के रूप में काम कर रहा है। एस्सार कैपिटल के निदेशक प्रशांत रुइया ने एमओयू पर टिप्पणी करते हुए कहा, गुजरात एस्सार के रणनीतिक निवेश में लगातार सबसे आगे रहा है। हमें ऊर्जा और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में 55 हजार करोड़ रुपये के अतिरिक्त निवेश के साथ राज्य की आर्थिक प्रगति में योगदान करने में खुशी हो रही है।

ऊर्जा परिवर्तन में निवेश

एस्सार ने एक गीगावाट ग्रीन हाइड्रोजन परियोजना विकसित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस पहल में 30 हजार करोड़ रुपए का अनुमानित निवेश शामिल है।

बिजली उत्पादन क्षेत्र में निवेश

एस्सार पावर ने अपने सलाया पावर प्लांट में दूसरे चरण के विस्तार के लिए 16 हजार करोड़ रुपए के अतिरिक्त निवेश की घोषणा की है।

बंदरगाह क्षेत्र में निवेश

एस्सार पोर्ट्स 10 हजार करोड़ रुपए के निवेश के साथ अपने सलाया बंदरगाह को लॉजिस्टिक्स हब में बदलने के लिए तैयार है। इन समझौतों पर हस्ताक्षर करना गुजरात के बहुमुखी विकास पथ में अपना योगदान जारी रखने की एस्सार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

जिंसों में टिकाव

नई दिल्ली, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों में तेजी लौटने के बावजूद स्थानीय स्तर पर उठाव सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेल समेत सभी जिंसों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहन: वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में दिसंबर का पाम ऑयल वायदा बढ़त के साथ 3585 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह दिसंबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.28 सेंट की तेजी लेकर 50.11 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, पाम ऑयल, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी: मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन बाजार में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल के भाव पड़े रहे।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ।

पिछड़ेपन का दंश झेल रहे आठ जिले बनेंगे यूपी के विकास के ग्रोथ इंजन

लखनऊ, 14 दिसम्बर (एजेंसियां)। यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के दौरान देश-विदेश के औद्योगिक समूहों की ओर से मिले 40 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव को सरकार धरातल पर उतारने की तैयारी में जोर-शोर से जुटी हुई है। सबसे अहम बात ये है कि क्रियान्वित होने जा रहे निवेश के मामले में यूपी के बड़े और औद्योगिक शहर ही नहीं, बल्कि वो जनपद भी किसी से पीछे नहीं हैं, जिन्हें अब तक सबसे पिछड़ा माना जाता रहा है।

देशभर के 100 आकांक्षात्मक जिलों में से आठ उत्तर प्रदेश में हैं, जिन्हें पिछड़ा माना जाता है। मगर, ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के प्रथम फेज के लिए इनकी परफॉर्मेंस ने सबको चौंका दिया है। अब तक सात लाख करोड़ के निवेश में से एक लाख करोड़ से अधिक का निवेश इन आठ आकांक्षात्मक जिलों में धरातल पर उतरने जा रहा है। विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि यूपी का सोनभद्र, चंदौली जिला, जो कभी देश में नक्सलियों से प्रभावित था, आज प्रदेश के विकास में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा डकैतों के आतंक से प्रभावित चित्रकूट और पिछड़ा जिला होने का दंश झेल रहे सिद्धार्थनगर, बहराइच, फतेहपुर, श्रावस्ती और बलरामपुर ने बड़ी संख्या में निवेशकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की छोटे जिलों को विकास से जोड़ने की मुहिम का ही असर है।

वहीं, पहले इन जिलों में अव्यवस्था और नक्सल-दस्यु गतिविधियों के चलते उद्योग जगत यहां बड़ा निवेश करने से कतराते रहे हैं। अब, परिस्थितियां बिल्कुल बदल चुकी हैं। योगी सरकार की अपराध और अपराधियों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति, दुर्गम और हाशिये वाले क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं का विकास, आधारभूत संरचनाओं का निर्माण और बेहतर कनेक्टिविटी से ये जिले यूपी के विकास के ग्रोथ इंजन बनने जा रहे हैं।

इस निवेश से ना सिर्फ पूर्वांचल बल्कि प्रदेश के विकास को भी रफ्तार मिलेगी। तकरीबन 78,815 करोड़ की 43 निवेश परियोजनाएं सोनभद्र में कार्यान्वित होने के लिए बिल्कुल तैयार हैं। इसी तरह कभी नक्सल गतिविधियों का गढ़ माने जाने वाले चंदौली जिले में 17,455 करोड़ की 69 परियोजनाएं धरातल पर उतरने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। वहीं, आकांक्षात्मक जिलों में शामिल चित्रकूट में 6,765 करोड़ की 42 परियोजनाएं, सिद्धार्थनगर में 297 करोड़ की 56 परियोजनाएं, फतेहपुर में 1,831 करोड़ की 72 परियोजनाएं धरातल पर उतरने के लिए तैयार हैं। इसके अलावा तराई वाले जिले बहराइच में 736 करोड़ की 69 परियोजनाएं, श्रावस्ती में 866 करोड़ की 74 परियोजनाएं और बलरामपुर में 368 करोड़ की 36 परियोजनाएं धरातल पर उतरने को तैयार हैं।

खेल जगत

संग्राम सिंह की नजर छह साल बाद पेशेवर कुश्ती में वापसी पर

नई दिल्ली, 14 दिसंबर (एजेंसियां)। दो बार के कॉमनवेल्थ हैवीवेट चैंपियन संग्राम सिंह 24 फरवरी, 2024 को दुबई में होने वाली दुबई प्रो रेसलिंग चैंपियनशिप में छह साल बाद पेशेवर कुश्ती में वापसी करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने आखिरी बार केडी जाधव मेमोरियल इंटरनेशनल कुश्ती चैंपियनशिप में भाग लिया था, जहां उन्होंने केविन रेडफोर्ड जूनियर को हराकर स्वर्ण पदक जीता था। संग्राम सिंह ने कहा, यह लगभग छह वर्षों के बाद मेरी वापसी के लिए एकदम सही मंच है और मैं फरवरी 2024 में दुबई में प्रदर्शित होने वाली प्रतिस्पर्धा के स्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूं। इस लड़ाई का उद्देश्य मुख्य रूप से युवाओं को प्रेरित करना है और दर्शकों को यह बताना है कि यह एक सज्जनों का खेल भी है। खेल और जीवन दोनों में उम्र की कोई बाधा नहीं है और हर कोई किसी भी उम्र में जो कुछ भी ठान लेता है उसे हासिल कर सकता है।

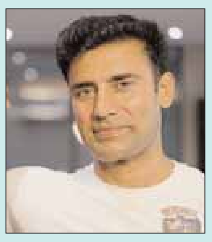

जर्मनी से हारकर विश्वकप से बाहर हुआ भारत

■ भारत फिर जू. पुरुष हॉकी विश्वकप के सेमीफाइनल में जर्मनी से 1-4 से हारा ■ भारत की जू. टीम को दर्जन भर पेनल्टी कॉर्नर पर गोल न कर पाना भारी पड़ा

सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 14 दिसंबर (देशबन्धु)। स्ट्राइकर सुदीप चिरिमाको की धार व रफ्तार दिखा दागे एक गोल, गोलरक्षक मोहित के आधा दर्जन से ज्यादा बेहतरीन बचावों के बावजूद दर्जन भर पेनल्टी में से एक को गोल में तब्दील न कर पाना भारत को छह बार की चैंपियन जर्मनी के खिलाफ जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के पहले सेमीफाइनल में बृहस्पतिवार को भारी पड़ा। स्ट्राइकर बेन हैशबाख के मौकों की भुनाने की बानगी दिखा दागे दो और पॉल ग्लैनडर के दूसरे पेनल्टी कॉर्नर तथा फ्लोरियन स्पर्लिंग के खेल खत्म होने से मात्र दो मिनट पहले दागे बेहतरीन मैदानी गोल की बदौलत इतिहास की सबसे कामयाब टीम जर्मनी की जूनियर टीम ने भारत की जूनियर टीम को लगातार दूसरी बार 4-1 से हरा कुल नौवीं बार फाइनल में स्थान बना लिया। जर्मनी की जूनियर टीम टीम ने मैच में मिले दोनों पेनल्टी कार्नर को गोल में बदला और यही उसकी सेमीफाइनल में जीत का सबब रहा। शुरू के दो क्वार्टर में भारत और बाद के दो क्वॉर्टर में जर्मनी की जूनियर टीम हावी रही। जर्मनी की जूनियर टीम ने मौकों को भुनाने की कला की बानगी दिखाते हुए यह अहम सेमीफाइनल जीता। भारत की जूनियर टीम की टीम की जर्मनी से अपने घर में 2021 के संस्करण में सेमीफाइनल में मिली 2-4 की हार का हिसाब चुकता करने की हसरत एक बार फिर अधूरी रही। सुदीप चिरिमाको ने दूसरा क्वॉर्टर खत्म होने से पांच मिनट पहले जोरदार रिवर्स हिट जमाई लेकिन जमाई लेकिन जर्मनी की जूनियर टीम के गोलरक्षक जोशुआ ओनवेकवुई ननजी ने रोक भारत की जूनियर टीम को बढ़त लेने से रोक दिया। भारत की जूनियर टीम एक बार फिर कांसे के भिड़ेगी।

भारत की जूनियर टीम ने यदि शुरू के दो क्वॉर्टर में मिले दस में से तीन पेनल्टी कॉर्नर को भी गोल में बदल दिया होता तो वह 1-2 से पिछड़ने के बजाय हाफ टाइम तक कम से 4-2 की बढ़त ले सकती थी ऐसा नहीं हुआ वह एक बार फिर बड़े इम्तिहान में फेल हो गई। 2001 और 2016 की चैंपियन भारत की जूनियर टीम अब एक बार फिर कांसे के लिए भिड़ेगी।भारत की जूनियर टीम की हार में चीफ कोच सीआर कुमार की रणनीति पर सवाल उठेगा क्योंकि उनके पास टीम को मिले दर्जन भर पर पेनल्टी कॉर्नर पर जर्मनी की जूनियर टीम के बचावों के सामने कोई प्लान %बी' नहीं था।

भारत जूनियर टीम की अग्रिम पंक्ति में सुदीप चिरिमाको, सौरभ आनंद कुशवाहा , अरिजित सिंह हुंदल और कप्तान उत्तम सिंह ने शुरू से तेज हमलों की रणनीति अपना कर पहला क्वॉर्टर में शुरू के दस मिनट में ही जर्मनी के खिलाफ चार पेनल्टी कॉर्नर अर्जित किए लेकिन इन्हें गोल में तब्दील नहीं कर पाए। बेन हैशबाख ने खेल के रुख के उलट लियाम हॉल्डरमैन और माइकल स्टर्टहाफ के प्रयास पर डी में मिली गेंद को तेजी से फ्लिक कर गोल में जर्मनी को मैच के आठवें मिनट में 1-0 की बढ़त दिला दी। बराबर तेजी से आगे बढ़ कर हमले बोलने वाले आदिवासी स्ट्राइकर सुदीप चिरिमाको ने तीन मिनट बाद डी के भीतर सौरभ आनंद कुशवाहा से मिली गेंद पर रिवर्स हिट से गोल कर भारत को एक-एक की बराबरी दिला दी। सुदीप चिरिमाको और सौरभ ने बराबर दूसरे क्वॉर्टर में तेज हमले बोले और शुरू में ही भारत की जूनियर टीम को मैच का पांचवां पेनल्टी कॉर्नर दिलाया लेकिन इसे परोक्ष गोल में बदलने की अमनदीन लाकरा की कोशिश नाकाम रही। भारत की जूनियर टीम को दूसरा क्वॉर्टर खत्म होने से तीन मिनट पहले लगातार तीन पेनल्टी कॉर्नर और मिले लेकिन जर्मनी की जूनियर टीम के रशर ने लगातार रोहित के फ्लिक का कोण भांपकर उन्हें अपने गोल पर शॉट न लेने देकर उनकी अपनी टीम को बढ़त दिलाने की कोशिश नाकाम कर दी। दूसरा क्वॉर्टर खत्म होने से ठीक मिनट पहले सुनील जोजो की गलती से मिले मैच के पहले पेनल्टी कॉर्नर पर पीर हिनरिख के शॉट को भारत के गोलरक्षक मोहित ने रोका लेकिन लौटती गेंद को बेन हेशबाख ने संभाल तेज शॉट जमा गोल कर जर्मनी को 2-1 से आगे कर दिया। बस यहीं से सेमीफाइनल में जर्मनी की जूनियर टी मने मैच पर ऐसी पकड़ बनाई कि भारत की जूनियर टीम को सेमीफाइनल में वापसी का कोई मौका ही नहीं मिल पाया। पॉल ग्लैनडर ने तीसरा क्वॉर्टर खत्म होने से चार मिनट पहले मैच में दूसरे पेनल्टी कॉर्नर पर तेज फ्लिक से गोल में बदल कर जर्मनी की जूनियर टीम को 3-1 से आगे कर उसकी मैच पर मजबूत पकड़ बना दी। भारत की जूनियर टीम को इससे ठीक पहले उत्तम सिंह के प्रयास पर मैच का 11 वां पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन इस पर बॉबी सिंह धामी के तेज फ्लिक को जर्मनी की जूनियर टीम के गोलरक्षक जोशुआ ओनवेकवुई ननजी से अच्छा पूर्वानुमान लगाते हुए रोक कर बेकार कर दिया और इसके बाद और एक पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन यह भी बेकार गया। फ्लोरियन स्पर्लिंग के खेल खत्म होने से मात्र दो मिनट पहले हॉकी की कलाकारी दिखा कर बेहतरीन मैदानी गोल कर जर्मनी को 4-1 से आगे कर उसकी जीत और फाइनल में स्थान पक्का कर दिया।

शमी के द.अफ्रीका में टेस्ट सीरीज खेलने पर सस्पेंस!

नई दिल्ली, 14 दिसंबर (एजेंसियां)। भारत के अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी का टखने की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज में खेलना अनिश्चित है। 30 नवंबर को दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए टीम की घोषणा करते हुए शमी को टेस्ट सीरीज के लिए शामिल किया गया था, लेकिन भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने कहा था कि शमी फिलहाल मेडिकल ट्रीटमेंट से गुजर रहे हैं और उनकी उपलब्धता फिटनेस पर निर्भर है।

गुरुवार को क्रिकबज की एक रिपोर्ट में बताया गया कि शमी टेस्ट के लिए चुने गए बाकी खिलाड़ियों के साथ दक्षिण अफ्रीका नहीं जाएंगे। इसमें बताया गया है, कप्तान रोहित शर्मा सहित खिलाड़ियों का आखिरी जत्था शुक्रवार (15 दिसंबर) को जोहान्सबर्ग के लिए रवाना होने वाला है, लेकिन 33 वर्षीय अनुभवी तेज गेंदबाज उनमें शामिल नहीं होंगे।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि रोहित के अलावा, विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह, रविचंद्रन अश्विन, नवदीप सैनी और हर्षित राणा शुक्रवार को दुबई के रास्ते दक्षिण अफ्रीका के लिए उड़ान भरेंगे। अब तक, 75 से अधिक पुरुष क्रिकेटर सीनियर पुरुष टीम और भारत ए टीम के लिए दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर हैं।

रिपोर्ट में यह भी गया है कि चयनकर्ताओं ने अभी तक शमी के प्रतिस्थापन की घोषणा नहीं की है, लेकिन धारणा यह है कि कई खिलाड़ी पहले से ही टी20, वनडे, टेस्ट और ए सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका में हैं। उनमें से एक तेज गेंदबाज को टेस्ट सेट-अप में शामिल किया जा सकता है। इसमें आगे कहा गया, विश्व कप 2023 में अग्रणी विकेट लेने वाले शमी टखने के दर्द से पीड़ित थे और यह पता चला है कि उन्होंने दर्द के बावजूद टूर्नामेंट में गेंदबाजी का कार्यभार संभाला था।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत के दो टेस्ट 26-30 दिसंबर तक सेंचुरियन में और 3-7 जनवरी, 2024 तक केप टाउन में खेले जाएंगे। यह 2023-2025 विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप चक्र की भारत की दूसरी श्रृंखला है। आखिरी बार भारत ने दक्षिण अफ्रीका में दिसंबर 2021- जनवरी 2022 में टेस्ट सीरीज खेली थी।

उस समय भारत ने सेंचुरियन में पहला टेस्ट जीता था। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने जोहान्सबर्ग और केप टाउन में मैच जीतकर वापसी की और अंततः श्रृंखला पर 2-1 से कब्जा किया।

रबाडा की चोट से दक्षिण अफ्रीका चिंतित

डरबन 14 दिसंबर (वार्ता) दक्षिण अफ्रीका के अनुभवी गेंदबाज कगिसो रबाडा के चोट से उबरने की मंथर गति से दक्षिण अफ्रीका का टीम प्रबंधन चिंता में है।

रबाडा को विश्व कप के सेमीफ़ाइनल मैच में एड़ी में चोट लगी थी, जिसके कारण वह मैच के अंतिम ओवरों में गेंदबाज़ी नहीं कर पाए थे। मेजबान टीम को 26 दिसंबर से भारत के खिलाफ टेस्ट श्रृखंला खेलनी है मगर रबाडा की चोट को देखते हुये उनके अंतिम एकादश में शामिल होने को लेकर संशय के बादल मंडरा रहे हैं।

दरअसल, दक्षिण अफ्रीका की टेस्ट टीम के कप्तान तेम्बा बवूमा और कगिसो रबाडा को लायंस की टीम की तरफ़ से गुरुवार से शुरू हो रहे एक मैच में हिस्सा लेना था, लेकिन लायंस के टीम प्रबंधन ने साफ किया है कि दोनों खिलाड़ी इस मैच के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। लायंस के बयान में कहा गया है कि बवूमा निजी कारणों से इस मैच में हिस्सा नहीं लेंगे और रबाडा की एड़ी में दिक्कत है। क्रिकइंफो के अनुसार अगर रबाडा पूरी तरह से चोट से नहीं उबर पाते हैं तो दक्षिण अफ़्रीका के लिए यह बहुत बड़ी चिंता का विषय है। उनके ज़्यादातर फ़्रंटलाइन तेज़ गेंदबाज़ टीम से बाहर हैं। अनरिख़ नॉर्ख़िए पहले से ही पीठ में लगी चोट के कारण टेस्ट सीरीज़ से बाहर हो चुके हैं। वहीं लुंगी एनगिडी को भी टखने में चोट लगी है, जिसके कारण वह टी20 सीरीज़ का हिस्सा नहीं बन पाए थे। दो अन्य तेज़ गेंदबाज़ जेराल्ड कोएत्ज़ी और मार्को यानसन को मौजूदा टी20 सीरीज़ के टीम से भी रिलीज़ कर दिया गया है। साथ ही वे वनडे सीरीज़ में हिस्सा नहीं लेंगे। दोनों तेज़ गेंदबाज़ प्रथम श्रेणी मैचों में हिस्सा लेंगे ताकि वह टेस्ट सीरीज़ के लिए तैयारी कर सकें। बवूमा ने वनडे विश्व कप के सेमीफ़ाइनल के बाद कोई भी मैच नहीं खेला है। 16 नवंबर को हुए उस मैच में भी वह हैमस्ट्रिंग की चोट से जूझ रहे थे।

इंग्लैंड के खिलाफ भारत की ठोस शुरुआत

मुबंई 14 दिसंबर (एजेंसियां)। सतीश शुभा (69),जेमिमाह रॉड्रिग्स (68),यास्तिका भाटिया (66) और दीप्ति शर्मा (60 नाबाद) के शानदार अर्धशतकों की मदद से भारत ने गुरुवार को इंग्लैंड के खिलाफ शुरु हुये पहले टेस्ट मैच में पहली पारी में सात विकेट खोकर 410 रन बनाये।

डॉ. डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स अकादमी में भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया। स्मृति मंधाना (17) और शेफाली वर्मा (19) के विकेट जल्दी गिरने के बाद क्रीज पर आयी सतीश और जेमिमाह ने इंग्लैंड के गेंदबाजों की धुनाई करते हुये टीम के स्कोर को जल्द ही तीन अंकों तक पहुंचा दिया और बाद में अपने अपने अर्धशतकों को पूरा कर लिया। पारी के 33वें ओवर में सोफ़ी एकल्सटन की गेंद पर आउट होने से पहले सतीश अपनी पारी के दौरान 13 बार गेंद को सीमा रेखा के पार पहुंचा चुकी थीं।

इंग्लैंड के गेंदबाजों को इसके बाद जल्द ही एक और सफलता जेमिमाह के विकेट के तौर पर मिली मगर दूसरे छोर पर आयी हरमनप्रीत ने नये बल्लेबाज यास्तिका के साथ मिल कर मेहमान क्षेत्ररक्षकों को एक बार फिर व्यस्त कर दिया। हरमनप्रीत दुर्भाग्यशाली तरीके से 49 रन के निजी स्कोर पर रन आउट हुयी। कप्तान के आउट होने से दूसरे छोर पर यास्तिका का भी आत्मविश्वास डगमगाया,नतीजन वे शार्लेट डीन की गेंद पर आउट होकर पवेलियन लौट गयीं। उन्होने अपनी अर्धशतकीय पारी के दौरान 88 गेंदो पर दस चौके और एक छक्का जड़ा।

स्नेह राणा (30) के तौर पर इंग्लैंड को सातवीं सफलता मिली। दिन का खेल खत्म होने के समय दीप्ति शर्मा 60 और पूजा वस्त्रकर चार रन बनाकर क्रीज पर डटी हुयी थी।

निदा डार बाहर, न्यूजीलैंड के खिलाफ फातिमा को पाकिस्तान की कमान

क्राइस्टचर्च, 14 दिसंबर (एजेंसियां)। न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले एक दिवसीय मैच में चोटिल हुयी पाकिस्तान महिला क्रिकेट टीम की कप्तान निदा डार दूसरे मैच से बाहर हो गई हैं। निदा की गैरमौजूदगी में तेज गेंदबाज फातिमा सना को पाकिस्तान का नया कप्तान नियुक्त किया गया है। दूसरा वनडे शुक्रवार को क्राइस्टचर्च के हेगले ओवल में खेला जायेगा। 22 वर्षीय फातिमा वनडे में पाकिस्तान महिला टीम का नेतृत्व करने वाली 10वीं कप्तान बनेंगी। युवा गेंदबाज खुद चोट के कारण बांग्लादेश के खिलाफ हालिया सीरीज में नहीं खेल पाई थी। हालाँकि इससे पहले टी20 श्रृंखला में उन्हें प्लेयर ऑफ़ द सीरीज़ के सम्मान से नवाजा गया था। उन्होंने श्रृंखला में 5.60 की इकॉनमी से छह विकेट लिए थे और पहले टी20 मैच में प्लेयर ऑफ द मैच रहीं। फातिमा ने मैच की पूर्व संध्या पर एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा एकदिवसीय मैचों में पाकिस्तान महिला टीम का नेतृत्व करना सम्मान की बात है, हालांकि निदा डार की चोट के कारण परिस्थितियां दुर्भाग्यपूर्ण हैं। वह एक प्रेरणा रही हैं और मैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं। उन्होने कहा न्यूजीलैंड के खिलाफ हमने ऐतिहासिक टी20 सीरीज जीती थी और मुझे पता है कि खिलाड़ी वनडे सीरीज में भी अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक हैं। हालांकि पहले वनडे में हमारा प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा, लेकिन हम कल के खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए तैयार हैं। फातिमा ने इससे पहले हांगकांग में आयोजित एसीसी महिला इमर्जिंग टीम एशिया कप में पाकिस्तान टीम की कप्तानी की थी। वह घरेलू क्रिकेट में भी कप्तानी कर चुकी हैं। पाकिस्तान को चोटों की समस्या का सामना करना पड़ रहा है और उसके तीन खिलाड़ी बाहर हैं। निदा के अलावा, डायना बेग को उंगली की चोट के कारण पहले वनडे से ठीक एक दिन पहले श्रृंखला के शेष भाग से बाहर कर दिया गया था जबकि शवाल जुल्फिकार दूसरे टी20 के बाद टीम से बाहर हो गयी थी। तीसरे वनडे के लिए निदा की उपलब्धता अभी तक निर्धारित नहीं की गई है। उन्हें दो दिनों के लिए पूर्ण आराम की सलाह दी गई है। सुजी बेट्स के शानदार शतक के दम पर न्यूजीलैंड ने तीन वनडे मैचों में से पहला मैच 131 रनों के आसान अंतर से जीत लिया। दूसरे वनडे के लिए पाकिस्तान महिला टीम: फातिमा सना (कप्तान), आलिया रियाज, बिस्माह मारूफ, गुलाम फातिमा, मुनीबा अली (विकेटकीपर), नजीहा अल्वी (विकेटकीपर), नाशरा सुंधू, नतालिया परवेज, ओमाइमा सोहेल, सदफ शमास, सादिया इकबाल, सिदरा अमीन, उम्म-ए-हानी और वहीदा अख्तर।

मैंने खुद कप्तान बनने की इच्छा जताई थी : नीतीश राणा

नई दिल्ली, 14 दिसंबर (एजेंसियां)। भारत के बल्लेबाज नीतीश राणा ने कहा कि आईपीएल 2023 में कोलकाता नाइट राइडर्स की कप्तानी करने के प्रयासों में उन्हें टीम प्रबंधन की ओर से पूछे गए कई सवालों के जवाब देने पड़े थे । राणा ने जियो सिनेमा से कहा, मैं पिछले 3-4 वर्षों में टीम का वरिष्ठ सदस्य बन गया था। इस अवधि में मुझे कप्तानी भूमिका मिल गयी थी। इसकी शुरुआत ब्रेंडन मैकुलम ने की थी। वह मुझे हमेशा एक कप्तान की तरह सोचने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

नीतीश राणा ने कहा, उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप खेल को नियंत्रित करेंगे, यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप जो कहेंगे मैं उसे सुनूंगा। लेकिन कप्तानी क्या होती है इसके बारे में आपको अपना दिमाग सक्रिय रखना होगा। इससे मुझे बहुत मदद मिली। श्रेयस अय्यर की अनुपस्थिति में राणा ने अंततः उस सीज़न में केकेआर की कप्तानी की, जहां टीम अंक तालिका में सातवें स्थान पर रही। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में अपनी पूर्व घरेलू टीम दिल्ली का नेतृत्व करने के बाद यह पहली बार था जब राणा ने किसी आईपीएल टीम की कप्तानी की। आईपीएल 2024 के लिए, राणा अय्यर के उप-कप्तान होंगे, जो दो बार की चैंपियनशिप विजेता टीम का नेतृत्व करने के लिए वापस आएंगे। कप्तान बनने के बाद अपनी मानसिकता के बारे में बात करते हुए बाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा, जब मैं बच्चा था तब से मैंने गौतम गंभीर भैया को कप्तान के रूप में देखा है। मैंने कई बड़े खिलाड़ियों को अलग-अलग टीमों की कप्तानी करते देखा है। मैंने इन खिलाड़ियों की हर छोटी-छोटी बात पर गौर किया था। मैंने हमेशा अपनी आंखें और कान खुले रखे।

पर्थ टेस्ट में शतक लगाकर वार्नर ने आलोचकों को शांत किया

पर्थ, 14 दिसंबर (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने गुरुवार को पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट के शुरुआती दिन गुरूवार को 211 गेंदों पर 164 रन की तूफानी शतकीय पारी खेलकर आलोचकों का मुंह बंद कर दिया है।

37 वर्षीय खिलाड़ी को तिहरे आंकड़े तक पहुंचने के लिए सिर्फ 125 गेंदों की जरूरत थी। अपनी उल्लेखनीय पारी के दौरान, उन्होंने 16 चौके और चार छक्के लगाए, जो उनके करियर का 26वां शतक और जनवरी 2020 के बाद उनका पहला शतक था।

अपनी अविश्वसनीय पारी के दौरान, वार्नर मैथ्यू हेडन और माइकल क्लार्क को पीछे छोड़ते हुए टेस्ट क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले शीर्ष पांच खिलाड़ियों में शामिल हो गए। सर्वकालिक सूची में, उनके बड़े शतक ने उन्हें धुरंधर सर विव रिचर्ड्स और वीरेंद्र सहवाग से आगे निकलने में मदद की।

वार्नर अब 8651 रनों के साथ ऑस्ट्रेलिया के सबसे अधिक टेस्ट रन बनाने वालों में पांचवें स्थान पर हैं, वह केवल स्टीव स्मिथ, स्टीव वॉ, एलन बॉर्डर और रिकी पोंटिंग से पीछे हैं।

वार्नर ने पर्थ की सतह पर पहले बल्लेबाजी करने के पैट कमिंस के फैसले को सही ठहराया क्योंकि वह इरादे के साथ उतरे थे। उन्होंने केवल 41 गेंदों पर अर्धशतक पूरा किया और उस्मान ख्वाजा के साथ तेज गति से शतकीय साझेदारी की। जबकि उनके साथी अच्छी शुरुआत का फायदा नहीं उठाने के दोषी थे - स्मिथ उस दिन केवल 41 रनों के साथ अगले सर्वोच्च स्कोरर थे - वार्नर ने अपना 26वां टेस्ट शतक बनाया, जिसके बाद उनकी ट्रेडमार्क छलांग और जश्न मनाया।

अपने शतक तक पहुंचने के बाद, 37 वर्षीय को कुछ जीवनदान मिले - पहले, खुर्रम शहजाद ने कैच लेने का मौका गंवा दिया, और फिर सरफराज अहमद स्टंपिंग करने में असफल रहे। वॉर्नर ने रनों का अंबार लगाकर और 150 रन बनाकर पाकिस्तान को इसका खामियाजा भुगतने के लिए मजबूर किया।

मेहमान टीम ने आखिरकार शॉर्ट-बॉल रणनीति अपनाकर वार्नर पर बाजी मार ली, जिससे ऑस्ट्रेलियाई ओपनर दिन का खेल खत्म होने से कुछ ओवर पहले ही डीप में पकड़े गए।

इसके बाद मिचेल मार्श और एलेक्स कैरी ने शेष ओवरों में बिना कोई और झटका दिए ऑस्ट्रेलिया को पांच विकेट पर 346 रन की मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया।

पूर्व तेज गेंदबाज मिशेल जॉनसन के विस्फोटक कॉलम के बाद टेस्ट टीम में वार्नर की स्थिति सार्वजनिक बहस का विषय बन गई थी।

जॉनसन जॉनसन ने अपने अंतिम ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट समर से पहले वेस्ट ऑस्ट्रेलियन में एक कॉलम के साथ वार्नर पर बहस छेड़ दी, उन्होंने सवाल उठाया कि बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज को हीरो की विदाई क्यों मिल रही है, जबकि वह अब भी कुख्यात 2018 गेंद छेड़छाड़ कांड में अपनी भूमिका से मुक्त नहीं हो पाए हैं।

सार संक्षेप

श्रेयस की केकेआर में कप्तान के तौर पर वापसी

कोलकाता। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आगामी सत्र में श्रेयस अय्यर कोलकाता नाइड राइडर्स (केकेआर) के कप्तान के तौर पर वापसी करेंगे। टीम के उपकप्तान की कमान नितीश राणा को सौंपी गयी है। केकेआर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) वेंकी मैसूर ने गुरुवार को यह ऐलान करते हुये कहा श्रेयस चोट के कारण आईपीएल 2023 के सत्र में नहीं खेल सके थे। हमें खुशी है कि उनकी केकेआर के कप्तान के रूप में वापसी हुई हैं। जिस तरह से उन्होंने अपनी चोट से उबरने के लिए कड़ी मेहनत की है और उसी तरह की फॉर्म उनके पास है और वह इसे प्रदर्शित कर अपना लोहा मनवाएंगे। उन्होंने कहा, हम इस बात के लिए भी आभारी हैं कि नीतीश पिछले सीजन में श्रेयस की जगह लेने के लिए राजी हुए थे और उन्होंने टीम के लिए शानदार काम किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उप-कप्तान के रूप में नीतीश केकेआर के हित के लिए हर संभव श्रेयस का साथ देंगे। श्रेयस अय्यर ने कप्तानी मिलने पर कहा, पिछले सीजन में हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसमें चोट के कारण मैं टीम का हिस्सा नहीं बन सका था। नितीश ने न केवल मेरी जगह लेने के लिए बल्कि अपने सराहनीय नेतृत्व से बहुत अच्छा काम भी किया। मुझे खुशी है कि केकेआर ने उन्हें उप-कप्तान बनाया है।

स्पोर्ट्स इंडिया 2023 के 11वें संस्करण की हुई शुरूआत

नई दिल्ली। तीन दिवसीय स्पोर्ट्स इंडिया 2023 के 11वें संस्करण की शुरूआत गुरुवार को प्रगति मैदान में हुई। इस प्रदर्शनी में खेल से जुड़े सामान, स्पोर्ट्स वियर, स्पोर्ट्स एक्सेसरीज़, फिटनैस एवं हेल्थ वैलफेयर, रीहेबिलिटेशन उपकरणों, स्पोर्ट्स टेक्नोलॉजी, एडवेंचर एवं अम्यूज़मेन्ट प्रोडक्ट्स, स्पोर्ट्स वैलनैस, ब्यूटी, कच्चे माल, स्पोर्ट्स के सामान की मैनुफैक्चरिंग मशीनों, स्पोर्ट्स की दवाओं आदि के बारे में दर्शकों को बताया जाएगा। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री एसपी सिंह बघेल ने कहा कि सरकार ने हाल ही में खेलों के विकास के लिए कई कदम बढ़ाए हैं। खेलो इंडिया गेम्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया विंटर गेम्स, मेंबर ऑफ पार्लियामेन्ट स्पोर्ट्स कॉम्पिटीशन और आगामी खेलो इंडिया पैरा गेम्स भारत में खेलों की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। ऐसे में इस तरह की प्रदर्शनियों ब्राण्ड्स, विशेषज्ञों एवं उपभोक्ताओं को एक ही मंच पर लाकर हेल एवं वैलनैस की ओर मार्ग प्रशस्त करती हैं। इंडियन एक्ज़हीबिशन सर्विसेज़ के डायरेक्टर स्वदेश कुमार ने कहा कि हम भारत में खेलों के क्षेत्र में समावेशन एवं विविधता पर ध्यान दे रहे हैं। हमें उम्मीद है कि प्रदर्शनी में रोज़ाना 6000 आगंतुक पहुंचंगे। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद डॉ. अनिल अग्रवाल, युवा एवं खेल मामले मंत्रालय में संयुक्त सचिव कुणाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहें।